वैश्विक संवाद

11.1

अनेक भाषाओं में एक वर्ष में 3 अंक

टॉकिंग सोशियोलोजी डा. एस.एम. रोड्रिग्ज

मार्गरट अब्राहम

यू.एस.ए.: दुर्दशा एवं संभावनाएं

पीटर इवान्स
गैबोर स्कैंरिंग
किस्टोफर मुलर
सुरेश नायडू
पेट्रिसिया जेवला
जे. मिजिन चा
मार्कस एंथोनी हंटर

यूरोप में चीनी प्रवास

फैनी बैक
पॉल न्यीरी
हां–हांन चुआंग
एमिली ट्रान
हेलेन ला बेल
स्टिग थोरसेन
एस्ज्तर कन्हियार
लिंडा स्जाबो
टिंग डेंग
जेलेना ग्लेडिक
मार्टिना बोफुलिन

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

वाल्डेन बेल्लो

लैटिन अमेरिका से समाजशास्त्र

इस्टेबन टोरस्
जोस मोरिसियो डोमिंग्यूज
विवियन बार्चेट–मार्क्वेज
सर्जिओ कोस्टा
एल्डो मस्कारेनो
वेरोनिका गागो
कारमेन इलिजर्बे
मारियाना हेरेडिया
गुइलहर्मे लेइट गोंकोल्वेस

खुला अनुभाग

> वैश्विक संवाद की पोलिश टीम का परिचय

GD
अंक 11 / क्रमांक 1 / अप्रैल 2021
https://globaldialogue.isa-sociology.org/

पत्रिका

International Sociological Association

> सम्पादकीय

जिस समय वैश्विक संवाद का यह अंक सम्पादित किया जा रहा था, दुनिया भर की मीडिया में अमरीकी चुनाव एक अहम मुद्दा थे। इस मध्य, हमें पता है कि इन्होंने ट्रम्प के बाद के युग का नेतृत्व किया है लेकिन इसका यह अर्थ नहीं हैं कि पिछले कुछ वर्षों में अमरीका द्वारा देखी गई समस्याएं नहीं रहेंगी। 'टॉकिंग सोशियोलॉजी' के अनुभाग में समाजशास्त्री मार्गरेट अब्राहम और ब्लैक लाइव्स मैटर कार्यकर्त्ता एस.एम. रोड्रिगेज के साथ साक्षात्कार करती हैं। यह अमेरिका में नस्लवाद के खिलाफ प्रतिरोध के इतिहास और इस सामाजिक आंदोलन को प्रेरित करने वाली सामाजिक असमानताओं एवं सामाजिक न्याय की चिंताओं के परस्परछेदन के बारे में अंतदृष्टि प्रदान करता है।

चुनावों के आसपास के घटनाक्रमों के संबंध में पीटर इवान्स और माइकल बुरोवे ने अमेरिका में दुर्दशा एवं संभावनाओं पर हमारी पहली संगोष्ठी का आयोजन किया। आलेख अमेरिका के ''नस्लीय पूंजीवाद'' के ऐतिहासिक दृष्टिकोण को सम्मिलित करते हैं और पिछले दशक के आर्थिक और राजनैतिक घटनाक्रमों का विश्लेषण करते हैं जिसमें कल्याण में गिरावट, कामगार वर्ग और अश्वेत समुदायों के मध्य चुनौतीपूर्ण संबंध, पारिस्थितिक समस्याएं और जलवायु परिवर्तन के साथ–साथ ट्रम्प की राजनीति के विनाशकारी प्रभाव जिसने वाशिंगटन में जनवरी की चौंकाने वाली घटनाओं का नेतृत्व किया, सम्मिलित हैं। इस दुर्दशा का सामना करते हुए लेखक इसकी भी चर्चा करते हैं कि परिवर्तन को संभव बनाने के लिए क्या किया जा सकता है।

यूरोप में चीनी प्रवास पर केन्द्रित और फैनी बैंक और पॉल न्यरी द्वारा आयाजित हमारी दूसरी संगोष्ठी में, यूरोप में चीनी प्रवास की क्रमिक तरंगों का इतिहास और वर्तमान का अवलोकन प्रस्तुत किया गया है। आलेख इन प्रवासियों की प्रस्थिति के साथ–साथ यूरोपीय देशों में जटिल अंतर'–नस्लीय संबंधों का विश्लेषण करते हैं और दिखाते हैं कि वे चीन में राजनैतिक विकास से कैसे प्रभावित होते हैं और कोविड–19 महामारी उनकी स्थिति के साथ साथ प्रवासियों पर विमर्श को कैसे प्रभावित करती है।

गत वर्षों में, हमने चरम दक्षिणपंथी आंदोलनों, दलों और शासनों के बढते प्रभावों को देखा हैं जिसके लिए नवउदारवाद, आर्थिक संकट और सामाजिक असमानता और प्रवास की अनसुलझी समस्याएं एक अच्छा अवसर रही हैं। सैद्वांतिक अनुभाग में, वाल्डेन बेल्लो वैश्विक उत्तर और दक्षिण में चरम दक्षिणपंथियों के राजनैतिक कार्यक्रमों, व्यवहार और नेतृत्व के पहलुओं की तुलना करते हैं।

भिन्न क्षेत्रों के समाजशास्त्र पर ध्यान केन्द्रित करने वाला हमारा अनुभाग लैटिन अमेरिका पर ध्यान केंद्रित करता है। एस्टेबन टोरेस हमें प्रमुख शोधकर्त्ताओं द्वारा चर्चित और विकसित किये गये सामाजिक सिद्वांतों की सैर करने के लिए आमंत्रित करते हैं। इनमें से अधिकांश लेटिन अमेरिकन काउंसिल ऑफ सोशल साइन्सेज (CLACSO) के कार्यकारी समूह *Teoría social y realidad latinoamericana* (सामाजिक सिद्वांत एंव लेटिन अमेरिकी यथार्थ) के सक्रिय सदस्य है।

खुले अनुभाग में वैश्विक संवाद का पोलिश अनुवाद दल अपने सदस्यों का परिचय देता है और इस तरह यह हमारे सहयोगियों की पृष्ठभूमि और शोध रूचियों के बारे में अंतदृष्टि प्रदान करता है।

हम इस अवसर पर वैश्विक संवाद की सहायक संपादक के रूप में उनके मूल्यवान कार्य के लिए क्रिस्टिन शिकर्ट को धन्यवाद ज्ञापित करते हैं और उनके क्रमानुयायी के रूप में वालिद इब्राहिम (जेना विश्वविद्यालय, जर्मनी) का स्वागत करते हैं। ■

ब्रिजित ऑलनबैकर और **क्लॉस डोरे**
वैश्विक संवाद के संपादक

> वैश्विक संवाद आई.एस.ए. वेबसाइट पर अनेक भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियाँ <globaldialogue.isa@gmail.com> पर भेजी जा सकती हैं।

International Sociological Association

GLOBAL DIALOGUE

> संपादक मण्डल

संपादक : ब्रिजिट ऑलनबॉकर, क्लॉस डोरे

सह–सम्पादक : जोहाना ग्रबनर, वालिद इब्राहिम

सहयोगी सम्पादक : अर्पणा सुन्दर

प्रबंधन संपादक : लोला बुसुतिल, अगस्त बागा

सलाहकार : माइकल बुरावे

मीडिया सलाहकार : जुआन लेजाररगा

परामर्श संपादक :
साडी हनाफी, ज्योफी प्लीयर्स, फिलोमिन गुतिरेज, एलोइजा मार्टिन, सावाको शिराहेस, इजाबेला बरलिंस्का, तोबा बेन्सकी, चिह–जुए जेचेन, जेन फ्रित्ज, कोइची हासेगावा, हिरोशी इशिदा, ग्रेस खुनो, एलिसन लोकोन्तो, सुसन मेकडेनियल, एलिना ओइनास, लोरा ओसो कैसास, बंडाना पुर्कायस्था,रोह्डा रेडॉक, मौनीर सैदानी, आयसे सकतांबर, सेली स्कालोन, नाजानीन शाहरोकनी।

क्षेत्रीय संपादक

अरब दुनिया : *(ट्यूनिशिया)* मौनीर सैदानी, फातिमा रधौनी, हबीब हज सलेम; *(अल्जीरिया)* सोराया मौलोदजी गराउदजी; *(मोरक्को)* अब्देलहादी एल हालहोली, सालिदा जाइन; *(लेबनान)* साड़ी हनाफी।

अर्जेन्टीना : मैगडालेना लेमस, जुआन परसिआ, मार्टिन उर्टुसन।

बांग्लादेश: हबीबुल खोंड़कर, खैरुल चौधरी, मोहम्मद जसीम उद्दीन, बिजॉय कृष्णा बनिक, सबीना शर्मीन, सेबक कुमार साहा, मोहम्मद जहीरुल इस्लाम, अब्दुर रशीद, सरकर सोहेल राणा, जुवेल राणा, हेलल उद्दीन, मसुदुर रहमान, बी.एम. नजमुस साकिब, ईशरत जहान ऑयमून, शम्सूल अरेफिन, यास्मीन सुल्ताना, शाहिदुल इस्लाम, एकरामुल कबीर राणा, सालेह अल मॉमून, शर्मिन अख्तर शप्ला, रुमा परवीन।

ब्राजील : गुस्तावो तानिगुती, एंजेलो मार्टिन्स जूनियर, एंड्रेजा गली, दिमित्रि सर्बोन्सीनी फर्नांडीस, गुस्तावो दिअस, जोसे गुइराडो नेटो, जेसिका मज़िजनी मेंडिस।

फ्राँस/स्पेन : लोला बुसुतिल

भारत : रश्मि जैन, निधी बंसल, संदीप मील, प्रज्ञा शर्मा, मनीष यादव।

इंडोनेशिया : कमांतो सुनार्तो, हरि नुग्रोहो, लूसिया रतीह कुसुमादेवी, फिना इट्रियती, इंदेरा रत्ना इरावती पट्टिनसारानी, बेनेडिक्टस हरि जूलियावान, मोहम्मद शोहीबुद्दीन, डोमिंगगस एलसीड ली, एंटोनियस एरियो सेतो हार्डजाना, डायना तेरेसा पाकासी, नुरूल ऐनी, गेगेर रियांतो, आदित्य प्रदान सेतियादी।

ईरान : रेयहाने जावदी, नियाश डॉलाती, अब्बास शाहरबी, सैयद मोहम्मद मुतालेबी, फैजेह खजहजादे।

कजाकस्तान : अइगुल जाबिरोवा, बायन स्मागमबेट, आदिल रोदियोनोव, अल्माश त्लेसपयेवा, कुआनिश टेल, अलमागुल मुस्सीना, अकनूर ईमानकुल।

पौलैंड : जुस्तिना कोसिंस्का, जोनाथन स्कोविल, सारा हरकजिंस्का, वेरोनिका पीक, अलेक्सांद्रा वेगनर, अलेक्सांद्रा बीएरनाका, जेकब बारस्जेवस्की, एडम मुल्लेर, जोफिया पेन्जा–गेबलर, इवोना बोजडजीजेवा।

रोमानिया : रलुका पॉपेस्कू, राइसा–गेब्रियला जमीफिरेस्कू, इउलिआन गबोर, मोनिका जोर्जेस्क्यू, इयाना इयानुस, बियांका मिहायला, वेरोनिका ओआनसिआ, मारिया स्तोइसेस्कू।

रूस : ऐलेना ज्द्रावोम्यस्लोवा, अनास्तासिया दौर।

ताईवान : वान–जू ली, ताओ –युंग लु, त्सुंग–जेन हंग, स्यूआन– ली रेंन, यू–चिआ चेन, यू –वेन लिओ, पो–शुंग होन्ग।

तुर्की : गुल कोरबासियोग्लू, इरमक एवरेन।

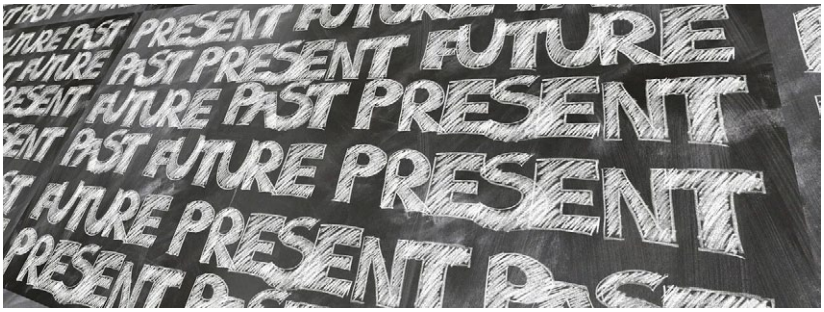

*यह संगोष्ठी 2020 के राष्ट्रपति चुनावों के बाद **अमेरिका में दुर्दशा और संभावनाओं** पर एक नजर डालती है। आलेख ऐतिहासिक दृष्टिकोणों को कवर करते हैं और पिछले दशक के आर्थिक और राजनीतिक विकास के प्रभावों का विश्लेषण करते हैं। जनवरी 2021 में वाशिंगटन में हुई घटनाओं का सामना करते हुए लेखक भविष्य की तरफ देखते हैं और चर्चा करते हैं कि बदलाव को संभव बनाने के लिए क्या किया जा सकता है।*

*यह संगोष्ठी **यूरोप में चीनी प्रवास** पर व्यापक शोध प्रस्तुत करती है। जहाँ कुछ आलेख 20वीं शताब्दी में प्रवास गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित करते हैं, अन्य लोग 21वीं सदी में चीनी प्रवासियों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण बदलावों से निपटते हैं।*

*आज की बड़ी वैश्विक चुनौतियों के सामने, **लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्रीय सिद्धांत** तेजी से महत्वपूर्ण सन्दर्भ बिंदु बनते जा रहे हैं। यह संगोष्ठी लैटिन अमेरिकी सैद्धांतिकरण की व्यापकता ओर विषमता में मौलिकता को दर्शाती है। इसमें शोध हमेशा वैश्विक सिद्धांत के मार्ग पर अग्रसर स्थानीय दृष्टिकोणों से प्रारम्भ होता है।*

GD

सेज प्रकाशन की उदार ग्रांट से
वैश्विक संवाद का प्रकाशन संभव है।

> इस अंक में

सम्पादकीय 2

> टॉकिंग सोशियोलोजी

बी.एल.एम. की चमक : डा. एस.एम. रोड्रिग्ज के साथ एक साक्षात्कार
मार्गर्ट अब्राहम, यू.एस.ए. द्वारा 5

> यू.एस.ए.: दुर्दशा एवं संभावनाए

संयुक्त राज्य के बारे में क्या किया जा सकता है ?
पीटर इवान्स, यू.एस.ए. द्वारा 9

हताशा की मौतें और लोकतंत्र का स्वास्थ्य: समाजशास्त्र के लिए चुनौती
गैबोर स्कैंरिंग, इटली द्वारा 11

मानवीय पूंजीवादी
किस्टोफर मुलर एवं सुरेश नायडू, यू.एस.ए. द्वारा 14

यू.एस.ए. में प्रजनन न्याय का भविष्य
पेट्रिशिया जेवला, यू.एस.ए. द्वारा 16

जलवायु न्याय के लिए लड़ाई और बाइडेन–हैरिस प्रशासन
जे. मिजिन चा, यू.एस.ए. द्वारा 18

कट्टरपंथी क्षतिपूर्ति
मार्कस एंथोनी हंटर, यू.एस.ए. द्वारा 20

> यूरोप में चीनी प्रवास

यूरोप में चीनी लोगों का बदलता स्थान
फैनी बैक और पॉल न्यीरी, नीदरलैंडस् द्वारा 22

चुप्पी से किया तक: फ्रांस मे चीनी लोग
हां–हांन चुआंग, फ्रांस, एमिली ट्रान, हांगकांग और हेलेन ला बेल, फ्रांस द्वारा 24

यूरोप में चीनी छात्र
स्टिग थोरसेन, डेनमार्क द्वारा 26

बुडापेस्ट में चीनी ''गोल्डन वीजा'' प्रवासी
फैनी बेक, एस्ज्तर कन्हियार, और लिंडा स्जाबो, हंगरी द्वारा 28

इटली में चीनी: व्यवसाय और पहचान
टिंग डेंग, यू.एस.ए. द्वारा 30

सर्बिया में चीनियों की बदलती स्थिति
जेलेना ग्लेडिक, सर्बिया द्वारा 32

चीनी प्रवासी और कोविड–19 महामारी
मार्टिना बोफुलिन, स्लोवेनिया द्वारा 34

> सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

चरम दक्षिणपंथी शासनों के तुलनात्मक विश्लेषण की ओर
वाल्डेन बेल्लो यू.एस.ए. द्वारा 36

> लैटिन अमेरिका से समाजशास्त्र

लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्र के सार्वभौमिक उद्देश्य
इस्टेबन टोरस्, अर्जेंटीना द्वारा 39

एक विश्व प्रतिमान: समाजशास्त्र के लिये एक नया प्रस्ताव
इस्टेबन टोरस्, अर्जेंटीना द्वारा 40

वैश्विक समाजशास्त्र को वैश्विक आधुनिकता से जोडना
जोस मोरिसियो डोमिंग्यूज, ब्राजील द्वारा 42

ऐतिहासिक सिद्धांत: लैटिन अमेरिका के लिए एक प्रस्ताव
विवियन बार्चेट–मार्क्वेज, मेक्सिको द्वारा 44

अन्योन्याश्रितता पर पुनर्विचार
सर्जिओ कोस्टा, जर्मनी द्वारा 46

उपेक्षा का युग: संकट का व्यवस्था सिद्धांत
एल्डो मस्कारेनो, चिली द्वारा 48

लैटिन अमेरिका से नवउदारवाद पर शोध
वेरोनिका गागो, अर्जेंटीना द्वारा 50

एक उत्तर–उदार ग्रामर की ओर
कारमेन इलिजर्बे, पेरू द्वारा 52

लैटिन अमेरिका में पैमाने, असमानताएं ओर कुलीन जन
मारियाना हेरेडिया, अर्जेंटीना द्वारा 54

आदिम संचय और कानून की आलोचना
गुइलहर्मे लेइट गोंकोल्वेस, ब्राजील द्वारा 56

> खुला अनुभाग

वैश्विक संवाद की पोलिश टीम का परिचय 58

''जहाँ यूरोपीय–और उत्तरी अमेरिकियों–ने अपनी सार्वभौमिकता को स्वीकार कर लिया और अपनी विशिष्टता को उन्होंने तुरंत ही अवधारणा के रूप में सामान्यीकरण योग्य देखा, लैटिन अमेरिकियों को विशिष्टता से प्रारम्भ करना पड़ा क्योंकि उनके सार्वभौमिकरण को सैद्धांतिक रूप से नकार दिया गया था''

जोस मोरिसियो डोमिंग्यूज

> बी.एल.एम. की चमक

डा. एस.एम. रोड्रिग्ज के साथ एक साक्षात्कार

एस.एम. रोड्रिग्ज

डॉ. एस.एम. रोड्रिग्ज (समर रोड्रिग्ज–फेयरप्लेः सर्वनामः वे/उनका) हॉफ्स्ट्रा विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में अपराधशास्त्र के सहायक प्रोफेसर एवं एल.जी.बी.टी.क्यू अध्ययनों के निदेशक हैं। वे द इकोनिमिज ऑफ क्वीर इनक्लूजन : ट्रान्सनेशनल आरगर्नाइजिंग फॉर एल.जी.बी.टी. आई. राइटस इन युगांडा (2019) पुस्तक के लेखक हैं जिसमें रोड्रिग्ज स्थानीय सक्रियतावाद के लिए पारदेशीय संगठन को गहन निहितार्थ एवं अंतर्राष्ट्रीय फंडिग के गहन विश्लेषण प्रदान करते हैं। उनके प्रकाशनों में ''कारसेरल प्रोटेक्शनिज्म एण्ड द परपेचुवली (इन) वलरनेबल''; ''इनविजिबिलिटी मेटर्स : क्वीर अफ्रीकन आरगनाईजिंग एण्ड विजिबिलिटी मेनेजमेंट इन अ ट्रांन्सनेशनल एज''; क्वीर एबोलिशनिस्ट आल्टरनेटिन्स टू क्रिमिनलाइजिंग हेट वायलेंस'' (आगामी) एवं ''नॉट बिहान्ड बारसः द रिपलिंग इफेक्ट ऑफ कारसेरल हेबिटस एण्ड करेक्टिव वायलेंस ऑन द फेमिली एण्ड कम्यूनिटी लाइफ ऑफ प्रिजन गार्डस'' (आगामी) सम्मिलित हैं। डॉ. रोड्रिग्ज दो अविश्वसीनय नवाचारी पुस्तक परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैंः अबोलिशन इन द अकेडमीः स्कोलर एक्टिविजम एण्ड द मूवमेंट फॉर पीनल अबोलिशन और मार्कड् फॉर रिमूवलः परपेचुअल कोलेनियेलिटी, जेन्ट्रीफिकेशन एण्ड क्वीर अबोलिशिनिस्ट प्रेक्सिस इन न्यू योर्क सिटी। कई वर्षों से सेफ आउटसाइड द सिस्टम कलेक्टिव के साथ सामुदायिक आयोजन के बाद, रोड्रिग्ज संयुक्त राज्य के अश्वेत क्वीर लोगों के सबसे बड़े संगठन आड्रे लार्डे प्रोजेक्ट के निदेशक मंडल में सम्मिलित हुए। उनके कार्य को कई अनुदानों, पुरूस्कारों एवं फैलोशिपों द्वारा समर्थन दिया गया जिसमें ''अबोलिशन इन द एकेडमी'' के लिए अमेरिकन एसोसियेशन ऑफ यूनिवसिर्टी वुमन (AAUW) पोस्टडोक्ट्रोल फैलोशिप (2020–21) और अमरीकी समाजशास्त्र संघ का अल्पसंख्यक फैलोशिप कार्यक्रम (2014–15) सम्मिलित है।

यहां डॉ. रोड्रिग्ज का साक्षात्कार **मार्गर्ट अब्राहम**, अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र संघ की पूर्व अध्यक्ष एवं हॉफ्स्ट्रा विश्वविद्यालय की वरिष्ठ उप–प्रोवोस्ट हैरी एच. वचेटल प्रतिष्ठित प्रोफेसर द्वारा लिया गया है।

एम.ए.: ब्लैक लाइव्स मैटर क्या है ?

एस.एम. : जब लोग ब्लैक लाइव्स मैटर के बारे में बात करते हैं, वे सामान्यतः तीन भिन्न लेकिन परस्पर सम्बंधित चीजों में से एक के बारे में कहते हैं। प्रथमतः यह एकल वैश्विक संगठन है जो 2013 में प्रारम्भ हुआ एवं जिसके यू.एस., यू.के. और कनाडा मे कई चैप्टरस हैं। इस आंदोलन के मुख्य उद्देश्य श्वेत वर्चस्व से मुकाबला करना, अफ्रीकी मूल के लोगों के खिलाफ राज्य हिंसा को समाप्त करना और एक रंगभेद विरोधी समाज को पोषित करने के लिए आवश्यक सामुदायिक शक्ति का निर्माण करना है। दूसरा, बीएलएम दुनिया भर में अफ्रीकी लोगों के लिए स्वयं को यथार्थ में प्रकट करने वाला एक नारा हैः हम मौजूद है, हम मायने रखते है। अंत में, और शायद कई

> >

बार, लोगों का मतलब मूवमेंट फॉर ब्लेक माइव्स (M4BL) होता है, जो एक अम्ब्रेला संगठन है, कई नस्लीय न्याय संगठनों का गठबंधन जिनमें से अधिकांश बीएलएम से कहीं अधिक लंबे समय से अस्तित्व में है। इसके द्वारा, मैं मीडिया की प्रवृत्ति की ओर संकेत करता हूँ जो आयोजकों या प्रतिभागियों के वास्तविक जुड़ावों की परवाह किये बिना तुरंत ही सभी पुलिस.विरोधी क्रूरता को ''ब्लैक लाइव्स मैटर'' घटना के रूप में चित्रित करती है।

एक नारे के रूप में बीएलएम की खूबी जिसकी सभी नस्लवादी विरोधी पुष्टि कर सकते हैं, यह है कि यह भावना व्यवहारिक चैप्टरस की तुलना में तेजी से दोहराने में सक्षम है। ब्लैक लाइव्स मैटर सहस्त्राब्दी का ब्लैक इज ब्यूटीफूल या ब्लैक पावर हैः एक विश्वास प्रणाली, एक लम्बी आवाज, एक सामूहिक आह्वान जितना केन्द्रीकृत आंदोलन नहीं है।

एम.एः पूर्व के अश्वेत आंदोलनों एवं वर्तमान बीएलएम आंदोलन के मध्य आप कौन सी निरंतरताएं एवं परिवर्तन देखते हैं? यथास्थिति को चुनौती देने वाले व्यवधानों के लिए क्या रणनीति है ?

एस.एम.: राज्य की सामाजिक सेवाओं के हाशिये पर रहने वालो के द्वारा अमेरिका में सामुदायिक आयोजन एवं पारस्परिक सहायता का एक लंबा और न्यायसंगत इतिहास है। पारस्परिक सहायता के लिए राज्य–से–नागरिक संबंधों के बजाय सामुदायिक संबंधों के एक अभिन्न अंग के रूप में संसाधनों के साझाकरण एवं संसाधन और उत्तरदायित्व की पुनर्कल्पना की आवश्यकता है। अश्वेत आंदोलनों ने ऐतिहासिक रूप से राज्यों से मांग की है, लेकिन उन्होंने कभी भी राज्य की ''सब कुछ'' के रूप में कल्पना नहीं की है। ऐसे संसाधनों के सामुदायिक–नेतृत्व वाले वितरण की कल्पना करते हुए इसमें दासता एवं नरसंहार के प्रायश्चित की मांग करने वाला ब्लैक पैंथर पार्टी का दस सूत्रीय कार्यक्रम सम्मिलित है। इसी तरह से ब्लैक लाइव्स मैटर आंदोलन भी प्रायश्चित और विभिन्न प्रकार के नुकसानों की समाप्ति की मांग करता है। लेकिन इस वितरणात्मक कार्य को वे राज्य के दायरे में नहीं रखना चाहते हैं। जब डब्ल्यू.ई.बी. डयू. बोइस ने द सोलस ऑफ ब्लैक फोल्क में फ्रीडमैन्स ब्यूरो के बारे में लिखा तो उन्होंने राज्य की सीमाओं को दर्शाया। 1870 के दशक में अश्वेत अमरीकी स्वतंत्रता की सुरक्षा और वेतनिक श्रम के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विशेष रूप से गठित एक संघीय संस्था, ब्यूरो ने जल्दी ही कार्य बंद कर दिया क्योंकि वह श्वेत वर्चस्ववादी हिंसा (विशेषकर, कु क्लक्स क्लान) और श्वेत वर्चस्ववादी विधायी पहलें, जिन्होंने अश्वेत जीवन को अपराधीकृत किया, के समक्ष विरोध करने के प्रति प्रतिबद्व नहीं थी।

ऐतिहासिक निरंतरताएं प्रचुर मात्रा में हैः राजनैतिक दमन से सुरक्षा, गरिमा और स्वतंत्रता की मांग; अश्वेत महिलाओं और एलजीबीटी नेतृत्व की उपस्थिति; और क्रूर पुलिसिंग, राज्य दमन, नस्लवादी प्रति–आंदोलनों और श्वेत क्षतिपूर्ति/दंडाभाव की उपस्थिति अहम है। हम कुछ शहरों, विशेष रूप से मिडवेस्ट, में देखते है कि बीएलएम मार्च में अक्सर कई प्रदर्शनकारी श्वेत सहयोगी होते है। ऐतिहासिक रूप से, इन क्षेत्रों में शायद ज्यादा प्रत्यक्ष कार्यवाही नहीं हुई होगी। हम सैन्य पुलिस बलों और श्वेत वर्चस्ववादी प्रतिवादियों द्वारा ऐसे श्वेत प्रदर्शनकारियों का स्पष्ट उत्पीड़न भी देखते हैं, जिन्होंने श्वेत बीएलएम सहयोगियों को वास्तव में मार डाला है। फ्रीडम राइडस में श्वेत (कई यहूदी) कार्यकर्ताओं को नागरिक अधिकार आंदोलन से जुडने के लिए पीटा गया। इसलिए यह पहलू इतना अलग नहीं हैं–लेकिन मुझे इतिहास में ऐसे किसी समय के बारे में जानकारी नहीं है जहां हमने वृद्व श्वेत पुरूषों को पुलिस वालों द्वारा रौंधते हुए, एक युवा श्वेत महिला के उपर चलाते हुए और एक श्वेत किशोर द्वारा दो श्वेत पुरूषों की गोली मारकर हत्या करते देखा है। मेरा मतलब है, अश्वेत–विरोधी उत्पीड़न की निरंतरता के बावजूद यह एक भयावह नई वास्तविकता है–कि श्वेत सहयोगियो को अप्रत्याशित हानि हुई है। मुझे लगता है कि यह परिवर्तन राज्य दमन के एक महत्वपूर्ण नवाचार की ओर संकेत करता हैः पुलिस का सैन्यकीकरण जो मीडिया और सोशल मीडिया के पूर्ण और ऑप्टिक खुलेपन के साथ हुआ है लेकिन जिसमें पुलिसिंग की एक पुनर्जीवित भावना सम्मिलित है।

एम.ए.: क्या बीएलएम संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रणालीगत नस्लवाद को बदल सकता है ? संरचनात्मक परिवर्तन को लाने में क्या लगेगा ?

एस.एम.: मुझे लगता है कि हमें इसके बजाय इस बात पर विचार करना चाहिए कि ब्लैक लाइव्स मैटर करने के लिए हमें किन–किन रूपों में बदलाव करना होगा? इसे एक, एकल लक्ष्य वाली एकल संगठन के रूप में देखने की बजाय, बीएलएम को एक नारे के रूप में सोचने की आवश्यकता है। अपने कार्य में, मैं परितर्वनकारी न्याय, एंटी–कार्निरल नारीवाद और हिंसक–विरोधी आयोजन पर फोकस करने वाले अश्वेत आयोजकों की खोज करता हूँ। इनको न सिर्फ मूल्यों के रूप में बल्कि प्रथाओं के रूप में केन्द्र में रखना, उन संचनात्मक परिवर्तनों को आमंत्रित को या जो बीएलएम को मंत्र से सामाजिक यथार्थ में बदलने के आवश्यक हैं।

एम.ए. : ब्लैक लाइव्स मैटर के संदर्भ में लिंग, नस्ल एवं वर्ग के प्रतिच्छेदन क्या है ?

एम.एम.: बीएलएम एक ऐसे आंदोलन का उत्कृष्ट उदाहरण है जिसे स्पष्ट रूप से प्रारम्भ से ही प्रतिच्छेदन की आवश्यकता है। अफ्रीकी मूल की तीन महिलाओं द्वारा स्थापित, जिनमें से दो क्वीर हैं, बीएलएम कभी भी अश्वेत अमेरिकियों के सिर्फ एक उपसमूह के संघर्ष को उठाने के लिए नहीं था। ऐतिहासिक रूप से, पुलिस क्रूरता को समाप्त करने के लिए लड़ने वाले आंदोलनों ने अश्वेत सामान्य पुरूषों को केन्द्र में रखा है और जहां आलोचक अब कहते हैं कि अश्वेत सामान्य पुरूषों को इस आंदोलन के भीतर असमानुपातिक ध्यान प्राप्त हुआ है, यह इसके संस्थापकों के लक्ष्यों को वास्तव में प्रतिबिंबित नहीं करता है। इसके बजाय, मैं यह तर्क देता हूँ कि यह हमारी दशकों की संगठनात्मक याददाश्त को प्रतिबिंबित करता है। जो अश्वेत सामान्य पुरूषों एवं लड़कों पर केन्द्रित है। हम ऑस्कर ग्रांट का शोक मनाना जानते हैं और इस मिसाल ने हमें फिलांडों कैस्टिल का शोक मनाने के लिए प्रारूप प्रदान किया। हमें अमदौ डायलों का शोक मनाना याद है, इसलिए हम अल्प्रेड ओलंगो का दुख मनाना जानते है। उत्पीड़न की यह धुरी (नस्लीय मर्दानगी) हमें उत्तरदायी, गलत कार्य के बारे में साफ–सुथरे वृत्तांत पैदा करने; ''हत्यारी पुलिस को गिरफ्तार करो'' जैसे अपेक्षाकृत सरल परिवर्तनों का अनुरोध करने की अनुमति देती है। जब हम अश्वेत क्वीर लोगों एवं महिलाओं को एकीकृत करते हैं, हम अति सूक्ष्म अंतर की अतिरिक्त परतों को आमंत्रित करते हैं जिन पर व्यापक रूप से सहमत कोई प्रारूप नहीं है, इसलिए हम एक ऐसी बातचीत प्रारंभ कर रहे हैं जिसे हमारे इतिहास में पूरी तरह से मौन किया गया। इसका अर्थ है कि जब सोशल मीडिया आधारित चेतना–वृद्वि के प्रयास जैसे #SayHerName उठते हैं, तो हानि के प्रचलन, अर्थ और भरपाई पर चर्चा करने के लिए कोई प्रदत्त संरचना नहीं है। अश्वेत महिलाओं और क्वीर लोगों के द्वारा सामना की जाने वाली अधिकांश हिंसा राज्य–हिंसा और पुलिसिंग के आंतरिककरण के कारण होती है और कमजोर (सामुदायिक) सम्बंधों द्वारा सक्षम होती है। यद्यपि, प्रतिच्छेंदन का लेंस हमें न सिर्फ लक्षित परिवर्तन नहीं बल्कि रूपांतरणीय परिवर्तन की कल्पना करने की अनुमति देता है।

>>

यह किम्बरले क्रैनशां के सिद्वांतों का एक प्रमुख योगदान हैः जब हम और अधिक हाशिये पर लोगों की आवश्यकताओं की कल्पना करते हैं अैर उन्हें केन्द्र में रखते है, तो हम ऐसे हस्तक्षेपों का निर्माण करते हैं जो अधिक व्यापक हैं।

एम.ए.: पुलिस के वि–निधीयन पर काफी चर्चा और बहस हुई है। बीएलएम ने आपराधिक न्याय सुधार की आवश्यकता को कैसे उठाया है ?

एस.एम.: सामाजिक परिवर्तन के प्रस्तावों को अक्सर अप्रासंगिक भाग्य के समान प्रतिमान का सामना करना पड़ता हैः एक नकारात्मक झुकाव सर्वाधिक ध्यान आकर्षित करेगा। इस मामले में, 'ले जाने', अनुपस्थिति या फिर जिसे नकारात्मक परिवर्तन कहा जाता है पर ध्यान केन्द्रित करना आसान है क्योंकि यह कठोर लगता है; यह भय को प्रेरित करता है। वैकल्पिक रूप से, सृजन की सकारात्मक राजनीति–आश्चर्य को आमंत्रित कर सकती है। ''पुलिस का विनिधीयन'' का नारा बहुत अर्थपूर्ण हैः यह तीन शब्दों का नारा समृद्व और जटिल, सुक्ष्म–भेदी प्रस्ताव है। यहां मांग पुलिस का विनिधीयन करो –हमारे समुदायों को फंड करो की है : इसके लिए नकरात्मक और सकरात्मक दोनों की आवश्यकता है। यहां मेरा अर्थ मूल्य बोध से नहीं बल्कि उपस्थिति और अनुपस्थिति, खण्डन और सृजन से है। कई मायनों में, यह समाजशास्त्रियों के लिए मुख्य रूचि का विषय होना चाहिए क्योंकि यह अमरीकी समजाशास्त्र के जनक डब्ल्यूइीबी डयू बोइस द्वारा 1935 में लोकतंत्र के उन्मूलन की अभिव्यक्ति के प्रस्ताव पर टिका है। डयू बोइस के सिद्वांत ने यह माना कि हम प्रगतिशील, उन्मूलनवादी परिवर्तनों को सृजन की क्रिया के साथ एकीकृत किये बिना नहीं ला सकते हैं। हमें ''जीवन–पुष्ट करने वाली संस्थाओं'' (रूथ विलसन गिलमोर) के निर्माण के लिए अपने समय, उर्जा और संसाधनो का निवेश करना चाहिए जो हमारी कैरसेरल संस्थाओं और दासता की संरचनाओं का स्थान लेंगी। यह बाद में खालीपन को भोगने की पीड़ा से बचते हुए ''छुटकारा पाने'' का एकमात्र तरीका है ; कार्ससैरिलिंटी और दासता को विकसित करने की एक नया अवसर। तो बीएलएम ने कैसे इस आवश्यकता को उठाया है? हमारे समकालीन सामाजिक आंदोलनों के नेताओं ने न केवल यह स्पष्ट किया है कि किसे हटाया जाना चाहिए, अपितु उन्होंने उसे भी चिन्हित किया है जिसे क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

एम.ए.: बीएलएम मीडिया चित्रण ने नस्लीय न्याय के आयोजन कैसे प्रभावित किया है ?

एस.एम.: दिलचस्प बात यह है कि मुझे ट्रम्प के काल में अश्वेत प्रतिरोधों का मीडिया कवरेज अधिक सहानुभूतिपूर्ण लगा जबकि श्वेत राष्ट्रवादी एजेंडा प्रकट प्रदर्शन पर है। मुख्यधारायी मीडिया ने अश्वेत जीवन और मरण की राजनीति के बारे में एक नये वर्तमान खतरे के काल्पनिक वर्णन को धकेला है– जिसे एशिल मिबेम्बे तात्कालिकता के आविष्कार के रूप में फ्रेम करेगीं। अश्वेत विरोधी और स्वदेशी राज्य हिंसा के निरंतरता के बावजूद, पूर्व की ''अनुचित'' मांगे अचानक वाजिब हो गई हैं।

मेरी पुस्तक, *द इकोनोमिज ऑफ क्वीर इंक्लूजन* के लिए शोध करते समय, मैंने यह जांच की कि मीडिया ध्यान किस प्रकार समस्या की समझ में अधिक वृद्वि की पेशकश किये बिना वित्तीय सहयोग की बाढ प्रदान कर सकता है? कल्पनाशीलता जितनी सनसनीखेज, कठोर होगी, उतना ही अधिक सहयोग प्राप्त होगा। हालांकि सहयोग अधिकतर सतही रहता है और समय के साथ जुड़ाव कम हो जाता है। मीडिया कवरेज अंततः कारण के निर्माण के लिए जिम्मेदार है जो फिर एक नाटकीय और काफी अस्थायी वित्तीय डंप के लिए उत्तरदायी है। कई वैयक्तिक दानदाता और फांउडेशन अपनी प्रोफाइल को बढाने वाली धर्मार्थ संस्थाओं को पकड़ लेते हैं। मीडिया सांस्कृतिक मुहर और वर्तमान प्रासंगिकता की भावना को पैदा करती है। मेरे काम में, यह युगांडा का समलैंगिकता विरोधी बिल था और इस प्रकार का फंडिंग फ्लो (आंधी) वास्तव में अपने अनपेक्षित परिणामों के साथ आता है। मैं एक नस्लवादी न्याय संगठन के निदेशक मंडल के सदस्य के रूप में कह सकता हूँ, इस गर्मी, बीएलएम अर्थ वाले नस्लवादी न्याय पहल महत्वपूर्ण थीं–और ऐसे समय में जब लोग एवं राजनैतिक संकट की कल्पना कर रहे हो हम उसी प्रकार के फंडिग लाभ का अनुभव करने की कल्पना नहीं कर सकते है।

एम.ए.: बीएलएम के प्रगतिवाद ने चुनावों और प्रमुख दलीय राजनीति को कैसे प्रभावित किया है ?

एस.एम.: अश्वेत प्रगतिवाद जो यद्यपि चुनावी राजनीति में काफी हद तक हाशिये पर था, ने हमेशा हमारी मुख्यधारायी राजनैतिक यथार्थ को प्रभावित किया है। एक ऐतिहासिक उदाहरण के रूप में, हम ब्लैक पैंथर पार्टी के फ्री ब्रेकफास्ट प्रोग्राम को याद कर सकते है जो 1960 के दशक में एक राजनैतिक केन्द्र बन गया था और जिसने 1975 में अमेरिका के सरकारी विद्यालयों में व्यापक एकीकरण हासिल किया था। इस साल हमने इस तरह की घटना को देखा राष्ट्रपति के टिकट के लिए अश्वेत प्रगतिशील की कोशिशें जहाँ चार लोकतांत्रिक समाजवादी पहलोंः सार्वभौमिक स्वास्थ सेवा, विद्यालय–ऋण रद्द करना, सार्वजनिक विश्वविद्यालयों तक पहुंच और सामुदायिक संसाधनों (जैसे डेकेयर, सार्वजनिक विद्यालय, वेलनेस सुविधाएं इत्यादि) में निवेश हेतु सैन्य और पुलिस से मुक्त होना के उपर दासता की क्षतिपूर्ति को अधिक महत्व देंगी। फिर से, हम देखते हैं कि अश्वेत प्रगतिशीलों को वांछित वामपंथी टिकट नहीं मिला लेकिन एकल डेमोक्रेटिक उम्मीदवार राष्ट्रपति की प्रेसिडेंशियल प्राइमरी बहसों के दौरान अफ्रीकी अमरीकीयों की दासता के लिए संभावित मुआवजे पर जोर देने के लिए तैयार नहीं था। फिर भी, इतिहास ने अश्वेत राजनैतिक आयोजनों और विचारों के माध्यम से दिखाया है कि देश अश्वेत प्रगतिशील मांगों के अवशेषों से सामूहिक रूप से लाभान्वित होता है।

एम.ए.: समाजशास्त्रियों ने हमारे सोचने और समाजशास्त्र के तरीकों को चुनौती दी है। ब्लैक लाइव्स राजनीति और सकियता पर आपके दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कुछ समाजशास्त्री कौन है ?

एस.एम.: समाजशास्त्रियों ने लंबे समय से ''टोटल संस्थाओं'' की आलोचना की है और इस आलोचना में संलग्न विद्वजन कार्यकर्ता चक्रीय लेबलिंग, निगरानी और दण्ड की संरचनाओं से हमारे समाज को छुटकारा दिलाने के लिए संगठित होते है। अबोलिशन इन द अकेडमी पर मेरे वर्तमान पुस्तक प्रोजेक्ट में, ये सभी विद्वान उन्मूलनवादियों की भाषा और पहचान को अपनाते है।

मैं मरियम काबा के काम को आगे बढाने का मौका नहीं छोडूंगा। वे उन्मूलनवादी विचारधारा और व्यवहार की महम्तवपूर्ण प्रस्फुटक रही हैं और उनके पास समाजशास्त्र की डिग्री है। उच्च शिक्षण संस्थानों में कार्यरत समााजशास्त्रियों के कार्य की चर्चा करना एक बात है लेकिन व्यवहार में समाजशास्त्र के कार्य को मजबूती से पकडे रहना अलग बात है। ब्लैक लाइव्स मैटर शिकागो के साथ मूवमेंट 4 ब्लैक लाइव्स, जिसमें ब्लैक यूथ प्रोजेक्ट 100 भी शामिल है, में योगदान देने वाले कई संगठनों के प्रक्षेपवक्र को प्रभावित करने में काबा सक्षम रही हैं।

मेरे दृष्टिकोण और कार्य को बहुत प्रभावित करने वाले एकेडमी के विद्वान–कार्यकर्ताओं में INCITE! की संस्थापक सदस्य

>>

रविवार 14 जून 2020 को ग्रैंड आर्मी प्लाजा, ब्रुकलिन, एनवाई में कैरिबियन नेतृत्व वाली ब्लैक लाइव्स मैटर रैली। श्रेयः मार्गरेट अब्राहम

बैथ रिची, क्रियेटिव इंटरवेन्शन्स की संस्थापक मिमी विम, और लियत बेन–मोशे जो हमें हमारी विद्वता एवं सक्रियावाद में विकलांगता और पागलपन को केन्द्र में रखने के लिए मजबूर करती हैं, सम्मिलित है। मुझे लगता है कि ये तीनों महिलाएं वास्तव में बौद्विक नवाचार और कार्सरसेरिलिज्म को समाप्त करने के लिए संलग्न व्यवहार में अग्रणी हैं।

अमेरिका के बाहर, मैं जर्मनी में वैनेसा एलीन थाम्पसन और युगांडा में सिल्विया टैमले के कार्य से प्रेरित हूँ। थाम्पसन जर्मनी और फ्रांस में अश्वेत विरोधी और अप्रावासी विरोधी राज्य हिंसा को समाप्त करने के लिए काम करने वाले कार्यकर्ताओं और सामुदायिक आयोजकों द्वारा काम में ली जाने वाली प्रतिरोधक तकनीकों की व्याख्या करती हैं। नारीवादी कार्यकर्ता और शोधकर्ता, तमाले ने हिंसा की संस्कृतियों को बदलने के लिए भिन्न सार्वजनिकों को संलग्न करते हुए कई दशकों तक लैंगिक और यौन न्याय की वकालत की है। ■

सभी पत्राचार <sm.rodriguez@hofstra.edu> पर प्रेषित करें
या फिर www.smrodriguez.com पर जायें।

> संयुक्त राज्य के बारे में क्या किया जा सकता है?

पीटर इवान्स, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू.एस.ए. और अर्थव्यवस्था एवं समाज (आरसी 02), श्रम आंदोलनों (आरसी 44) और सामाजिक वर्ग एवं सामाजिक आंदोलन (आरसी 47) पर आई.एस.ए. की शोध समितियों के सदस्य द्वारा

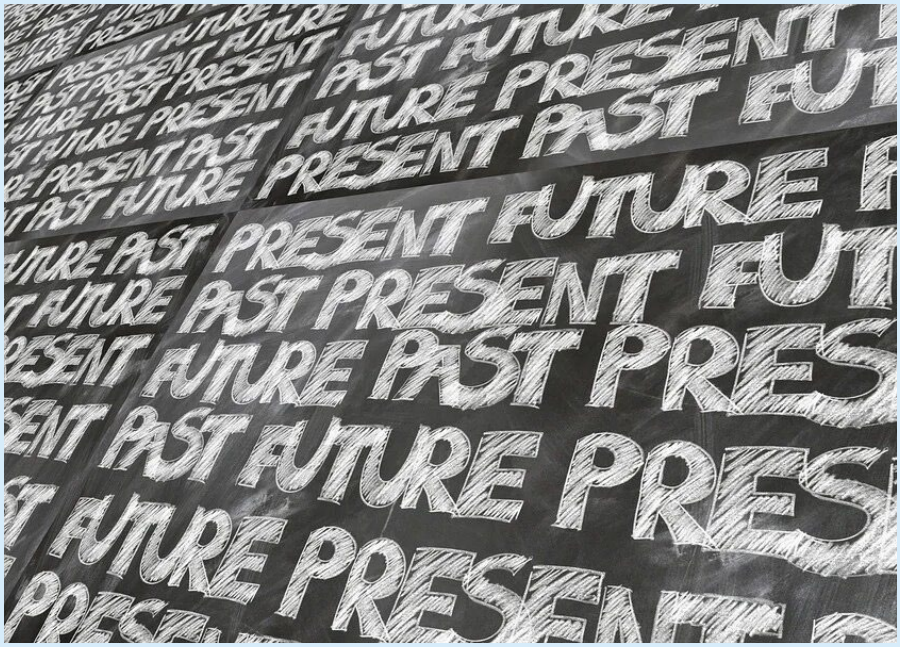

अमेरिका के पिछले चार वर्षों के राजनीतिक, सामाजिक, और आर्थिक विकास का विश्लेषण करते हुए, भविष्य और उसमें किस प्रकार की संभावनाएं हो सकती हैं, को भी देखना आवश्यक है। श्रेय: क्रिएटिव कॉमन्स

बीसवीं शताब्दी के मध्य के बाद से, संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रक्षेपवक्र पूंजीवाद के वैश्विक उद्विकास का द्योतक है। क्या अमेरिका अभी भी पूंजीवाद के वैश्विक उद्विकास का अग्रदूत है ? यदि ऐसा है तो, 21वीं सदी के अमेरीकी पूंजीवाद की अपने श्रमिक वर्गों की खुशहाली के बीसवीं सदी के मानकों को बनाये रखने की गिरती क्षमता और इस विफलता के राजनैतिक प्रभावों के दुनिया के सभी नागरिकों के लिए मायने हैं।

21वीं सदी में अमेरिका की अव्यवस्थित प्रवेश की उत्पत्ति एवं निहितार्थ को समझना एक विश्लेषणात्मक चुनौती है। इस चुनौती का सामना करने के लिए पांच प्रभावशाली प्रयासों ने अनुगमन किया। वे अमरीका की राजनैतिक अर्थव्यवस्था के विशिष्ट क्षेत्रों पर केन्द्रित संक्षिप्त विश्लेषण हैं जो अमेरिका के विचलित करने वाले दुष्कार्यों के बारे में क्या किया जा सकता है के प्रश्न की जांच करते हैं। जहां यह समष्टि व्यापक समीक्षा होने का कोई ढोंग नहीं करती है, यह एक गहन और उत्तेजक मोजेक है जो उन बहसों पर एक उत्पादक प्रारम्भ की पेशकश करता है जिसकी नई सदी के प्रारम्भ में अमरिका में रहने वाले (या फिर उसके साये में) लोगों को प्रभावित करने की काफी संभावना है।

'अमेरीकी खुशहाली की गिरावट के नये मान्यता प्राप्त संकेतकों के साथ गेबर स्कीरिंग अपना विमर्श प्रारंभ करते हैं– बिना कॉलेज शिक्षित श्वेत कामगारों के मध्य ''हताशा की मौतों'' के कारण बढती मृत्यु दर। कामगार वर्ग की आजीविका और समुदायों का बाजार संचालित विनाश, जो हताशा की मौतों को अग्रेषित करता है, ने कामगार वर्ग की राजनैतिक शिकायतों को बहिष्कारवादी दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद राजनीति के लिए समर्थन की तरफ मोड़ दिया।

हताशा की मौतें क्रिस्टोफर मुलर और सुरेश नायडू के लिए भी एक अर्थपूर्ण लक्षण हैं लेकिन मुलर और नायडू का आंकलन ''प्रमाणपत्र–आधारित अपवर्जन एवं शोषण द्वारा उत्पादित सामाजिक विभाजन'' और इस अपवर्जन से पैदा होने वाले राजनैतिक खाई को आलोकित करता है। फीस को कम करके कॉलेज शिक्षा तक पहुंच का विस्तार करना इस विभाजन को पाटने में मदद कर सकता है, लेकिन वे प्रमाणपत्र खाई के पार प्रभावी गठजोड़ों का निर्माण करने को अधिक महत्वपूर्ण समझते है। मुलर और नायंडू का विश्लेषण गठजोड़ निर्माण की जिम्मेदारी शिक्षित वामपंथियों पर डालते है और उदाहरण के लिए यह सुझाव देते है, कि इस विशेषाधिकार समूह के अधिक सदस्यों को अपने प्रमाण पत्रों को ''कामगार वर्ग के अमेरीकीयों के प्रति वास्तव में जवाबदेह संगठनों'' जैसे श्रम संघ, की सेवा में काम में लेना चाहिए।

पैट जेवला का आलेख कामगार वर्ग के लाइफवर्ल्ड के विनाश से निर्धन एवं अश्वेत अप्रवासी महिलाओं के निरंतर संघर्षों की तरफ जाता है। स्कीरिंग के तर्क, जिसमें प्रमुख राज्य मुख्य रूप से पूंजीवाद के विनाशकारी ऐजेंडों का एक सहयोगी है, के विपरीत प्रजनन अधिकारों पर राज्य का सक्रिय दमन इन महिलाओं के जीवन और परिवारों के लिए एक प्रमुख खतरा है। फिर भी, अवैयक्तिक पूंजी के बजाय, राज्य का मुख्य विरोधी के रूप में होना, प्रतिरोध के आयोजन के लिए अनुकूल हो सकता है। जेवला के लिए, प्रजनन

> >

न्याय के लिए लड़ाई का सार अश्वेत महिलाओं के नेतृत्व वाले सामाजिक आंदोलनों के व्यापक गठबंधन में है जिसने रूढिवादी एजेंडे का प्रतिरोध करते हुए आश्चर्जनक रूप से कुछ जीत हासिल की हैं। यह बाइडेन प्रशासन का सामना करने में भी कम आक्रामक नहीं होगा।

कम कार्वन वाले भविष्य के लिए परिवर्तन को अक्सर एक तकनीकी समस्या के रूप में माना जाता है लेकिन मिजिन चा का आलेख स्पष्ट करता है कि कामगार वर्ग संगठनों और अश्वेत समुदायों को एक साथ लाने वाला समावेशी आयोजन फिर से सफलता की कुंजी है। जलवायु न्याय संघर्ष के लिए ऐसे गठबंधन निर्माण की आवश्यकता है जो ''उत्सर्जन कटौती के साथ गुणवत्ता रोजगार सृजन को जटिल रूप से जोड़ता है'' और उन अश्वेत समुदायों को सम्मिलित करता है जिन्हें प्रदूषणकारी जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन का खामियाजा भुगतने पर मजबूर किया गया। वे रणनीतियां जो ''आर्थिक एवं सामाजिक विचारों को उत्सर्जन कटौती से दूर ले जाती है'' न सिर्फ अन्यायपूर्ण हैं बल्कि वे कभी भी जीवाश्म ईंधन लाभ के खिलाफ कर्पण हासिल करने के लिए व्यापक राजनैतिक गठबंधनों का निर्माण नहीं कर पायेंगी।

मार्क्स हंटर द्वारा पांच लेखों में से अंतिम, गहन ऐतिहासिक गहराई को समाधान के तरफ जाने वाले मार्ग की व्यापक दृष्टि के साथ जोड़ता है। अमेरीकी पूंजीवाद के निर्माण और पोषण में दासता की बुनियादी भूमिका से प्रारम्भ हो कर, वे 400 वर्षों के नस्लीय पूंजीवाद में अंतर्निहित नस्लीय, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक असमानताओं को ठीक करने के लिए आवश्यक परिवर्तन के महत्व को कमतर करते हैं। हंटर द्वारा समर्थित हर्जाने का बहुआयामी कार्यक्रम हालांकि केवल एक सैद्वांतिक संविन्यास नहीं है। यह बहुत ठोस और विशिष्ट प्रस्तावों जैसे राष्ट्रीय सच, रेशियल हीलिंग एण्ड ट्रान्सफोर्मेशन (टीआरएचटी) कमीशन्स को बनाने के लिए कानून से प्रारम्भ होता है।

सारभूत फोकस एवं विश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य में सटीक रूप से विविध, इन पांच लेखों में, अमरीका मे क्या परेशानी है के निदान और आगे बढने के तरीकों के पहचान दोनों के सदंर्भ में, समान थीम हैं।

ये विश्लेषक ट्रम्प की नीतियों के विनाशकारी प्रभावों को प्रदत्त मान लेते हैं। कैपिटल पर जनवरी 2021 में हमले ने ट्रम्प की श्वेत कामगार वर्ग के गुस्से को उत्प्रेरित करने की क्षमता का प्रदर्शन किया और इसने साथ ही नाटकीय रूप से अमरीकी दुष्कार्यों से निर्मित राजनैतिक वेग का भी खुलासा किया। जनवरी हमले के काफी पहले लिखा गया, स्कीरिंग के लेख ने तर्क दिया कि दशकों से चल रहे नवउदारवाद द्वारा कामगार वर्ग के जीवन पर बरसे कहर का अनुपस्थित प्रत्यावर्तन ट्रम्पवाद की समान लेकिन और भी अधिक जहरीले राजनैतिक आंदोलनों का शिकार होने की संभावना थी।

यहां पर उठाई गई समस्याओं का न कोविड वैक्सिीन और न ही एक नया राष्ट्रपति समाधान करेगा। 21वीं सदी की अमरीकी दुष्प्रकार्य/शिथिलता की सरंचनात्मक जड़े इन लेखकों द्वारा प्रस्तावित रणनीतियों का मुख्य निशाना हैं, और वाशिंगटन में एक नये राष्ट्रीय प्रशासन होने के बावजूद ये बनी रहेंगी। जेवला ने निष्कर्ष दिया कि व्हाइट हाउस में बाइडेन के होने से यह तथ्य परिवर्तित नहीं होता है कि ''भविष्य संघर्षमयी हैं।'' चा को विश्वास है कि ''बाइडेन–हैरिस प्रशासन के तहत ग्रीन–न्यू डील जैसी लामबंदी के लिए मंद संभावनाएं हैं।''

संयुक्त राज्य अमेरिका के भविष्य के बारे में चिंतित लोग इस समष्टि को चिंतामुक्त नहीं छोड़ेंगे। इन लेखकों में से कोई भी यह तर्क नहीं देता है कि ऐसे कई अयोग्य संरचनात्मक कारण है जिनकी वजह से उनके द्वारा प्रस्तावित समाधानों के लागू होने की संभावना है। इन में से कोई भी यह दावा नहीं करता कि शक्तिशाली राजनैतिक ताकतें अमरीकी अर्थव्यवस्था और राजनीति में गिरावट का मुकाबला करने के लिए एकजुट है। आश्वासन ढूंढ रहे लोगों के द्वारा समझी जाने वाली एक आशावादी उद्देश्यवाद का कोई भरोसेमंद सूत्र नहीं हैं।

फिर भी, यहां भी कोई कयामत का पैगम्बर नहीं है। ये विश्लेषण केवल निदानात्मक नहीं है। वे परिवर्तन को बढावा देने की संभावनाओं के एक पेचीदा सेट की परिकल्पना करते हैं। हंटर, जो अमेरिका की सबसे गहन संरचनात्मक समस्या–नस्लवाद पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, सबसे आशावादी दृष्टि की पेशकश करते हैं। वे यह तर्क देते हैं कि ''सत्य को स्वीकार एवं संग्रहित करने से और अर्थपूर्ण नस्लीय उपचार को प्राप्त करने से एक रूपांतरित अमरीका को खोला जा सकता है।'' प्रत्येक आलेख राजनैतिक एजेंटों के एक सेट को चिन्हित करता है जिसमें प्रगतिशील परिवर्तन के पक्ष में लाभ उठाने की क्षमता हैं। राष्ट्रीय नीतियों को एक अदम्य क्षेत्र मानते हुए, वे छोटे पैमाने पर ठोस संभावनाओं पर ध्यान केन्द्रित करते है। चा राज्य स्तर पर सफल जलवायु परिवर्तन गठबंधनों का हवाला देते हैं, विशेषकर जहां गठबंधनों में श्रमिक वर्ग के संगठन शामिल है। जेवला प्रगतिशील उर्जा के आवश्यक तत्व के रूप में लिंग, जाति एवं वर्ग पहचान के पार गठबंधनों पर प्रत्यक्ष रूप से ध्यान केन्द्रित करते है। मुलर और नायडू के लिए, श्रमिक वर्ग संगठनों को बनाने और बनाये रखने में मदद करने में शिक्षित वामपंथियों की इच्छा एक कुंजी है। स्किरिंग पुष्टि करते हैं कि आर्थिक अव्यवस्था को हताशा की मौतों से जोड़ने वाले जटिल करणीय मार्ग और प्रतिगामी राजनीति से हताशा को जोड़ने वाले तंत्रों का मानचित्रण कर, समाजशास्त्रियों की भी भूमिका है।

विशिष्ट रूप से भिन्न क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करने के बावजूद, लेखक कर्त्ताओं के ऐसे सेट की पहचान करते हैं जो ऐसे तरीकों से अतिच्छादित होते हैं जो एक क्षेत्र की विजय से दूसरे क्षेत्रों में आगे बढने की संभावनओं को मजबूत करते हैं। तब यह जनसमूह जो प्रदान करता है, वह एक पहेलीनुमा परस्परछेद करने वाली कार्यवाही करने की योजना है। यह क्या किया जाना है का ब्लू प्रिंट नहीं, बल्कि ''क्या किया जा सकता है'' के आंशिक स्कैच का एक सेट है। ■

सभी पत्राचार पीटर इवांस को <pevans@berkeley.edu> पर प्रेषित करें।

> हताशा की मौतें और लोकतंत्र का स्वास्थ्य : समाजशास्त्र के लिए चुनौती

गैबोर स्कैंरिंग, बोकोनी विश्वविद्यालय, इटली एवं आई.एस.ए. की अर्थव्यवस्था एवं समाज (आरसी 02), श्रम आंदोलनों (आरसी 44), एवं सामाजिक वर्ग और सामाजिक आंदोलनों (आरसी 47) पर शोध समितियों के सदस्य द्वारा

सहस्त्राब्दी के मोड़ के बाद से मध्यम आयु वर्ग के अमेरिकियों की मृत्यु दर बढ़ रही है। मृत्यु दर की इस लहर के तीन प्रत्यक्ष कारण आत्महत्या, ड्रग ओवरडोज और शराब से संबंधित मौतें हैं – तथाकथित '' हताशा की मौतें''। श्रेयः क्रिएटिव कॉमन्स

कोरोना वायरस महामारी ने अस्थायी रूप से लोकलुभावनवाद के उभार को धीमा करने और यथास्थिति की राजनीति पर दबाव को कम करने में मदद की है, जिसने 2020 के राष्ट्रपति पद की दौड़ में जो बाइडेन की जीत में योगदान दिया है। हालांकि, डोनाल्ड ट्रम्प की विरासत उनके व्हाइट हाउस में रहने के परे जाती है। ट्रम्पवाद और अधिक सामान्य रूप में राष्ट्रीय लोकलुभावनवाद–समकालीन पूंजीवाद के अस्तित्वगत खतरे की एक अभिव्यक्ति है। यदि केन्द्रवाद द्वारा

> >

फुसलाया और रिपब्लिकन द्वारा अवरोधित– बाइडेन का प्रशासन अंतर्निहित सामाजिक तनाव और आर्थिक अव्यवस्था को ठीक नहीं करता है तो राष्ट्रवादी–लोकलुभावनवाद की द्वितीय लहर और ट्रम्पवाद का एक संभावित और अधिक बुरा संस्करण अपरिहार्य है। समाजशास्त्र इस प्रयास में राजनीति की सहायता कर सकता है।

राजनैतिक नेतृत्व के एक तरीके के रूप में लोकलुभावनवाद, जो गैर–अभिजनों से प्रत्यक्ष संबंध बनाने की कोशिश करता है और उन्हें अभिजनों के खिलाफ उपयोग करता है, की संयोजकता की एक श्रंखला हो सकती है। कभी–कभी यह पुनर्वितरण के एजेन्डों को आगे बढाता है जो जमें हुए अभिजनों को हटाने में मदद करता है। अन्य समय में, यह प्रतिक्रियावादी, प्रतिगामी एजेंडों को बढावा देता है जिसमें वे लोग, जिनके हितों का प्रतिनिधित्व करने का यह दावा करता है, समाज का एक प्रसारित उपसमूह है और ''अभिजनों'' पर आक्रमण आर्थिक विशेषाधिकारों को खतरे में डालने से सावाधानीपूर्वक बचाता है और इसके बजाय उन्हें मजबूत करता हैं। लोकलुभावन की वर्तमान लहर दूसरी श्रेणी में आती हैः प्रतिक्रियावादी, दक्षिणपंथी किस्म का लोकलुभावनवाद। इस आलेख में *लोकलुभावनवाद* इसी को संदर्भित करता है।

राजनीतिक वैज्ञानिक वर्तमान लोकलुभावनवाद लहर के बारे में सबसे अधिक प्रचलित विद्वतावपूर्ण वृत्तांतों को प्रदान करते है। उनकी कुशलता मतदाताओं के दृष्टिकोणों और राजनैतिक तिकड़मबाजी के विश्लेषण में है। जहां यह स्पष्ट है कि स्थापित उदार लोकतंत्र के प्रतिमानों और संस्थाओं के टूटने के साथ राजनैतिक तिकड़मबाजी लोकलुभावनवाद को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, लोकलुभावन राजनेता एक सामाजिक शून्य में काम नहीं करते है। अन्य लोकलुभावनवाद के लिए राजनैतिक मांग को निर्धारित करने वाली अनुदार सांस्कृतिक प्रवृत्तियों पर जोर डालते हैं। यद्यपि लोकलुभावनवाद केवल नस्लवाद से अधिक है। लोकलुभावन मतदाताओं को नस्लवादियों के रूप में खारिज करने से उदारवादी श्रमिक–वर्ग समुदायों में पार्टी की जमीनी स्तर की सरंचनाओं को अनदेखा करते हैं जो एक घातक राजनैतिक त्रुटि है।

राजनीति विज्ञान के विपरीत, समाजशास्त्र ने अब तक लोकलुभावनवाद बहस में गौण भूमिका निभाई है। आर्थिक परिवर्तन–भूमण्डलीकरण, वि–औद्योगिकीकरण और कौशल–गहन सेवा रोजगार की तरफ परिवर्तन ने कैसे पारम्परिक चुनावी गठबंधनों को बदला है, पर समाजशास्त्रियों ने रोशनी डाली है। इन विवर्तनिक परिवर्तनों ने सामाजिक लोकतांत्रिक दलों के चुनावी आधार को कमतर किया और श्रमिक वर्ग के मतदाताओं को दक्षिणपंथी झुकाव की तरफ धकेला। अन्य ने दर्शाया कि जब वामपंथ सामाजिक और आर्थिक नीतियों पर दक्षिणपंथ की तरफ मुड़ता है, लोकलुभावन दक्षिणपंथ जीतता है। गुणात्मक समाजशास्त्री और नृवंशविज्ञानशास्त्रियों ने इस परिदृश्य को यह दर्शा कर पूर्ण किया कि शॉक थेरेपी प्रेरित सामाजिक विघटन और दशकों के नवउदारवाद ने कैसे दैनिक लाइफवर्ल्ड और श्रमिक वर्ग समुदायों के साथ तबाही मचाई है। ऐसा कर उन्होंने वर्ग–पहचान को खत्म किया और आर्थिक शिकायतों की राष्ट्रीय लामबंदी का मार्ग प्रशस्त किया।

हालांकि पूंजीवाद के अस्तित्वगत संकट का एक विशिष्ट संकेतः वि–औद्योगिक, रस्ट बेल्ट क्षेत्रों में श्रमिकों की घटती जीवन प्रत्याशा और उसके साथ गहराती स्वास्थ्य असमानातएं, अभी तक समाजशास्त्रियों के ध्यान से बची हुई है। अमेरिका ''हताशा की मौतों'' की महामारी का सबसे चौंकाने वाला उदाहरण पेश करता है, लेकिन यू.के. और समाजवाद–पश्चात पूर्वी यूरोप जैसे दुनिया के अन्य भागों– ने भी इसी प्रकार की श्रमिक वर्ग मृत्युदर और बढती स्वास्थ्य विषमताओं को अनुभव किया है।

अधिकांश बीसवीं सदी के दौरान अमेरिका और यूरोप में, जीवन प्रत्याशा बढती रही। यह स्वास्थ्य सेवाओं, कल्याण राज्य और आर्थिक वृद्वि में विकास द्वारा लाये गये लाभों का एक सबसे पुष्ट संकेत है। यद्यपि, दुनिया की सबसे शक्तिशाली अर्थव्यवस्था एक पूर्णतया भिन्न रूझान को अनुभव कर रही है जो बुनियादी रूप से यू.एस. वृद्वि मॉडल की प्रकार्यात्मकता पर प्रश्न उठाती है।

सदी के प्रारम्भ से मध्य वय वाले श्वेत अमेरिकियों की मृत्युदर बढ रही है। तीन दशक पूर्व अश्वेत श्रमिकों ने भी इस तरह के स्वास्थ्य संकंट का सामना किया था जब संयंत्रों की सामूहिक बंदी की पहली लहर ने आंतरिक–शहर समुदायों के साथ तबाही मचाई। दो प्रिंस्टन अर्थशास्त्री एनी केस और एंगस डीटन ने जैसा अपनी पुस्तक में आलोकित किया, हताशा की मौतों ने 2017 के दौरान 158,000 अमरीकीयों को मारा जो एक पूरे भरे बोइंग 737 के एक वर्ष तक रोजाना आसमान से गिरने के बराबर था।

अमेरिका के इस मृत्यु दर की लहर के तीन प्रत्यक्ष कारण आत्महत्या, ड्रग की ओवरडोज और शराब सम्बंधित मौतें थी। इन्हें केस और डीटन हताशा की मौत कहते है। वे यह दर्शाती है कि लोग अपने भविष्य के बारे में क्या महसूस करते हैं और अपने जीवन को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं। हताशा की मौतें समाज में समान रूप से वितरित नहीं है। हताशा की मौतों में वृद्वि महाविद्यालय या विश्वविद्यालय डिग्री के बिना श्रमिकों तक सीमित है। अमरीकी श्रमिक वर्ग का सामाजिक विस्थापन सबसे महत्वपूर्ण पार्श्विक काराण है।

स्थिर औद्योगिक नौकरियों के विलोपन ने महत्वपूर्ण रूप से समुदायों का पुनः आकतिरत किया है और श्रमिक वर्ग की संस्कृति को तोड़ दिया है। अस्थाई कार्य व्यवस्था, शून्य घंटे के अनुबंधों, और स्व–रोजगार के रूप में वर्णित रोजगार के उभार के साथ निर्माण एवं सेवा क्षेत्र में नई नौकरियां अधिक अस्थिर होती है। निर्मम कार्पोरेट रणीतियां, प्रतिकारी संगठित शक्ति की अनुपस्थिति और पूंजी द्वारा कब्जा किया गया राज्य इस परिवर्तन के केंद्र में हैं। पूर्व में ब्लू कॉलर, कामकाजी अभिजात वर्ग की क्षेत्रीय रीढ बनने वाले शहर आज बढती सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के घर हैं–निराशा के घर। अमरीकी रस्ट बेल्ट के वि–औद्योगिकरण ने कामगार वर्ग के विघटन को तीव्र किया है और इसके कारण तीव्र मनोसामाजिक तनाव और निराशा में वृद्वि की है। यह संदर्भ भावनात्मक और मानसिक विकारों जो समय के साथ अन्य स्वास्थ्य समस्याओं और व्यसनों में तब्दील हो जाते है, के प्रजनन का स्थल है।

हताशा की मौतों में अग्रणी पथप्रवर्तक जांच की पेशकश करने के बावजूद, अर्थशास्त्र की वैषयिक सीमाएं केस और डेटन के विश्लेषण को बाधित करती हैं। वि–औद्योगिकरण के प्रतिकूल सामाजिक परिणामों पर प्रारम्भिक समाजशास्त्रीय साहित्य को प्रतिध्वनित करते हुए, लेखक स्वास्थ्य असमानताओं के एक प्रतिवाह निर्धारक के रूप में आर्थिक अव्यवस्था की केन्द्रीयता को उजागर करते हैं। हालांकि, इन तंत्रों की जटिलताओं को खोलने और आवश्यक सैद्वांतिक एवं नीतिगत निष्कर्ष निकालने के बजाय, वे अमरीकी अनुभव की असाधारणता पर बल देते है और अपनी पुस्तक का समापन अपेक्षाकृत कम बलकारी प्राक्कथनों से करते हैं जिसका ध्यान फार्मास्यूटिकल्स के और ''वास्तविक मुक्त एवं प्रतिस्पर्धी बाजार'' के बेहतर नियमन की आवश्यकता पर केन्द्रित है (केस और डीटन, 2020)।

अमेरिका में जीवन प्रत्याशा में गिरावट की शुरूआत से कुछ वर्ष पूर्व, पूर्वी यूरोप ने एक तुलनात्मक मृत्युदर की तबाही को अनुभव किया था जिसकी मात्रा विकसित विश्व के शांतिकाल के

>>

दौरान अप्रत्याशित थी। रूस अकेले ने 1990–99 में 3.26 मिलियन अतिरिक्त मौतों को अनुभव किया। मेरी पीएचडी थीसिस और कई बार के आलेखों का शीर्षक– उत्तर–समाजवादी मृत्युदर संकट पूर्वी यूरोप के औद्योगिक एवं रोजगार संरचना को परिवर्तित करने वाले तीव्र बदलावों से भी जुड़ा था। हंगरी में उत्तर–समाजवादी मृत्युदर संकट के दौरान होने वाली अतिरिक्त पुरूष मौतों के एक तिहाई के लिए वि–औद्योगिककरण जिम्मेदार हो सकता था, जबकि अंतर्राष्ट्रीय निगमों की मेजबानी करने के आर्थिक लाभ बेहतर स्वास्थ्य में तब्दील नहीं हुए। रूस से समानांतर साक्ष्य वि–औद्योगिकरण और बड़े पैमाने पर निजीकरण द्वारा निर्मित आर्थिक अव्यवस्था के नकारात्मक मनोसामाजिक प्रभावों की पुष्टि करते हैं। यद्यपि, 1990 के दशक के उतरार्ध से पूर्वी यूरोप में जीवन प्रत्याशा पुनः बढने लगी है। इसके विपरीत, कामगार अमरीकी श्वेत वर्ग की जीवन प्रत्याशा में बीस वर्षों से गिरावट आ रही है।

लोगों का स्वास्थ्य और देश का स्वास्थ्य परस्पर जुड़ा हुआ है। हताशा के रोगों से प्रभावित क्षेत्रों में पीछे रह गये लोगों, अनिश्चितता, और उतरती गतिशीलता की संभावना का सामना करने वाले श्रमिकों में लोकलुभावन विद्रोहियों को समर्थन देने की उच्च प्रवृत्ति है। अमेरिका के स्वास्थ्य–वंचित क्षेत्रों में ट्रम्प की लोकप्रियता, वर्षों की मित्तव्यत्तता से प्रभावित ब्रिटेन के अस्वास्थ्यकर शहरों में ब्रेक्सिट वोटों का उच्च हिस्सा, और इटली के वि–औद्योगिक शहरों में श्रमिकों के मध्य लेगा नार्ड की बढती लोकप्रियता, इस बिन्दु के मामले हैं।

हालांकि, राजनैतिक बलशाली अपने मतदाताओं को बेहतर जीवन देने का वादा और ''नियंत्रण को वापिस लेने'' द्वारा इन्हीं लोगों का पार्श्व में शोषण करते हैं। ट्रम्प और ''ब्रेक्सिट बोरिस'' द्वारा द्योतित राष्ट्रीय–लोकलुभावन उत्परिवर्तन के प्राथमिक लाभार्थी अभिजन हैं। यद्यपि असमानता दीर्घ अवधि में आर्थिक विकास को कमजोर करती है, उर्ध्वगामी पुनर्वितरण अल्पावधि में वृद्वि को मजबूत कर सकती है। इस प्रकार राष्ट्रीय लोकाधिकार राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग (बुर्जआ), विदेशी निवेशकों और उच्च–मध्यम वर्ग के समर्थन को भी आकर्षित कर सकते हैं।

आज के बहुल संकटों के मूल कारण लोकाधिकारी नहीं है। वे दोषपूर्ण आर्थिक संरचनाओं के द्वारा उत्पन्न संकटों द्वारा पेश किये गये हर संरचनात्मक अवसर का फायदा उठाने वाले अविचारी राजनैतिक उद्यमी हैं। इन अंतर्निहित आर्थिक अव्यवस्थाओं के विश्लेषण के लिए समाजशास्त्र में विशाल क्षमता है जैसे वैश्विक संवाद में किये गये विश्लेषण लोकाधिकारवाद के विश्लेषण में समाजशास्त्रीय विश्लेषण के लाभ को दर्शाते हैं।

मध्यवादी राजनीति और यथास्थिति की रक्षा करने वाली नीतियां मौजूदा लोकलुभावन लहर के अंतर्निहित कारणों को सम्बोधित करने और आर्थिक अव्यवस्थाओं जो हताश की मौतों को कारण बनती है को ठीक करने के लिए अपर्याप्त होंगी। जनसांख्यिकीय एवं लोकतांत्रिक संकटों का वर्तमान संयोग गहरे परिवर्तनों का आह्वान करता है। सामाजिक मौतों और औद्योगिक परिवर्तन के सामाजिक परिणामों के विश्लेषण में वैषयिक जड़ों का दोहन करके समाधानों को खोजने में समाजशास्त्रीयों की अनूठी भूमिका हो सकती है। अर्थशास्त्रियों एवं राजनैतिक वैज्ञानिकों का पूरक बनते हुए, केवल एक समाजशास्त्रीय उपागम ही हताशा की मौतों को आर्थिक अव्यवस्था से जोड़ने वाले जटिल कारकीय मार्गों का नक्शा खींच सकता है और लोकाधिकारियों के समर्थन में राजनीति में बुरे स्वास्थ्य को वापिस फीड करने वाले तंत्रों पर प्रकाश डाल सकता हैं। लोकतंत्र का स्वास्थ्य और नागरिकों का स्वास्थ्य एक दूसरे पर निर्भर करता है। ■

सभी पत्राचार गैबोर स्कैंरिंग को <gabor@gaborscheiring.com> पर प्रेषित करें।

सन्दर्भ :

केस ए एवं डीटन ए (2020) *Deaths of Despair and the Future of Capitalism*, प्रिन्सटन, एन जेः प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

> मानवीय पूंजीवादी

किस्टोफर मुलर, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू.एस.ए. एवं **सुरेश नायडू**, कोलम्बिया विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. द्वारा

अर्बु द्वारा चित्रण।

अत्यधिक धन एवं आय की असमानताओं की पृष्ठभूमि में, कोविड–19 द्वारा लायी गयी आर्थिक तबाही एक क्रांतिकारी परिस्थिति के लिए आदर्श स्थिति होगी। सामाजिक लामबंदी की सबसे अधिक यांत्रिक आर्थिक निर्धारक सिद्वांतों पर गौर करें : उच्च संरचनात्मक असमानता के साथ संक्रमणकालीन आर्थिक झटके और कमजोर राज्य क्षमता को राज्य के संकट और शासन व्यवस्था में संभावित परिवर्तन में बदलना चाहिए। कम से कम, ऐसे सिद्वांत यह अनुमान लगायेंगे कि बर्नी सैंडर्स को शानदान जीत हासिल होती चूंकि संयुक्त राज्य अमरीका में कामगार–वर्ग की जनता उसके पुनर्वितरण केन्द्रित मंचों के इर्द–गिर्द एकत्रित हुई।

लेकिन इसके बजाय हमारे समक्ष एक निरंतर राजनैतिक गतिरोध है जो आगे राज्य की गतिहीनता को जन्म देगा। 2020 के चुनाव की चीर–फाड़ पूर्वाभासी भविष्य के लिए प्रबल होगी। लेकिन पार्श्व में यह तथ्य है कि दुनिया भर में शिक्षा, वामपंथियों के लिए मतदान के और वास्तव में वामपंथी सक्रियतावाद के भी सबसे बड़े भविष्यवक्ता में से एक बनी हुई है। हम पिकेटी के मर्चेन्ट राइट और ब्राह्मण लेफ्ट के मध्य की खाई को कैसे समझ सकते है ? क्या इसका यह अर्थ है कि राजनैतिक विश्लेषण के लिए भौतिकवादी दृष्टिकोण को छोड़ देना चाहिए ? हम ऐसा नहीं सोचते हैं। लेकिन संभवतः इसे साख–आधारिक अपवर्जन एवं शोषण द्वारा उत्पादित सामाजिक विभाजनों के प्रति अधिक ध्यान देने वाले विश्लेषण से अनुपूरित करना चाहिए।

> दो बिन्दुओं पर विचार करें

पहला, कम से कम 1960 के दशक के बाद से विश्वविद्यालय वाम विचारों को संस्थागत रूप से पुनर्उत्पादित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्थानों में से एक बन गये हैं। रूढिवादी इस तथ्य का दुख मनाते हैं। और जैसे हम जलवायु तबाही की तरफ चलते हैं और खुद को एक महामारी से बाहर निकालते हैं यह उल्लेखनीय है कि इन में से कितने एक तरफी कैम्पस राजनीति की वजह से रात भर जागते हैं। लेकिन यह निर्विवाद है कि अधिकांश संस्कृति उद्योग के साथ विश्वविद्यालयों पर पूर्ण रूप से डेमोक्रेट् समर्थकों ने कब्जा कर लिया है। समाज का अध्ययन करने वाले विभागों की तुलना में ऐसा कहीं ओर अधिक सच नहीं है : अर्थशास्त्र, जिसे व्यापक रूप से रूढिवादी विषय माना जाता है, के प्रोफेसर भी 4:1 के अनुपात में डेमोक्रेटस् की तरफ झुकते हैं (समाजशास्त्र में यह अनुपात 44:1 है)। और यह राजनीति सिर्फ मध्यवादी डेमोक्रेटस् को ही नहीं बल्कि वामपंथियों में से कईयों को कॉलेज से विरासत में मिली है।

दूसरा, 1970 के दशक से, कॉलेजों से स्नातक नहीं करने वाले लोगों का भाग्य निरपेक्ष और सापेक्ष दोनों ही अर्थों में खत्म हो रहा है। 1970 के दशक के अंत से 2000 तक कॉलेज प्रिमियम लगातार बढता रहा। आज, जब छात्र–ऋण संकट और 2009 की बंदी ने कॉलेज शिक्षित युवाओं की पीढी को खतरे में डाला है, कॉलेज से स्नातक न करने की कीमत स्पष्ट है जो ऐन केस एवं एंगस डीटन द्वारा प्रलेखित बी.ए. डिग्री के बिना लोगों में मृत्युदर में अचानक वृद्वि द्वारा चित्रित की जाती है। निजी क्षेत्र यूनियन, कट्टरपंथी कामगार वर्ग संगठन, भी अधिकाधिक कॉलेज स्नातकों से भर गये हैं। जबकि संघीकरण अधिकांश कम–मजदूरी वाले श्रमिकों से दूर रहता है।

ये दो बिंदु आमतौर पर अलग–अलग चर्चा में आते हैं, लेकिन इनके बारे में एक साथ सोचना लाभदायक हैं। जब हम ऐसा करते

> >

हैं, हम देख सकते हैं कि विश्वविद्यालयों ने अपने स्नातकों को तेजी से वैश्विक धन कर या एक ग्रीन न्यू डील जैसे विचारों की मजबूती के लिए उकसाया है। ऐसा उन्होंने ऐसे समय में किया है जब उन्होंने अपने और हमारे समाज में बड़ी संख्या के मतदाताओं के मध्य सामाजिक, आर्थिक एवं बयानबाजी के मध्य दूरी को और बढ़ा दिया है।

यह विलगाव पूर्ण बहुमत का निर्माण करने की आशा करने वाले किसी भी आंदोलन के लिए एक गतिरोध पैदा करता है। वामपंथियों के पुनरूत्थान ने आनलाइन पब्लिक स्केअर को पुनर्जीवित कर दिया है। इस तरह मुख्यधारा के मीडिया प्रतिष्ठानों में समाज की पुनर्कल्पना करने वाले शक्तिशाली विचारों को लाया गया है, जिन्हें कुछ वर्ष पहले तक हाशिये पर समझा जाता था। लेकिन जहां वाम एवं मध्य के बीच, या वामपंथियों के मध्य ऑनलाइन बहस महत्वपूर्ण है और आवश्यक हैं, वे भी तकरीबन काफी पूरी तरह रूप से बी.ए. विनिमय के मध्य हैं, और वे उन चिंताओं का प्रदर्शन करते हैं जो 1982 के बाद जन्में 60 प्रतिशत लोग, जिनके पास कॉलेज डिग्री नहीं है, के लिए अजनबी है। बहुत बार, इन गैर–कॉलेज स्नातकों की चिंताएं और गतिविधियां, जो रसोई के मेजों के इर्द–गिर्द और चर्चों एवं सामुदायिक केन्द्रों में आयोजित होती है, उन लेखकों की दुनिया से असंगठित रूप से जुड़ी होती है जो उन्हें नीतिगत मांगों से शामिल करने का प्रयास करते हैं।

यह स्पष्ट है कि आय और धन की असमानता को कम करने के लिए बी.ए. प्राप्त या बिना बी.ए. वाले लोगों के मध्य की आर्थिक खाई को कम करना होगा। लेकिन यह कम स्पष्ट है और शायद अधिक महत्वपूर्ण कि उसी समय सामाजिक खाई को कैसे कम दिया जा सकेगा। हमारा कार्य तब, शिक्षा के विभाजनों के पार एक दूसरे का साथ देना और कॉलेज शिक्षित वाम और गैर–कॉलेज शिक्षित के मध्य सामाजिक नेटवर्क का निर्माण करना है ताकि इन नेटवर्कों को श्रमिक–वर्ग नेतृत्व के लिए उत्तरदायी संगठनों में परिवर्तित किया जा सके। हम यह कैसे कर सकते हैं ?

एक तरीका विश्वविद्यालयों तक पहुंच का विस्तार करना और कॉलेज शिक्षा की वित्तिय लागत और निजी लाभों दोनों को कम करना है। विश्वविद्यालय वामपंथ के लिए वह करता है जो सेना दक्षिणपंथ के लिए करती है। दक्षिणपंथ इस तथ्य को विश्वविद्यालय को कम फण्ड देने का एक कारण बनाता है। हमें इसे सभी के लिए निःशुल्क कॉलेज और उच्च शिक्षा एवं बुनियादी वैज्ञानिक शोध के लिए अधिक सार्वजनिक फंडिग की मांग का कारण बनाना चाहिए। कॉलेज शिक्षा का लाभ उसकी कमी पर निर्भर होता है, यह बी.ए. प्राप्त और बिना बी.ए. वाले लोागों के मध्य आर्थिक दूरी को कम करेगा। लेकिन कॉलेज प्रिमियम को सिकोड़ना और प्रवेश की लागत को कम करने से भी आबादी का एक बड़ा तबका छूट जायेगा जो कॉलेज जाना पसंद नहीं करेगा और शैक्षिक विभाजनों में संचार संबंधी दूरी बनी रहेगी।

जिसमें दूसरी रणनीति जिन लोगों की राजनीति हमारे करीब है उन के साथ छोटे मतभेदों पर बहस में कम ध्यान दे कर और जिनके विचार हमारे विचारों से काफी भिन्न दिखाई देते है उन लोगों की प्रतिबद्वताओं के अतिवादी निहितार्थों को उजागर करने पर अधिक ध्यान केन्द्रित कर अपने शब्दाडंबर को बदलने की हो सकती है। निश्चित रूप से व्यापक श्रोताओं के लिए हमारे विचारों को अधिक सुलभ और उपयोगी बनाने और सेवा एवं परोपकार के लिए आकर्षित करने वाली नैतिकता और राजनैतिक संलग्नता और चिंता के व्यापक क्षेत्र की और आकर्षित करने वाली नैतिकता के मध्य संबंधों को बताने के लिए एक भूमिका है। लेकिन व्यापक रूप से प्रचारित होने के बावजूद विचार हमें यहीं तक ले जा सकते हैं। बिना किसी सामाजिक नेटवर्क का हिस्सा बने हुए लोग विचार सुन सकते हैं या सूचना प्राप्त कर सकते है जो बातचीत और साझा किये गये संदर्भों में उन पर पुनः परिलक्षित होता है। सैंडर्स के संदेश पहुंच या अपील की कमी से पीड़ित नहीं है बल्कि, उन्होंने जड़े वहीं जमाई जहां अपने सदस्यता–आधारित नेटवर्कों में प्रवासियों, श्रमिकों और अप्रवासि श्रमिकों के संगठनों ने इन संदेशों को प्रतिध्वनित किया।

इस प्रकार पहली दो रणीतियों के कार्य करने की संभावना तभी है जब वे श्रमिक–वर्ग के संगठनों के निर्माण और उन्हें बनाये रखने में मदद करेगी। इस प्रयास में क्या कॉलज प्रशिक्षित वामपंथियों के लिए कोई भूमिका है? हम स्नातक और अनिश्चित शैक्षणिक के साथ–साथ तकनीकी और मीडिया कामगारों के श्रमसंघों का निर्माण कर सकते हैं जो श्रम आंदोलन में एकीकृत बुद्विजीवियों के धड़ों को पैदा करते हैं। दूसरा श्रम संघों और अन्य संगठनों द्वारा पाले गये ''घरेलू बुद्विजीवियों'' की सीमा और संख्या का विस्तार हो सकता है ताकि वे विश्वविद्यालय के बाहर पेशेगत दबावों और शैक्षणिक पाखंड से मुक्त बौद्विक जीवन व्यतीत कर सकते हैं। अतीत में, ऐसे बुद्विजीवियों का काम अक्सर महत्वपूर्ण रहा है लेकिन भविष्य में यह अधिकाधिक तकनीकी भी हो सकता है। कुछ कालेज में सीखे अभियांत्रिकी यंत्रों को अपने संगठनों के विधिक, तकनीकी और प्रशासनिक क्षमताओं को मजबूत करने में काम में ले सकते हैं। अन्य प्रयोगात्मक सामाजिक विज्ञान के साधनों को अभियानों को आयोजित करने में प्रयोग में ले सकते हैं वैसे ही जैसे एमआईटी की पोवर्टी एक्शन लैब उन्हें दानदाता प्रेरित विकास के लिए काम में लेती है। उदाहरण के लिए समकालीन संगठन द्वारा डाटा–संचालित संगठन हैं जिन्हें साफ्टवेयर ढांचा और विश्लेषण चाहिए जिसे आमतौर पर विशिष्ट कौशल वाले लोगों द्वारा निर्मित और निष्पादित किया जाता है। इस प्रकार के कार्य को आंदोलन विधिज्ञ पर मॉडल किया जा सकता है जिसका मुख्य नियम कॉलेज प्रशिक्षित वामपंथियों को गैर–संस्तुति व्यक्तियों द्वारा संचालित संगठनों में कार्य पर लगाना है।

कालेज प्रशिक्षित वामपंथियों के लिए अपने वर्गीय हितों के आगे जाने के लिए इन तीनों रणनीतियों के संभावित मिश्रण की आवश्यकता हैः कालेज तक पहुंच बढाने के लिए लड़ना, विविध पृष्ठभूमियों के प्रति अधिक समावेशी होने के लिए वामपंथ के शब्दभंडार और संस्कृति को बदलना (शायद आपसी सम्मान के पारदर्शी मानदंडों को लागू कर) और कामगार–वर्ग के अमरीकीयों के प्रति वास्तव में जवाबदेह संगठनों के लिए बुनियादी, सरकारी और दानदाता–प्रेरित स्थानों को छोड़ना। ■

सभी पत्राचार किस्टोफर मुलर को <cmuller@berkeley.edu> पर
सुरेश नायडू को <suresh.naidu@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> यू.एस.ए. में प्रजनन न्याय का भविष्य

पेट्रिशिया जेवला, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सान्ता कूज, यू.एस.ए. द्वारा

गर्भपात पर निषेध ओर प्रतिबंधों का विरोध करने ओर नकारने के लिए ट्रम्प प्रशासन के दौरान संपूर्ण अमेरिका में हुई रैलियों में से एक रैली। श्रेयः पिलकर। कुछ अधिकार सुरक्षित।

महिलाओं के प्रजनन व्यवहार की निगरानी करने और नियंत्रण करने वाले प्रजनन शासन के प्रयास ट्रम्प की नीतियों के केन्द्र में थे। उनके आधार, विशेष रूप से ईवैन्जेलिक्लस, को शांत करने के लिए गर्भपात–विरोधी बयानबाजी द्वारा मजबूत किया गया था। प्रजनन न्याय पर हमलों ने अप्रवासियों पर समानांतर हमलों के साथ राजनैतिक और वैचारिक नींव साझा की। ट्रम्प ने आव्रजन को राष्ट्रीय सुरक्षा, अर्थव्यवस्था और अमेरिका की पहचान के लिए खतरा बताते हुए और ''अयोग्य'' के आव्रजन को प्रतिबंधित करने वाली नीतियों और विमर्श को लागू कर, विधिक हिंसा के अभूतपूर्व एजेंडे को आगे बढाया हैं

प्रजनन और आव्रजन नीतियां इस तथ्य से जुड़ी थी कि अश्वेत महिलाएं दोनों का मुख्य निशाना थी। ट्रम्प के कोविड–19 महामारी के कुप्रबंधन के परिणामस्वरूप होने वाली बड़ी संख्या की मौतें भी समान पैटर्न पर सही बैठती हैं। अश्वेत और अप्रवासी लोग, जिनके पास जोखिम भरी फ्रंटलाइन नौकरियों में कार्य करने और भीड़भाड़ वाले आवासों में रहने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं था, वे इस महामारी को नियंत्रित करने की विफलता में गैरअनुपातिक रूप से शिकार हुए थे।

प्रजनन न्याय पर हमले का एक मुख्य तत्व अफोर्डेबल केयर एक्ट (एसीए) जिसमें निरोधक देखरेख, जिसमें गर्भनिरोधकों, कैंसर स्क्रीनिंग और प्रसवपूर्व देखभाल सम्मिलित थे, द्वारा महिलाओं की प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच को विस्तृत किया था, के प्रयासों को कम करने का प्रयास था। जहां ट्रम्प अफोर्डेबल केयर एक्ट को रद्द कराने में सफल नहीं हुए, महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य देखभाल के अधिकार को बाधित करने के उनके कई प्रयास सफल रहे। उनके प्रशासन की सफलताओं में टाइटल X जो अमरीका और विदेशों में 43 मिलियन कम आय वाली महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करता है, की फंडिग रोकना सम्मिलित था। उसने किशोर गर्भावस्था की रोकथाम की फंडिग को सीधे ऐसे कार्यक्रमों में प्रदान किया जो अप्रभावी केवल–संयम निर्देश का उपयोग करते हैं। उसने स्वास्थ्य कर्मियों को एल.जी.बी.टी.क्यू. मरीजों के खिलाफ भेदभाव करने की अनुमति दी और लगभग 200 निचली अदालतों के न्यायधीशों और तीन सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को नियुक्त किया जो गर्भपात तक महिलाओं की पहुंच को खतरे में डाल देंगे।

अश्वेत अप्रवासियों पर हमला करने के प्रशासन के समानांतर प्रयासों ने चिंताजनक सफलता प्राप्त की। आव्रजन पर ट्रम्प के अप्रत्याशित प्रतिबंधात्मक एजेंडे ने लातीनी लोगों को आंतकित किया और जिसमें 400 से अधिक नीतिगत परिवर्तन सम्मिलित थेः इसने मुख्य रूप से मुस्लिम राष्ट्रों के लोगों की यात्रा पर प्रतिबंध लगाया, 1980 के बाद से शरणार्थी प्रवेश को न्यूनतम किया, दस देशों से 4,00,000 प्रवासियों के लिए अस्थाई संरक्षित स्थिति को समाप्त कर दिया, कानूनन स्थायी निवास या नागरिकता के लिए योग्यता को अधिक कठिन बना दिया, आधिकारिक सीमा पर प्रवेश के अतिरिक्त प्रवासयिों को शरण के लिए आवेदन करने से रोका, शरण के आधार के रूप में हिंसा (घरेलू और गैंग) को हटाया, ''मीटर्ड'' आश्रय याचिकाकर्ताओं को अधिकारिक सीमा पर प्रवेश के अलावा जब तक बुलाया न जाये, मेक्सिकों मे रहने के लिए मजबूर किया और अप्रवासियों के लिए फूड स्टैम्प जैसे लाभों के लिए अर्हता प्राप्त करने की क्षमता को सीमित करने वाले नियमों को विस्तारित किया। ''शून्य–सहिष्णुता'' नीति के तहत ट्रम्प प्रशासन ने हजारों बच्चों को उनके माता–पिता से अलग किया, निरोध की शर्तों की अनुमति दी जिसने विशेष रूप से नाबालिगों और ट्रांस प्रवासियों की उपेक्षा, दुर्व्यहार और मौतों को अग्रेषित किया और प्रवासियों को निर्वासित किया जिसने कोविड–19 और अन्य जानलेवा जोखिमों से उन्हें दिखाया। अप्रवासी महिलाओं को जबरन नसबंदी और हिरासत में

> >

गर्भपात को अपराधिक मानने वाली नौकरशाही प्रथाओं का सामना करना पड़ा।

कम आय वाली महिलाओं और विशेष रूप से अश्वेत महिलाओं के लिए, प्रजनन विरोधी न्याय और अप्रवासी विरोध नीतियों के मिश्रण के विनाशकारी प्रभाव थे। इन नीतियों ने राज्यों को गर्भपात अधिकारों के प्रति शत्रुतापूर्ण अधिकार दिया है जहां दस में से छः अमेरीकी महिलाएं रहती हैं। अश्वेत और स्वदेशी महिलाओं के लिए बढ़ती मातृत्व मृत्युदर प्रजनन न्याय पर हमलों के प्रभावों का एक विशेष रूप से परेशान मेट्रिक थी। इसी समय, अनाधिकृत महिलाएं बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं जैसे पूर्व–प्रसव देखभाल या गर्भनिरोधक और फूड स्टैम्प जैसे सार्वजनिक लाभों की मांग करने में डरती हैं जबकि एलजीबीटीक्यू लोग स्वास्थ्य देखभाल विन्यास में भेदभाव का सामना करते हैं।

महिलाओं, विशेष कर अश्वेत महिलाओं, ने इन हमलों का विरोध किया है। उन्होंने ट्रम्प के सबसे कमजोर को निशाना बनाने के बहु आयामी एजेंडे के खिलाफ आंदोलन किया है। पक्षसमर्थन समूहों की विस्तृत श्रंखला, जो अक्सर गठबंधन में कार्य करते हैं ने प्रतिगामी नीतियों और प्रथाओं को चुनौती दी और सभी के यौन और प्रजनन स्वास्थ्य और अधिकारों की पुनर्स्थापना और संरक्षण के लिए प्रगतिशील विधानों के लिए प्रयास किया। वाशिंगटन में नये प्रशासन के सत्ता में आ जाने के बाद भी ये गठबंधन जारी रहेंगे। वे ट्रम्प की पहलों के खिलाफ लड़ने वाली उसी दृढता से लंबे समय से चल रहे अन्याय के निवारण के लिए बाइडेन प्रशासन पर निगरानी करने और दबाव डालने की योजना बना रहे हैं।

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों से प्राप्त संकेतों कि एसीए को शायद रद्द नहीं किया जायेगा, बाइडेन प्रशासन को गर्भनिरोधी कवरेज गारंटी में खामियों को बंद करने, भेदभाव–विरोधी संरक्षण को बहाल करने, एलजीबीटीक्यू रोगियो की देखभाल करने से इंकार करने वाले नियम को बदलने, टाइटल X प्रोग्राम को ठीक करने जिसमें नाटकीय रूप से फंडिग बढाने के साथ, केवल–संयम किशोर गर्भावस्था की रोकथाम के कार्यक्रमों को हटाना और एलजीबीटीक्यू समावेशिता का प्रोत्साहन करने के लिए अवश्य काम करना चाहिए।

बाइडेन प्रशासन को गर्भपात–विरोधी हिंसा की निंदा करनी चाहिए और संघीय प्रोग्राम द्वारा स्वास्थ्य कवरेज प्राप्त करने वाले लाखों लोगों के गर्भपात के बीमा कवरेज पर प्रतिबंध लगाने वाले हाइड संशोधन को मजबूत करने वाले कार्यकारी आदेश को रद्द करके गर्भपात कानून और पहुंच के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करना चाहिए। बाइडेन को हाइड संशोधन को उलटने वाले और मेडिकएड को विस्तृत करने वाले कानून का समर्थन करना चाहिए। उन्हें टेली–स्वास्थ्य का विस्तार करना चाहिए और खाद्य और औषधि प्रशासनिक प्रतिबंधों को संशोधित करना चाहिए जो प्रदर्शित रूप से सुरक्षित चिकित्सीय गर्भपातों तक पहुंच सीमित करते हैं। नस्लवाद की एक सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट के रूप में घोषणा स्वास्थ्य देखभाल पहुंच और स्वस्थ जीवन/काम करने की स्थितियों के बारे में राजनीति के लिए एक नया तान स्थापित करेंगी।

आव्रजन मोर्चे पर बाइडेन ने ट्रम्प की कई नीतियों को उलटने के संकेत दिये। एलेजांद्रो मयोरकास, जिसने डैफर्ड एक्शन फॉर चाइल्डहुड अराइवल्स प्रोग्राम के क्रियान्वयन का नेतृत्व दिया था, की होमलैंड सिक्योरिटी विभाग के मुखिया के रूप में नियुक्ति और हिरासत सुविधा को बंद करना विधिक हिंसा और अज्ञातजनभीति के उलटने का संकेत देती है। हालांकि संक्रमण टीम में सिसिलिया मुनोज की नियुक्ति चिंताजनक है क्योंकि उन्होंने ओबामा प्रशासन में परिवारों को अलग करने का समर्थन किया था। बाइडेन के लिए पारिवारिक विलगाव को अंत करने और आश्रय चाहने वालों के लिए सीमा, को फिर से खालने के लिए उनके महाधिवक्ता को न्यायिक विभाग के उन निर्णयों को उलटना होगा जो आव्रजन न्यायाधीशों की स्वतंत्रता को सीमित करते हैं। आव्रजन मामलों के बैकलॉग को समाप्त करने के लिए अतिरिक्त न्यायाधीशों की नियुक्ति भी अप्रवासियों को न्याय प्रदान करने का एक अनिवार्य हिस्सा है। जिस तरह प्रजनन न्याय और अप्रवासियों पर समानांतर हमले हुए, अप्रवासी– समर्थक नीतियां प्रजनन न्याय का समर्थन करेगी। एक आव्रजन–हितैषी प्रशासन, संबद्धता की उनकी भावना को बढाते हुए, अप्रवासी महिलाओं की प्रजनन स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं और सार्वजनिक लाभों तक पहुंच को सुगम बनायेगा। दोनों मोर्चों पर सफलता बुनियादी रूप से उन्हीं सामाजिक आंदोलनों पर निर्भर करेगी जिन्होंने ट्रम्प का विरोध किया।

प्रजनन न्याय को समर्पित सामाजिक आंदोलन का नेतृत्व सीमांत लोग–अप्रवासी, निर्धन, एलजीबीटीक्यू लोग, युवा, विकलांग आदि की ओर काम कर रही अश्वेत महिलाएं कर रही है। परस्परछेदन और मानवाधिकार को संगठित करने वाले समग्र ढांचे के साथ कार्य करते हुए, यह आंदोलन संरचनात्मक परिवर्तनों की वकालत करता हैं जो यौन और प्रजनन अधिकारों को उन नीतियों के साथ जोड़ता है जो कम आय वाले लोगों के द्वारा अनुभव की गई सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय विषमताओं को कम करती हैं। प्रजनन न्याय आदोलन का मिशन महिलाओं का बिना किसी दबाव या हिंसा/उत्पीड़न के बच्चों को पैदा करने का अधिकार को, बिना किसी बाधा या राय के गर्भ को समाप्त करने और अपने बच्चों की स्वस्थ वातावरण में परवरिश के साथ–साथ शारीरिक स्वायत्तता और लैंगिक स्व–पहचान के अधिकार को प्रोत्साहित करना है। 1990 के दशक से 30 से अधिक अलाभकारी संगठनों में कार्य करते हुए, यह आंदोलन जमीनी स्तर पर राजनीतिक रूप से सामाजीकृत एवं लामबंद करने के लिए भी कार्य करता है। यह संस्कृति–परिवर्तन के कार्य जो सकारात्मक सांस्कृतिक प्रतिनिधानों द्वारा उग्र मुद्दों को पुनः आकारित करता है और धर्मनिरपेक्ष आध्यात्मिक परम्पराओं का मान रखता है। संगठन प्राथमिक अनुसंधान करते है। महिलाओं को शिक्षित और सशक्त बनाने वाले लक्षित अभियान विकसित करते है, मुकदमें लाते हैं, प्रगतिशील कानून पारित करते है और संयुक्त राष्ट्र हमें अपने निष्कर्ष पेश कते हैं और उन्हें उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई है। प्रजनन न्याय संगठन प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं को प्रदान करने वाले और प्रजनन एवं नागरिक अधिकारों के लिए नीति वकालत पर काम करने वालों के साथ गठबंधन में कार्य करते है।

भले ही उनका ध्यान प्रजनन न्याय, अप्रवासी अधिकार, एलजीबीटीक्यू अधिकार या महिला अधिकार पर हो, कार्यकर्ता यौन और प्रजनन अधिकारों की ओर से बाइडेन को ठेलते रहेंगे। भविष्य संघर्ष का है। ■

सभी पत्राचार पेट्रिसिया जेवला को <zavella@ucsc.edu> पर प्रेषित करें।

> जलवायु न्याय के लिए लड़ाई और बाइडेन–हैरिस प्रशासन

जे. मिजिन चा, ओक्सिडेंडल कॉलेज, यू.एस.ए. द्वारा

जलवायु संकट को सम्बोधित करने की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित करने वाला एक भित्तिचित्र। श्रेयः फ्लिकर। कुछ अधिकार सुरक्षित।

दूसरा ट्रम्प प्रशासन भयावह जलवायु परिवर्तन की गारण्टी दे सकता था, लेकिन बाइडेन–हैरिस प्रशासन के अंतर्गत ग्रीन न्यू डील जैसी लामबंदी के लिए कम ही संभावनाएं दिखाई देती हैं। यह स्पष्ट है कि निर्वाचित राष्ट्रपति बाइडेन की जलवायु कार्यवाही के लिए प्रतिबद्धता पूर्व के किसी प्रशासन से कहीं अधिक आक्रामक है। लेकिन इसमें न्यू ग्रीन डील (जीएनडी) की दृष्टि और महत्वाकांक्षा गायब हैं। यहां यह कहना उचित होगा कि एक संभावित बैरी सीनेट के साथ झगड़ा नये प्रशासन को गंभीर रूप से सीमित करेगा। यदि एक संघीय जीएनडी की संभावनाएं अविश्वसनीय लगती हैं, तो फिर प्रश्न यह उठता है कि क्या राज्य और स्थानीय प्रयास एक न्यायोचित और मंद–कार्बन संक्रमण को प्राप्त करने के लिए आवश्यक पैमाने तक पहुंच सकते हैं? राज्य–स्तरीय जलवायु पहले एक न्यायोचित मंद–कार्बन संक्रमण के लिए मार्ग प्रदान कर सकती हैं लेकिन यह तभी हो सकता है जब सामाजिक और आर्थिक न्याय चिंताएं जलवायु नीति के साथ एकीकृत हों।

यद्यपि बलात् सरकारी नियंत्रण के रूप में रूढिवादियों ने ग्रीन न्यू डील को हथियार बनाया, जीएनडी कानून का एक विस्तृत, आदेशात्मक अनुच्छेद नहीं है। बल्कि, यह एक गैर–बाध्यकारी प्रस्ताव है जो संघीय सरकारों को एक महत्वाकांक्षी कीनेसियन कार्यक्रम को अपनाने का आह्वान करता है, जो दस वर्षीय समय रेखा में असमानता और जलवायु परितर्वन के दोहरे संकट को सम्बोधित करता है। दस वर्ष की समय रेखा विशेषज्ञ सर्वसम्मति के साथ संरेखित होती है कि जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों को दूर करने के लिए 2029 तक ग्रीन हाउस गैसों में नाटकीय रूप से कटौती होनी चाहिए। यह समझते हुए कि जलवायु परिवर्तन और असमानता जुड़े हुए है, जीएनडी की दृष्टि उत्सर्जन कटौती के संकीर्ण तकनीकी फ्रेमवर्क के आगे विस्तृत होती है। लोगों की भौतिक परिस्थितियों को समझने और सम्बोधित करने से जलवायु परिवर्तन को एक अलग और विशिष्ट चुनौती के रूप में देखने की बजाय उसे सामाजिक और आर्थिक विवेचन के साथ एकीकृत करता है।

जलवायु परिवर्तन के समर्थन के लिए सामाजिक और आर्थिक विवेचन का एकीकरण एक अति–आवश्यक घटनाक्रम है। तकनकी समाधानों जैसे कि पिछले मायोपिक कार्बन टैक्स या एक कैप–एंड–ट्रेड प्रोग्राम पर फोकस के परे जाते हुए, राजनैतिक स्पेक्ट्रम के पार जलवायु अधिवक्ता सामाजिक और आर्थिक चिंताओं को जलवायु नीति के साथ एकीकृत करने वाले तीन मार्गदर्शक सिद्वांतों पर मोटे तौर पर मिलते हैं। ''मानक, निवेश और न्याय'' के रूप में संदर्भित, जलवायु वकालत के विभिन्न प्रयासों के मध्य समान धागा शून्य या नेट–जीरो उत्सर्जन, मंद कार्बन क्षेत्रों एवं बुनियादी ढांचे में वृहद'–स्तरीय सार्वजनिक निवेश और सामाजिक एवं आर्थिक न्याय चिंताओं के लिए आह्वान है। इसमें अच्छे, श्रम संघ रोजगार निर्मित करना, श्रमिकों एवं समुदायों को परिवर्तित करना, और जलवायु परितर्वन के प्रभावों से सबसे पहले और सबसे बुरी तरह से प्रभावित होने वाले सीमान्त समुदायों की रक्षा करना सम्मिलित है।

> >

यह देखते हुए कि निर्वाचित–राष्ट्रपति बाइडेन ने जलवायु परिवर्तन को संक्रमणकालीन प्राथमिकता मुद्दों के रूप में घोषित किया है और उन्होंने जलवायु परिवर्तन के लिए एक राष्ट्रपति दूत नियुक्त किया है, यह विश्वास करने योग्य है कि जलवायु परिवर्तन वास्तव में नये बाइडेन'–हैरिस प्रशासन के लिए एक प्राथमिकता है। हालांकि, जहां जलवायु परिवर्तन में विश्वास रखने वाले प्रशासन होना एक राहत की भावना है, न्यायोचित मंदं–कार्बन संक्रमण के लिए लड़ाई कई मायनों में अधिक कठिन हो जाती है क्योंकि सामाजिक एवं आर्थिक विवेचन जो एक ''न्यायोचित'' संक्रमण को सुनिश्चित करता है –राजनैतिक रूप से उदार प्रशासन और एक बैरी रिपब्लिकन सीनेट द्वारा हटाये जाने के लिए सबसे कमजोर हैं। प्रगतिशील मुद्दों पर उदारवादी डेमोक्रेट्स द्वारा चुनाव–पश्चात के तत्काल हमले जैसे सभी के लिए मेडिकेयर और पुलिस के कोष को कम करना, संकेत देते है कि नस्लीय और आर्थिक न्याय चिंताओं को बैरी सीनेट के माध्यम से आगे बढने के लिए आवश्यक मजबूत समर्थन नहीं मिलेगा।

न्यायोचित मंद–कार्बन भविष्य को सुनिश्चित करने वाली संघीय कार्यवाही की अनिश्चितता के साथ, ज्यादा से ज्यादा ध्यान एक न्यायाचित मंद–कार्बन संक्रमण की तरफ राज्य स्तरीय धक्के की और जाता है। वास्तव में, ट्रम्प प्रशासन से पहले भी, राज्य महत्वकांक्षी जलवायु नीतियों को लागू करने का मार्ग प्रशस्त कर रहे थे। हालांकि संघीय स्तर की तरह, क्या ये जलवायु नीतियां न्यायोचित हैं, नीति निर्माण और क्रियान्वयन पर निर्भर करेगा। जब केलिफोर्निया ने कैप–एण्ड ट्रेड कार्यक्रम अपनाया, पर्यावरणीय न्याय अधिवक्ताओं ने कार्यक्रम को रोकने के लिए मुकदमा किया क्योंकि कैप एण्ड ट्रेड का पर्यावरणीय न्याय समुदायों पर नकारात्मक प्रभाव होगा। मुकदमें अंततः असफल रहे और मुकदमा करने वाले संगठनों को पारंपरिक पर्यावरणीय संगठनों से काफी प्रतिघात मिला। कैप एण्ड ट्रेड प्रोग्राम के हालिया मूल्यांकन से पता चला कि पर्यावरणीय न्याय चिंताएं पुख्ता थी और कैप–एण्ड ट्रैड के क्रियान्वयन से कमजोर समुदायों में स्थानीय प्रदूषण बढ गया था। इसके अतिरिक्ति, केलिफोर्निया कैप एण्ड ट्रेड के प्रस्तावित लक्ष्यों के बावजूद, अपने ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कटौती के लक्ष्यों का पूरा करने के ट्रेक पर नहीं था।

इसके विपरीत, न्यू योर्क राज्य ने देश की सबसे महत्वाकांक्षी जलवायु नीति पारित की और इसकी सफलता के लिए व्यापक बहुल–मुद्दों का गठबंधन बुनियादी था जो इक्विटी प्रावधानों पर केन्द्रित था। केवल उत्सर्जन कटौती पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, क्लाइमेट लीडरशीप एण्ड कम्यूनिटी प्रोटेक्शन एक्ट कमजोर समुदायों में निवेश को प्राथमिकता देता है, और पूर्ण जलवायु अधिनियम एक साथी बिल के पारित होने पर निर्भर था जिसने अन्य प्रावधानों के मध्य एक स्थायी पर्यावरणीय न्याय सलाहकार बोर्ड का गठन किया। न्याय और जलवायु का जुड़ाव महत्वाकांक्षी और समानोचित जलवायु नीति में फला।

राज्य आधारित जलवायु रोजगार के प्रयास भी न्यायोचित कम–कार्बन संक्रमण के लिए मॉडल प्रदान करते हैं। इन प्रयासों के पीछे बुनियादी लोकाचार यह है कि असमानता और जलवायु के दोहरे संकट को एक साथ संबोधित करना चाहिए। जीवाश्म ईंधन रोजगार जो उच्च भुगतान वाले और अधिक संभावना वाले संयोजन होते है, को कम–वेतन वाले, निम्न–गुणवत्ता वाले अक्षय उर्जा रोजगार के साथ प्रतिस्थापित करने से ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में कमी आ सकती है। लेकिन यह सिर्फ एक न्यायोचित संक्रमण नहीं है। कामगार और समुदायों को समर्थन देने में पिछले बदलावों जैसे कि वि–औद्योगीकरण की विफलता जीवाश्म ईंधन कामगारों को एक और जबरदस्ती के बदलाव के प्रति अधिक प्रतिरोधी बनाती है। लेबर लीडिंग ऑन क्लाइमेट और क्लाइमेट जाब्स नेशनल रिसोर्स सेंटर जैसे राज्य स्तरीय पहलें राज्य और स्थानीय श्रम संघों को कामगार–समर्थक, जलवायु–समर्थक नीतियों को आगे बढाने में संलग्न करती है जो बेहतर रोजगार सृजन को उत्सर्जन कटौती के साथ जोड़ती हैं। ये प्रयास विशेष रूप से श्रम संघों की राजनैतिक शक्ति का दोहन करने में प्रभावी है, जैसाकि क्लाइमेट जाब्स न्यू योर्क की सफलताओं से स्पष्ट है, जिसमें 40,000 जलवायु रोजगार सृजन करने के लिए 1.5 बिलियन डॉलर का संकल्प सम्मिलित है।

बाइडेन–हैरिस प्रशासन में समानता और न्याय प्रावधानों के एक तरफ धकेले जाने के लिए जोखिम के साथ, राज्य स्तरीय प्रयासों को एक न्यायोचित बदलाव को अग्रेषित करने के लिए मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। जीवाश्म ईंधन से दूर बदलाव के पैमाने और गुंजाइश को देखते हुए अंततः जलवायु संकट को सम्बोधित करने के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों की आवश्यकता होती है। हालांकि, जलवायु नीति उत्सर्जन कटौती से आर्थिक और सामाजिक विवेचन को अलग नहीं कर सकती है। राज्य स्तरीय प्रयास एक न्यायोचित बदलाव की तरफ कैसे बढ सकते हैं के बारे में रोडमैप प्रदान कर सकते है और असमानता, सामाजिक अन्याय और जलवायु के एकीकरण को और पक्का कर सकते हैं। ■

सभी पत्राचार जे. मिजिन चा को <mcha@oxy.edu> पर प्रेषित करें।

> कटटरपंथी क्षतिपूर्ति

मार्कस एंथोनी हंटर, यूसीएलए, यूएसए द्वारा

चार सौ वर्षों, चार हजार महीनों, और दो सौ मिलियन मिनटों से अधिक, संयुक्त राज्य अमेरिका दासता के साथ और दासता के पाप के साथ जी रहा है। जैसा कि कई सक्रियकर्त्ताओं ने दर्शाया है, उन्मूलित लेकिन फिर भी एक रूप में या अन्य में जीवित, दासता बनी हुई है और एक अनुपचारित वायरस की तरह टिकी हुई है, लगातार फैल रही है और संक्रमित कर रही है। ऐसा उसके बाद हो रहा है जब कई लोगों ने यह दावा किया उसकी मृत्यु तब हो गई थी जब अब्राहम लिंकन के दासत्व–मुक्ति घोषणा की स्याही सूखी थी। जेल औद्योगिक परिसर से टस्केगी प्रयोग तक, चेन गैग्स तक, अपराध, निर्धनता और ड्रग्स पर युद्व तक, अश्वेत लोगों का जीवन, उसी सरकार जिसने दासता की संस्था और प्रथा का उन्मूलन किया था, से आघातयोग्य और असुरक्षित रहता है।

अमेरिकी दासता और लालच, नस्लवाद, बलात्कार और औपनिवेशवाद से जन्में यूरोपीय दास व्यापार ने सुनिश्चित किया कि अश्वेत लोगों की मानवता को बदनाम किया गया, उल्लंघन किया गया और विकृत किया गया। अफ्रीका और पश्चिम अफ्रीका के बंदरगाहों से सैंकड़ों हजारों अश्वेत लोगों को क्रूर मध्य मार्ग द्वारा अटलांटिक महासागर के पार अमेरिका और कैरिबियन में स्वदेशी लोगों द्वारा कब्जा की गई भूमि के पार ले जाया गया। वे मार्ग में, या वैश्विक दक्षिण के खेतों में या वैश्विक उत्तर के तहखानों में मर गये। कई लोग कम आयु में मरें लेकिन इससे पहले नहीं कि वे दास अश्वेत लोगों की अगली पीढी को जन्म न दे पायें।

अश्वेत दासों के मालिक थे, उनके शरीर और परिवार उनसे ले लिये गये थे, दैन्य जीवन के मामले में उनकी आत्माएं तबाह हो गई थीं। पूरे समय उनके श्रम की मांग की गई और वह निशुल्क प्रदान किया गया। यह नस्लीय इतिहास है और मानवीय उल्लंघन और पीड़ा का सच जो हमें विरासत में मिला है। जैसा कि विरासत के साथ होता है, हमें उत्तरदायित्व भी मिले है जिसमें कुछ ऋणों की क्षतिपूर्ति है या प्रायश्चित है। ये संचित और आग्राही उल्लंघन, चोटें और क्षतिपूर्ति जिन्हें आमतौर पर प्रायश्चित कहा जाता है, अमुक्त और असम्बद्व ही रहते हैं। अंतरिम में, अश्वेत लोगों को प्रभावी तौर पर बहुत कम राज्य समर्थन के साथ अपने हाल पर छोड़ दिया गया है, हालांकि उन्हें गहन रूप से जड अश्वेत–विरोधी राज्य निगरानी के अधीन रखा गया है।

लगभग आधी सहस्त्राब्दी पश्चात ऐसा प्रतीत होगा कि प्रभावित नागरिकों और उनके परिवारों को हुई हानि की गणना करना और उनका भुगतान करना कठिन होगा। किसे भुगतान मिलेगा? कैसे भुगतान होगा? उन्हें भुगतान क्यों दिया जा रहा है? यदि सभी दास मालिक काफी पहले मर गये थे, तब हम किसे और किस पक्ष को जिम्मेदार ठहराते हैं? ये वे प्रश्न है जिन्होंने क्षतिपूर्ति बहस और 1865 के बाद से संयुक्त राज्य अमेरिका में सुधार को कार्यान्वित करने और प्रभावी बनाने के प्रयासों को सजीव किया है।

हाल के वर्षों में, राजनैतिक स्पेक्ट्रम के पार क्षतिपूर्ति के ठोस मामले तैयार किये गये हैं। चाहे उनके रूढिवादी या प्रगतिशील समर्थक हों, लगभग प्रत्येक मामले में क्षतिपूर्ति को गलती से पैसे के साथ जोड़ा गया है। धन–आधारित या आर्थिक क्षतिपूर्ति महत्वपूर्ण है, यद्यपि वे उन सभी को पूरी तरह से संबोधित नही कर सकते जो सुधार के कुछ दिखावे तक पहुंचने के लिए आवश्यक है। आर्थिक क्षतिपूर्ति फ्रेमवर्क के निरंतर और बार–बार जोर देने के माध्यम से हमें यह विश्वास दिलाया जाता हैं कि दासता द्वारा उत्पादित मृत्यु और तबाही को नीति निर्माताओं, शोधार्थियों और वादियों के द्वारा निश्चित अंकों का इंतजार कर रहे खाली चेक के द्वारा पूरा किया जा सकता है। लेकिन क्या आत्माओं, जीवन और मानव शरीर की एक निश्चित बाजार दर हैं, एक पर्याप्त मौद्रिक आंकलन कि यदि भुगतान किया जाये तो सभी सम्मिलित पार्टियां पूर्ण होती है ? क्या मानव जीवन का मूल्य केवल डॉलर और सेन्टस है? इन प्रश्नों के मुख्य उत्तरों के लिए इस विश्वास के प्रति पक्की मजबूत निष्ठा चाहिए कि अश्वेत लोगों की मानवता मूल्यवान है और यह मूल्य से परे है। अतः, यह आवश्यक है कि इन सब के प्रकाश में जो मिलना चाहिए था, हम क्षतिपूर्ति को पूर्ण रूप से पुनः आकारित करें: सच्ची लागत और ऋण को सरलता से मुद्रीकृत नहीं किया जा सकता है।

यदि हमें संयुक्त राज्य अमेरिका को एक अधिक स्वतंत्र, सुरक्षित और अधिक न्यायोचित समाज में बदलना है तो हमें अनसुलझे एवं सामूहिक नस्लीय इतिहास और आघात का सामना करना होगा और उसे ठीक होना होगा। सुलह करने के लिए ऋणों के ढेर हैं। शयन और निवारण के लिए ढेरों उल्लंघन है। सुलझाने के लिए नस्लीय समानता और नस्लीय निष्पक्षता के कई अनसुलझे मुद्दों के ढेर हैं।

ये ढेर अब तक की अदृश्य और सख्त जरूरत वाली वैश्विक एवं राष्ट्रीय उपचार एवं पुनर्निर्माण के लिए सात प्रकार के क्षतिपूर्ति पर चिंतन करते हैं :

- **राजनैतिक क्षतिपूर्ति:** ऐतिहासिक रूप से समूचित पुष्टिकर एवं क्षतिपूर्ति वकालत जो सरकार एवं राजनैतिक प्रतिनिधित्व और भागीदारी को रूपांतरित करें।
- **बौद्विक क्षतिपूर्ति:** पूर्व में दास लोगों और उनके वंशजों की कृतियों, आविष्कारों और विचारों का उद्देश्पूर्ण और सार्वजनिक मान्यता और स्वीकार्यता

>>

"यदि हमें संयुक्त राज्य अमेरिका को एक अधिक स्वतंत्र, सुरक्षित और अधिक न्यायोचित समाज में बदलना है तो हमें अनसुलझे एवं सामूहिक नस्लीय इतिहास और आघात का सामना करना होगा और उसे ठीक होना होगा।"

- **विधिक क्षतिपूर्ति:** विधि एवं नीतियों में दृढ न्याय और नस्लीय निष्पक्षता की स्थापना और मान्यता प्रदान करना।

- **आर्थिक क्षतिपूर्ति:** वित्तीय और मौद्रिक सहायता, अनुदान, बहाली और ऋण राहत।

- **सामाजिक क्षतिपूर्ति:** नस्लीय और नृजातीय पदानुक्रमण पर आधारित मानसिकता और नस्लवाद को समाप्त करने के लिए सामाजिक अनुबंध की बहाली और सुधार ताकि मानवों की गरिमा की पुष्टि की जा सके।

- **स्थानिक क्षतिपूर्ति:** अमेरिकी दासता से विस्थापित और बेदखल लोग और उनके वंशजों के लिए विशेष रूप से सामाजिक–आर्थिक एवं राजनैतिक अवसरों की पुनर्स्थापनात्मक और पुनरावर्ती भूगोल

- **आध्यात्मिक क्षतिपूर्ति:** दास व्यापार और अमेरिकी दासता के त्रिकोण में लुप्त और नुकसान खाने वाली धार्मिक और आध्यात्मिक ब्रहांण्ड विज्ञान, प्रथाएं और विश्वास का उद्देशपूर्ण और जानबूझकर मान्यता, प्रतिनिधित्व और पुनः बहाली

क्षतिपूर्ति के ये सातों स्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका और विदेशों में नस्लीय असमानता को समाप्त करने और दासता, दास व्यापार, दासता पर आधाारित वैश्विक अर्थव्यवस्था और विविध और विकृत मानसिकताएं जिन्हें उन्होंने अधिकृत किया है और परिचालित किया है, के पापों और दृढता से ठीक होने की खोज में केन्द्रीय होने चाहिए। अश्वेत लोगों ने दासता को कमाया नहीं था। कोई इंसान आमनवीयता के इतने क्रूर शासन में रहने का हकदार नहीं है। अपने स्वदेशी और मूल अमेरिकी समकक्षों के साथ अश्वेत लोगों ने वैश्विक, संघीय, प्रादेशिक और स्थानीय सरकारी निकायों एवं एजेंसियों जिन्होनें सदियों से पराधान लेते हुए उन्हें विफल किया, से हालांकि राहत, सुधार और प्रतिदाय अर्जित किया है।

इस महत्वपूर्ण बदलाव को प्राप्त करने के लिए सच, नस्लीय उपचार और रूपांतरण अभिन्न है। ऐसा मार्ग अफ्रीकी अमेरिकी के लिए मौजूदा आह्वान के साथ संगत और पूरक भी है जो कि लंबे समय से राजमाता ऑडले मूर और पूर्व कांग्रेसी जॉन कान्यर्स द्व ारा मांगा जा रहा था। अब यह कांग्रेसी शीला जैक्सन ली द्वारा प्रस्तावित H.R.40, एक बिल जो अफ्रीकी–अमेरिकी अधिनियम के लिए क्षतिपूर्ति प्रस्तावों का अध्ययन और उन्हें विकसित करने लिए आयोग स्थापित करेगा, को आगे बढाया। महासभा की सदस्या बारबरा ली और सीनेटर कोरी बुकर के नेतृत्व में, वर्तमान में एक राष्ट्रीय ट्रूथ, रेशियल हीलिंग एवं ट्रांस्फोर्मेशन (TRHT) कमीशन की स्थापना के लिए न्यौता है जिसे मैं धारणीय, राष्टीय, स्थानीय और क्षेत्रीय आरकाइव्स फॉर रेशियल एण्ड कल्चरल होलिंग (ARCH) के लिए आवश्यक के रूप में देखता हूँ।

संयुक्त राज्य अमेरिका को नस्लीय निष्पक्षता और नस्लीय उपचार को प्राप्त करने के लिए इस ऐतिहासिक अवसर को पकड़ लेना चाहिए। इससे हमारा समाज इतना रूपांतरित हो जायेगा कि वहां मानव पदानुक्रम की झूठी धारणा अंत में विस्मृत हो जायेगी। यदि इस प्रोजक्ट को एक विधिक कार्यवाही के साथ कार्यकारी कार्यवाही के रूप में गंभीरता से लिया जायेगा, विशेष रूप से नये बाइडेन–हैरिस प्रशासन में, संयुक्त राज्य अमेरिका वैश्विक मंच पर एक हठी उदाहरण के रूप में उभर सकता है कि सच को स्वीकार करना और संग्रहित करने से और अर्थपूर्ण नस्लीय उपचार प्राप्त करने से कैसे रूपांतरित अमेरिका निर्मित किया जा सकता है, जहां सभी लोगों के साथ उचित व्यवहार हो, सार्थक पहुंच प्रदान हो, और उन्हें प्रथम श्रेणी की नागरिकता मिले ताकि भावी हानि को रोका जा सके। यदि हम जानबूझकर और तत्परता के साथ सामूहिक रूप से समर्पित सार्वजनिक–निजी वित्त पोषण प्रयासों नस्लीय और सांस्कृतिक उपचार के लिए राष्ट्रीय एवं स्थानीय अभिलेखागार, ज्ब्ज् आयोगों को स्थापित करें और क्रियान्वयन योग्य और लक्षित क्षतिपूर्ति नीतियों को लागू करें, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि जो अमानवीयकरण यूरोपीय दास व्यापार ने हमें विरासत में दिया था, अंततः खत्म हो जायेगा और हम एक नई शुरूआत कर सकते हैं जिसके हम हकदार है। नस्लीय उपचार, रूपांतरण और हमारी पारस्परिक और भावी समृद्वि की कुंजी सच्चाई है। ■

सभी पत्राचार मार्कस एंथोनी हंटर को <hunter@soc.ucla.edu> पर प्रेषित करें।

> यूरोप में चीनी लोगों का बदलता स्थान

फैनी बैक, सेंट्रल यूरोपियन विश्वविद्यालय, हंगरी और **पॉल न्यीरी**, व्रिजे विश्वविद्यालय, एम्सटर्डम, नीदरलैंडस् द्वारा

सन् 1998 में, यूरोप में चीनी लोगों पर एक संपादित अंक ने यूरोप में चीनी लोगों के जातीय आव्रजन की कई क्रमिक लहरों की पहचान की: बींसवी सदी के प्रारम्भ में झेजियांग प्रांत से छोटे व्यापारी; बींसवीं सदी के मध्य में हांगकांग और आसपास के क्षेत्रों से औपनिवेशिक प्रवासी; वियतनाम युद्ध और वि–औपनिवेशीकरण के बाद दक्षिण–पूर्व एशिया से उत्तर–औपनिवेशिक प्रवासी; और 1980 के दशक में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) के दुनिया के लिये वापिस खुलने के बाद इसके व्यापारी और श्रमिक प्रवासी। इन लहरों ने समूहों के मध्य कम संचार के साथ लेकिन विभिन्न देशों के पार व्यापक संबंधों वाले विशिष्ट सामाजिक–भाषायी समूहों का निर्माण किया । बींसवी सदी के अंत तक इन समूहों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत निम्न बनी रही, यद्यपि यह उत्तर–पश्चिमी यूरोप, जहां वे ज्यादातर भोजन के व्यवसाय में लगे थे; दक्षिणी यूरोप, जहां वे कपडों के छोटे कारखानों में काम करते थे; और पूर्वी यूरोप, जहां वे बाजार और छोटी दुकानों में उपभोक्ता वस्तुओं का आयात कर विक्रय करते थे; के बीच काफी भिन्न थी।

नयी सदी में, यूरोप में नृजातीय चीनी लोगों की सामाजिक–जनसांख्यिकीय संरचना और सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति आधारभूत बदलावों से गुजरी है। यह संगोष्ठी इनमें से कुछ को संबोधित करती है। प्रारम्भ में, एक नयी, स्थानीय–जनित चीनी व्यक्तियों की अधिकतर उर्ध्वकार रूप से गतिशील पीढी इस समय परिपक्व हो गयी है। यह पीढी, जैसा कि चुआंग, ला बेल, और ट्रान प्रलेखित करते हैं, भेदभाव के प्रति अधिक संवेदनशील है और उदारवादी नस्लवाद–विरोधी संभाषणों के प्रति ग्राहय है। परंतु यह अपनी कैरियर महत्वाकांक्षाओं को यूरोप में विकास की धीमी गति के द्वारा निराशा में पाते हैं जबकि चीन में अवसर बुलाते हैं। कई बार यह चीन की ओर प्रवास में, परंतु अधिकांशतः एक अधिक सतत पारदेशीय जीवन क्रम में परिणित होता है। जबकि पूर्व में यूरोप की ओर प्रवास को चीन में सामाजिक गतिशीलता के लिये एक शॉर्टकट के रूप देखा जाता था, इन कदमों की दिशात्मकता आज अधिक जटिल है।

वैश्विक राजनैतिक अर्थव्यवस्था में नाटकीय बदलाव चीन से यूरोप की ओर नये प्रवास की प्रकृति में भी परिलक्षित होता है। ये अब छोटे व्यापारियों और शारीरिक श्रमिकों द्वारा हावी नहीं है – चीनी स्वामित्व वाले भोजनालयों और दुकानों में ऐसे पद अधिकाधिक अन्य प्रवासी समूहों द्वारा लिये जा रहे हैं – हालांकि दक्षिणपूर्वी यूरोप में चीनी–वित्तपोषित बुनियादी ढांचा परियोजनाओं से जुडा हुआ राज्य–निर्देशित श्रमिक प्रवास का एक नया रूप उभर रहा है। इसके बजाय, छात्र, पीआरसी पूंजी के विदेशी विस्तार के साथ प्रवासी प्रबंधक, और मध्यमवर्गीय जीवनशैली प्रवासी इन प्रवाहों में अधिक से अधिक केंद्रीय स्थान ले रहे हैं, जैसा कि थोगरसेन एव बैक, कन्हिर, और स्जाबो के आलेखों में प्रलेखित किया गया है। इसके परिणामस्वरूप, यूरोप में चीनीयों के मध्य पहले के सामाजिक–भाषीय विभाजन जटिल हैं और वर्ग स्तरीकरण के द्वारा ऊपर से अधिलेखित है।

यूरोपीय समाजों में चीनी लोगों की स्थिति न सिर्फ "एकीकरण" और दूसरी और तीसरी पीढी के दावा करने और नये प्रवासियों की उच्च सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के कारण बदल रही है। अपितु यह बदलती भूराजनीति के कारण भी है, जिसमें चीन ईर्ष्या और डर दोनों का विषय है। जैसे कि यूरोपियन संघ और चीन के बीच रिश्तों में द्वेष बढ़ने से, चीनी सरकार यूरोप में नृजातीय चीनी लोंगों तक पहुचने के लिये अधिक सक्रिय हो रही है जो उनकी ओर से संभावित पैरवी करने वाले हैं। ऐसे प्रयास नये नहीं हैं, परंतु ये यूरोप में चीनी सोशल मीडिया की नयी उपस्थिति के द्वारा प्रवर्धित होते हैं और कोरोनावायरस महामारी से लडने में चीन की प्रतीत सफलता के द्वारा और अधिक प्रभावी हैं। जैसा कि डेंग का आलेख दर्शाता है, इसका एक प्रभाव बढता हुआ राष्ट्रीय आत्मविश्वास है जो चीनी लोगों को उन्हें लगातार हाशिये पर रखने वाले नृजातीय पदानुक्रमों के तर्क पर प्रश्न उठाने के लिए प्रेरित करता है। उसी समय, उन यूरोपीय राज्यों (सर्बिया और हंगरी) में, जो चीन के साथ मैत्रीपूण संबंधों को बढावा देते हैं, यह स्पष्ट नहीं होता है कि स्थानीय चीनी लोगों को उससे प्रत्यक्ष लाभ होता है (ग्लेडिक और बैक कन्हिर और स्जाबो के आलेखों को देखें)।

कोरोना वायरस महामारी ने यूरोप में चीनीयों की बदलती स्थिति को तेज राहत में डाल दिया है। कुछ को चीन की फेस–मास्क कूटनीति में सहारे के रूप में कार्य करने के लिये बुलाया गया था। कई ने मौखिक और शारीरिक दुर्व्यवहार का सामना किया क्योंकि पहले के सुप्त नस्लवादी या विदेशियों के प्रति विकर्षण के दृष्टिकोण को "एक चीनी वायरस" के नाम पर उच्च राजनीतिक संदेह के साथ एक निकास मिल गया। महामारी की लहर में परिवर्तन के साथ ही चीन में सुरक्षा ढूढं रहे व्यक्तियों को एक अनिच्छुक सरकार, जिसने लौटने की इच्छा रखने वालों पर बढती वित्तीय बाधायें डाल दी और एक संदेही जनसंख्या, जिसने उन्हें ना सिर्फ दूषित बल्कि निष्ठाहीन होने का दोषी माना, मिली। परंतु, जैसा कि बोफूलिन ने दर्शाया, इस पारदेशीय गतिशीलता, जो कि यूरोप में चीनी लोंगों के मध्य बहुत ही

>>

सामान्य है, ने भी साथी चीनी प्रवासियों के बीच संदेह और परस्पर दोषारोपण को पैदा किया, जो संक्रमण को फैलाने के लिये जिम्मेदार दोषियों पर उंगली उठाने के लिये उत्सुक थे।

आज, इस तरह की दहशत सोशल मीडिया के द्वारा बढाई गयी है। यदि, 1990 के दशक के उत्तरार्ध में, यूरोप में चीनी मीडिया में विभिन्न राजनीतिक रूझानों का अनुसरण करने वाले स्थानीय अखबार और अनुभवहीन सैटेलाइट टेलीविजन शामिल थे, आज इसमें चीन–आधारित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों जैसे कि 'वीचैट' का प्रभुत्व है, जो उस सेंसरशिप के अधीन है जो वैकल्पिक दृष्टिकोंणों का दमन करते हुए चीनी सरकार के पसंदीदा विचारों और लोकप्रिय राष्ट्रवाद को प्रसारित करती है। यह ऑनलाइन क्षेत्र एक गतिशीलताकरण उपकरण के रूप में आवश्यक है, परंतु यह अन्य प्लेटफॉर्मों जैसे फेसबुक और ट्विटर के साथ सह–अस्तित्व में है जो यूरोपीय जनमत को जोडने के काम के लिये उपयोग किये जाते हैं। जबकि फ्रांस में स्थानीय रूप से जन्मे चीनी कार्यकर्ताओं, जो कि *ब्लैक लाइव्ज मैटर* आंदोलन से ट्रिगर हुए नस्लवाद पर बढते ध्यान से प्रेरित होकर, फेसबुक का उपयोग अन्य अल्पसंख्यकों के बीच सहयोगियों की तलाश करने के लिये करते हैं। इटली के चीनी उद्यमी इटली में अपने स्वयं के नस्लीय पदानुक्रम बनाते हैं, और हंगरी में मध्यमवर्गीय चीनी लोगों ने श्वेत यूरोप के पुनरूत्थान के आदर्श पर कुंडी लगा ली है। यह, वहां की सरकार द्वारा प्रचारित हैं, और वीचैट के द्वारा प्रसारित लोकप्रिय नस्लीय सिद्धांतों में प्रतिध्वनित होता है। यदि नस्लीयता–विरोधी, संभ्रांत–विरोधी एकजुटता के लिये अपील करके पहले के लोग भेदभाव का विरोध करते है, बाद के लोग ऐसा नस्लीय और वर्ग–व्यवस्था के नाम पर करते हैं जिसका शिखर यूरोपीय और एशियाई संभ्रांतों के द्वारा साझा किया जाता है।

यूरोप के चीनी लोगों को चिन्हित करने वाली बदलती आंतरिक और बाह्य सीमाओं और पदानुक्रमों की पहचान और विश्लेषण करने के लिये, इस संगोष्ठी[1] के योगदानकर्ता अपने अध्ययनों को उन वास्तविक स्थानों, बोर्डिंग विद्यालयों से लेकर मदिरालय तक, पर आधारित करतें हैं जिनमें अंतर–नस्लीय संबंध आकार लेतें हैं। ■

सभी पत्राचार फैनी बैक को <Beck_Fanni@phd.ceu.edu> पर और
पॉल न्यीरी को <p.d.nyiri@vu.nl> पर प्रेषित करें।

1. इस संगोष्ठी का विचार "Interethnic relations: Chinese migrants and their European host societies" पर आयोजित कार्यशाला से आया। यह कार्यशाला China in Europe Research Network - CHERN द्वारा बुडापोस्ट में 16 अक्टूबर 2020 को आयोजित की गई एंव इसे COST Association द्वारा फंड किया गया था।

> चुप्पी से क्रिया तक: फ्रांस मे चीनी लोग

हां–हांन चुआंग, इंस्टीटयूट नेशनल डेइटयूडस डेमाग्राफिक्स (आई.एन.ई.डी.), फ्रांस, **एमिली ट्रान**, हांगकांग बैप्टिस्ट यूनिवर्सिटी, और **हेलेन ला बेल**, सी.एन.आर.एस., सी.ई.आर.आइ.–साइंसेज पो पेरिस, फ्रांस द्वारा

एशियाई विरोधी नस्लीय अन्याय के खिलाफ पेरिस में फ्रांस में जन्मे एशियाई प्रदर्शन करते हुए। श्रेयः केमिले मिलरेन्द।

ब्रिटेन और नीदरलैंडस जैसे अन्य पश्चिमी देशों के समान, फ्रांस में चीनी समुदायों का इतिहास बींसवी सदी के प्रारम्भ से है। चीनी लोगों की प्रारंभिक उपस्थिति तीन प्रमुख कारकों से जुडी हुई हैः औपनिवेशीकरण, प्रथम विश्व युद्ध के दौरान चीनी श्रमिकों की भर्ती, और अंतरयुद्ध काल में छात्रों का पड़ाव। इस प्रारंभिक गतिशीलता का हाल की प्रवास की लहरों पर प्रभाव पडाः 1978 के बाद पूर्व के प्रवासी नेटवर्कों के नवीनीकरण के कारण, झेजियांग प्रांत में वानजाउ आजकल चीनी प्रवासियों और फ्रांस में उनके वंशजों की उत्पत्ति का प्रमुख स्थान है। इसके अलावा, फ्रांसीसी औपनिवेशीकरण की विरासतों में से एक दक्षिणपूर्वी एशिया के विदेशी चीनी लोगों की उपस्थिति है जो कंबोडिया, वियतनाम और लाओस से 1970 और 1980 के दशक में शरणार्थियों की तरह पहुंचे थे। सदी के परिवर्तन के बाद से, फ्रांस में नृजातीय चीनी आबादी का संघटन उत्पत्ति के स्थान, प्रवासी मार्गों और वर्ग के संदर्भ में अधिक विविध हो गया है। फ्रांस उत्तरी चीन से प्रवासियों की बडी संख्या के लिये गंतव्यस्थल बन गया है, विशेषकर उन स्थानों से जहां 1990 के दशक में एक नियोजित अर्थव्यवस्था से एक बाजार अर्थव्यवस्था में बदलने के कारण बडे पैमाने पर छंटनी हुई थी। आमतौर पर, यूरोपीय संघ में प्रवेश के लिये छात्र वीजा एक प्रमुख कानूनी माध्यम बना हुआ है। फ्रांस में, चीनी विदेशी–अध्ययन छात्र मोरक्को के बाद विदेशी छात्रों (9%) का दूसरा सबसे बडा समूह है।

फ्रांस में यूरोप में सबसे बडी प्रवासी चीनी आबादियों में से एक है (लगभग 400,000 चीनी प्रवासी और वंशज पर अनुमानित, यद्यपि फ्रांस के पास कोई आधिकारिक नृजातीय आंकडे नहीं हैं); निवासी विदेशियों के बीच, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पी.आर.सी.) से नागरिक पांचवे सबसे बडा समूह है। न केवल वे शिक्षा, रोजगार, और आर्थिक स्थिति (अमीर निवेशक, पारदेशीय व्यापारी, पेशेवरों, विद्यार्थियों, उद्यमियों, और श्रमिकों) के संदर्भ में विविध हैं, बल्कि पीढीयों, गतिशीलता, और फ्रांसीसी समाज में भागीदारिता के स्तर के संदर्भ में भी विविध हैं। इस विविधता के विपरीत कुछ साझा विशेषतायें हैं, जैसे कि प्रवासी उद्यमी क्षेत्र के अंदर दक्षिणपूर्वी एशिया से नृजातीय चीनी लोगों और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (मुख्यत वानजाउ) से प्रवासीयों के मध्य सहयोग, और, हाल ही में, दैनिक नस्लवाद और सुरक्षा मुददों की निंदा करने के लिये सामूहिक कार्यवाहियों का उदय।

> नस्लवाद के खिलाफ सामूहिक कार्यवाही

पेरिस और इसके उपनगरों में चीनी समुदाय चोरी और छोटे अपराधों का शिकार होते रहें हैं। बहुजातीय सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित आसपास के इलाकों में चीनी व्यापारों और भव्य विवाह दावतों सहित समारोहों के संकेद्रण के कारण–चीनी लोगों

> >

को न सिर्फ अमीर समझा जाता है– हमला होने और लुट जाने के बाद पुलिस की मदद लेने की अनिच्छा के कारण वे और अधिक असुरक्षित हैं। बिना दस्तावेज वाले प्रवासियों और छोटे उद्यमियों के लिये समान रूप से, फ्रांसीसी राजनीति के प्रति उदासीनता और अनिश्चित प्रस्थिति ने उन्हें ऐतिहासिक रूप से लामबंदी में संलग्न होने के प्रति अनिच्छुक बना दिया था।

हालांकि, पिछले दशक में, बढती सुरक्षा चिंताओं और घटनाओं के मध्य, पेरिस में चीनी समुदाय, जिसे कभी मूक और यहां तक कि मेहनती, और निम्न प्रोफाइल रखने वाले एक मॉडल अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में जाना जाता था, ने पुलिस सुरक्षा की मांग करने के लिये कम से कम पांच बडे प्रदर्शनों का आयोजन किया है। कई बार उन्हें "विदेश में नागरिकों की सुरक्षा" के आधार पर चीनी दूतावास द्वारा सहयोग प्रदान किया गया। चीनी सरकार द्वारा 2012 से इस प्रकार का समर्थन को, जहाँ भी उसके नागरिकों के हित दांव पर हैं, अपनी शक्ति के प्रदर्शन करने के एक तरीके के रूप में किया गया।

सामूहिक कार्यवाहियों के पांच उदाहरण लामबंदी के प्रारूपों में भिन्न हैं: तीन बडे पैमाने के सडक प्रदर्शन थे; एक उद्यमियों का संघ जो एक (असफल) दवाब समूह में परिवर्तित हो गया; और अंतिम सडक दंगों और शांतिपूर्ण रैलियों का एक संयोजन था। लामबंदिया आमतौर पर एक विशिष्ट इलाके में चीनी निवासियों और व्यापारियों द्वारा अनुभव की गयी सुरक्षा की कमी को उजागर करने के लिये की गयी, और कुछ आम मांगें की गयीः इलाके में पुलिस गश्तों की संख्या बढाना; कानूनी अपराधियों के लिये सजा मजबूत करना; और चीनी पीडितों द्वारा पुलिस में शिकायत दर्ज करने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाना।

पेरिस के उपनगर में चीनी श्रमिक की हत्या के बाद हुए 2016 के सडक प्रदर्शनों ने एक महत्वपूर्ण मोड को चिन्हित किया, जिसमें दूसरी पीढी एक अधिक सक्रिय भूमिका में आई। फ्रांस में जन्मे नृजातीय चीनी लोंगो ने उस संरचनात्मक नस्लवाद पर जोर देने के दावों को पुनर्गठित किया जो नृजातीय चीनी और अन्य एशियाई लोगों के खिलाफ हिंसा को रेंखाकित करते हैं। चीनी सक्रियता और अखिल एशियाई सामाजिक आंदोलनों का एक लंबे समय तक उत्तरी अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में अध्ययन किया जाता रहाहै,यूरोप में यह शोध एक नया केंद्र बिंदु है। फ्रांस के मामले में, हम फ्रेंच–चीनी लोगों के द्वारा शुरू की गयी तीन मुख्य प्रकार की कार्यवाहियों को रेंखांकित कर सकते है। ये सभी रूढिवादी निरूपण ाों और मान्यता की तलाश से संबंधित हैं: (1) सामूहिक स्मृति का संग्रह और प्रसारण; (2) लक्षित हिंसा के खिलाफ लामबंदी;और (3) एशियाइयों के रूढिवादी निरूपणों को खत्म करने के लिये सांस्कृतिक सक्रियता और इन निरूपणों को संशोधित करना।

स्थानीय रूप से जन्मे फ्रांसीसी चीनी लोगों की हाल की कार्यवाहियों को समझने के लिये, 2000 के दशक में वापिस जाना आवश्यक है, जब ऑनलाइन सामाजिक नेटवर्किंग का प्रसार शुरू हुआ जिसने व्यक्तिगत अनुभवों की सामूहिक अनुभवों में बदलने के लिये एक स्थान प्रदान किया। विशेष रूप से, सामान्य सूक्ष्म आक्रामकताओं और नस्लवादी अपमानों के अप्रत्यक्ष रूपों के अनुभवों के बारे में बहुत कुछ साझा किया गया। फ्रांसीसी चीनी लोगों ने फोरम और चर्चा समूह बनाना शुरू किया–प्रमुखतः फेसबुक पर और बाद में वीचैट और ट्विटर पर– जहां वे मुख्य रूप से फ्रांसीसी भाषा में, कभी–कभी चीनी और अन्य एशियाई भाषाओं के साथ मिश्रित रूप से अपने अनुभव साझा कर सकते थे।

2016 के बाद विकसित हुई "सांस्कृतिक सक्रियता" ने भी मुख्यतः ऑनलाइन उपकरणों जैसे कि छोटे विडियो, ब्लॉग, यूट्यूब चैनलों, वेब सीरीजों, और पॉडकास्ट का उपयोग किया, जिसने कलात्मक और मीडिया क्षेत्रों के फ्रांस मे जन्में एशियाई लोंगों के बीच भिंडतों के लिय नये अवसर दिये। 2016 से, कई ने सामूहिक पहचान के निर्माण और फ्रांस में एशियाइ–विरोधी नस्लवाद के खिलाफ वकालत करने मे योगदान दिया है। कुछ ने अपने कार्यों को अन्य अल्पसंख्यकों के दावों के साथ जोडने की कोशिश करते हुये (जैसे कि ग्रेस ली का पॉडकास्ट, किफे टा रेस, जिसे प्रसिद्ध अफ्रीकी नारीवादी रोख्या डियालो के साथ बनाया गया; या ब्लैक लाइव्ज मैटर विरोधों में एशियाई फ्रेंच की भागीदारी) अंतर–नृजातीय तनावों को बेअसर करने की कोशिश करते हैं। अन्य लैंगिक मुददों के साथ स्वजातीय–नस्लीय मुद्दोंः एशियाई महिलाओं के कामोत्तेजीकरण का विसंबंधन करना और साथ ही एशियाई पुरूषों का विलैगिंकीकरण करना, को जोड़ते हैं।

2020 में, कोविड–19 ने चीन को अंतर्राष्ट्रीय सार्वजनिक कूटनीति अभियान के मंचन के लिये एक अनूठा अवसर प्रदान किया, जिसने विदेशों में चीनी लोंगों के समर्थन के साथ ''वास्तविक चीनी कहानी'' को बताने के लिए लामबंद किया। यह अभी देखना बाकी है कि कोविड–19 के प्रकोप से उभरे एशियाई–विरोधी नस्लवाद के खिलाफ चीनी जातीय सक्रियता की हालिया लहर का लाभ उठाने के लिए पीआरसी क्या और किस हद तक प्रयास करती है। इससे भी अधिक यह दिलचस्प होगा कि पहली, दूसरी और तीसरी पीढी के नृजातीय चीनी मातृभूमि की पारदेशीय पहुंच और लामबंदी प्रयासों पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। ■

सभी पत्राचार हां–हांन चुआंग को <ya-han.chuang@ined.fr> पर
एमिली ट्रान को <emilietran@hkbu.edu.hk> पर और
हेलेन ला बेल को <helene.lebail@sciencespo.fr> पर प्रेषित करें।

> यूरोप में चीनी छात्र

स्टिग थोगरसेन, आरहुस विश्वविद्यालय, डेनमार्क द्वारा

यूरोप के एक परिसर में चीनी छात्र। श्रेय: क्रिएटिव कामन्स

सन् 1978 में डेंग शियोपिंग ने घोषणा की कि चीन प्रत्येक वर्ष 3,000 से 4,000 छात्रों को विदेश भेजेगा ताकि देश का वैज्ञानिक पृथक्करण टूट सके और उसकी आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तेज किया जा सके। उस समय उनकी योजना महत्वाकांक्षी लग रही थी लेकिन वे शायद ही यह कल्पना कर सकते थे कि उन्होंने किस सैलाब को प्रारम्भ कर दिया। आज चीन अंतर्राष्ट्रीय रूप से गतिशील छात्रों का सबसे बड़ा स्त्रोत है। यूनेस्को के आंकड़ों के अनुसार, लगभग एक मिलियन चीनी छात्र विदेशों में तृतीयक शिक्षण संस्थानों में नामांकित हैं। कई विश्वविद्यालयों के लिए उनकी टयूशन फीस आय का एक बड़ा स्त्रोत है और वे दुनिया भर में चीनी लोगों की उपस्थिति का एक सांकेतिक घटक बन गये हैं।

यूरोपीय देश इस भारी पलायन से अपना हिस्सा प्राप्त कर रहे हैं। यू.के. इसमें 1,07,000 से अधिक छात्रों के साथ सबसे बड़ी संख्या की मेजबानी करता है, जो वैश्विक स्तर पर केवल अमेरिका और आस्ट्रेलिया द्वारा पार किया गया है। यह देखते हुए कि चीनी शिक्षण व्यवस्था में अंग्रेजी प्रमुख विदेशी भाषा है, यह आश्चर्यजनक नहीं है। उच्च रैंक विश्वविद्यालयों वाले अन्य बड़े यूरोपीय देश भी काफी बड़ी संख्या को आकर्षित करते हैं जैसे 30,000 से अधिक छात्रों के साथ जर्मनी, लगभग 24,000 के साथ फ्रांस, और 15,000 से अधिक के साथ इटली। स्वीडन, आयरलैंड, हंगरी और स्विटजरलैंड जैसे छोटे यूरोपीय देश भी अब लगभग 200 चीनी छात्रों की मेजबानी करते हैं। मुख्य यूरोपीय सरकारों से छात्रवृत्ति, अमेरिका और यूके की तुलना में कम टयूशन फीस, और शेंगेन वीजा पर कई देशों के छात्रों को आकर्षित करने में भूमिका निभाते है। कई लोग यूरोपीय संस्कृति से भी आकर्षित होते है और विशेष रूप से फ्रांस और इटली को आकर्षक जीवन शैली के साथ एक रूमानी स्थान के रूप में देखते है।

> हाल के दशकों में छात्रों की बदलती प्रोफाइल

1978 में माओं के पश्चात छात्रों के यूरोप आने के बाद से बहुत सी चीजे बदल गई है। सबसे पहले जो चीनी राज्य द्वारा सावधानी–पूर्वक नियंत्रित किये गये एक रणनीतिक चाल के रूप में प्रारम्भ हुआ, अब प्रमुख रूप से छात्रों और उनके परिवारों की वैयक्तिक आकांक्षाओं से प्रेरित है। इनमें से 90 प्रतिशत चीनी अंतर्राष्ट्रीय छात्र स्व–वित्त पोषित है। इसने अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के लिए एक अत्यधिक व्यवसायिक बाजार तैयार किया है जहां कई कारक छात्रों की गंतव्य स्थान के चयन को प्रभावित करते है: विश्वविद्यालयों की रैंकिंग और प्रतिष्ठा, टयूशन फीस और रहने के खर्च की राशि, मेजबान देश से ग्रांट मिलने की संभावना, सामाजिक सुरक्षा का काल्पनिक स्तर, और मेजबान देश की सामान्य प्रतिष्ठा सभी मिलकर एक जटिल खेल में भूमिका निभाते हैं जहां चीनी निजी शैक्षिक एजेंट छात्रों और उनके परिवारों को कठिन निर्णयों और अक्सर जटिल नामांकन और वीजा आवेदन प्रक्रियाओं के बारे में मार्गदर्शन प्रदान कर एक लाभदायक व्यवसाय का निर्माण करते हैं।

दूसरा, विदेश में अध्ययन करना अब चीनी छात्रों की सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं है। वर्ष 2000 तक अधिकांश छात्रों के लिए विकसित देशों में लचीली नागरिकता उच्चतम लक्ष्य के रूप में थी, लेकिन आज कई लोग चीन के शीर्ष विश्वविद्यालयों में से किसी में प्रवेश लेने को अधिक आकर्षक मानते हैं। एक विदेशी डिग्री के साथ जुड़ी सामाजिक प्रतिष्ठा काफी गिर गई है, जब तक कि वह प्रसिद्ध ब्रांड

> >

नाम के शीर्ष विश्वविद्यालय से नहीं हो और विदेशी ''डिप्लोमा मिलों'' और कम गुणवत्ता वाले कार्यक्रमों के बारे में चीनी मीडिया में कई खबरे हैं। हालांकि चीनी उच्च शिक्षण व्यवस्था अत्यधिक स्तरीकृत है जिसमें प्रवेश काफी डरावनी एक राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा, गओकाओ द्वारा नियंत्रित होते है। इस तरह दूसरी या तीसरे दर्जे के चीनी विश्वविद्यालय, जो क्षीण कैरियर संभावनाओं को पेश कर सकते हैं, में जाने के बजाय कई मध्यम–वर्ग छात्र एवं उनके परिवार अभी भी विदेश में शिक्षण अवसरों की तलाश करेंगे।

तीसरा, जहां छात्रों द्वारा विदेशों में अध्ययन को पहले एक अधिक स्थायी प्रवासन प्रक्रिया के लिए प्राकृतिक प्रारंभिक बिंदु के रूप में देखा जाता था, अब इसे अक्सर घरेलू कैरियर में एक कदम के रूप में देखा जाता है। 1980 के दशक के दौरान और विशेष रूप से जून 1989 में लोकतंत्र आंदोलन के दमन के परिणामस्वरूप, विदेशी डिप्लोमा धारी कुछ युवा चीनी घर लौटने पर विचार कर सकते थे। यूरोपीयन रोजगार बाजार में सिकुड़न, चीन में वेतन और कैरियर अवसरों में वृद्वि और स्नातक होने के बाद वीसा प्रवास को प्रोत्साहित करने वाली चीनी राज्य नीतियों की एक श्रंखला के कारण यह इक्कीसवीं सदी में नाटकीय रूप से बदल गया है। यद्यपि चीनी राज्य अब इस बारे में विस्तृत योजना नहीं बनाते हैं कि विदेश में किसको क्या अध्ययन करना चाहिए, वे अभी भी राष्ट्रीय विकास को प्रोत्साहित करने के लिए ब्रेन–संचरण पर निर्भर रहते है। अंत में, चीनी शैक्षिक प्रवासी पहले की तुलना में अब काफी युवा है। परास्नातक छात्र स्नातक छात्रों से कहीं अधिक है और कई परिवार अपने बच्चों को विदेशी विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए सांस्कृतिक और शैक्षणिक रूप से तैयार करने लिए हाई स्कूल में भी विदेश भेजते है।

चीनी शैक्षिक प्रवासियों पर अधिकांश प्रांरभिक शोध ने उन समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित किया जिनका सामना उनके पश्चिमी शिक्षकों को करना पड़ा। शिक्षकों ने शिकायत की कि वे कक्षा में बहुत चुप रहते थे, एक साथ नस्लीय झुंड में चिपके रहते थे और शिक्षा के प्रति उनका साधन रवैया था। कोई शक नहीं कि ये समस्याएं अभी भी महसूस की जाती है। लेकिन हालिया शोध छात्रों के अनुभवों को अधिक व्यापक प्रकाश में दिखाता है। चीनी समाज के बढते हुए व्यक्तिगतकरण की पृष्ठभूमि में, यह स्पष्ट हो गया है कि छात्र विदशों में अपनी पढाई को ''पहचान परिवर्तन और रूपातंरण की भावनात्मक यात्रा'' के रूप में देखते है। यह व्यक्तिगत परिपक्वता का जीवन बदल देने वाला अनुभव है जो उनके क्षितीज को व्यापक करेगा और उन्हें न केवल पेशेवर रूप से बल्कि समकालीन दुनिया के नागरिकों के रूप में भी अधिक सक्षम बनायेगा। अपने पश्चिमी समकालीन लोगों की तरह, युवा चीनी विदेशी संस्कृतियों में गहन अध्ययन के लिए व्यापक यात्राओं के साथ अपनी पढाई को जोड़ते है और भिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में जीवित रहने और पनपने की अपनी क्षमता का परीक्षण करते हैं। इसका अर्थ यह भी है कि जहां कई छात्र अभी भी ''हार्ड'' विज्ञान और व्यावसायिक अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित करते है। अब हम अधिक छात्रों को ''साफ्टर'' सामाजिक विज्ञान और मानविकी प्रोग्राम में पाठयक्रमों में प्रवेश करते हुए देखते है। हम अच्छी तरह से जानते है कि वे आवश्यक रूप से चीनी या यूरोपीय रोजगार बाजार में सुरक्षित पद की तरफ नहीं ले जाते है।

कई शैक्षिणक प्रवासियों ने यूरोप में चीनी आबादी की संरचना को बदल दिया है, लेकिन हम अपेक्षाकृत बहुत कम जानते हैं कि चीनी प्रवासियों के साथ छात्र कैसे अंतक्रिया करते हैं। एक फ्रेंच शोध दिखाता है कि जहां छात्रों ने आपस में मजबूत सह–राष्ट्रीय संबंध बनाये हैं, स्थापित चीनी समुदायों के साथ अंतक्रिया बहुत सीमित थी। हालांकि यूके शहर का एक अध्ययन अधिक अंतक्रिया दिखाता है और चीनी प्रवास के आगे और विकास के लिए चीनी विश्वविद्यालयों के छात्रों के संभावित महत्व को दर्शाता है।

यूरोपीय विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेने वाले चीनी छात्रों की संख्या दशकों से लगातार बढ रही है लेकिन दो हालिया रूझान भवष्यि को कम पूर्वानुमेय छोड़ते है। 2020 महामारी ने अधिकांश शैक्षिक आदान–प्रदानों को अस्थायी रूप से ब्लॉक कर दिया है और ये शायद 2021 में भी ऐसा ही करेंगे। क्योंकि चीन लंबे समय तक यूरोप को वायरस के हॉट–स्पॉट के रूप में देखेगा। इसके अलावा, पश्चिम और चीन के मध्य बढते हुए तनावपूर्ण सम्बंधों ने यूरोप में चीन का नकरात्मक दृष्टिकोण और संभावित सुरक्षा जोखिम के रूप में चीनी छात्रों की धारणाओं को बढावा मिला है। इस तरह से, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति यूरोप और चीन के मध्य भावी शैक्षिक आप्रवास को प्रभावित कर सकती है।■

सभी पत्राचार स्टिग थोगरसेन को <stig.thogersen@cas.au.dk> पर प्रेषित करें।

> बुडापेस्ट में ''गोल्डन वीसा'' वाले चीनी प्रवासी

फेन्नी बेक, सेन्ट्रल यूरोपियन यनिवर्सिटी, हंगरी, **एस्ज्तर कन्हियार,** इओटोवस यूनिवर्सिटी, हंगरी एवं **लिंडा स्जाबो,** पेरिफेरिया पोलिसी एण्ड रिसर्च सेन्टर, हंगरी द्वारा

वैश्विक पूंजीवाद में चीन की बदलती स्थिति और इसके सामाजिक संरचनाओं के पुनर्निर्माण के साथ, शहरी मध्य–एवं उच्चवर्गीय परिवारों की एक बढती संख्या विश्व के कुछ चुनिंदा देशों की तरफ प्रवास कर रही है। सर्वेक्षण दर्शाते हैं कि ''धनाढय पलायन'' उत्तर–भौतिकवादी चिंताओं से प्रेरित है न कि और अधिक संचय की आकांक्षाओं से। वे निवास और नागरिकता बेच कर विदेशी पूंजी को आकर्षित करने के लिए देशों द्वारा शुरू किये गए ''गोल्डन वीजा'' कार्यक्रमों के लिए एक उभरते बाजार का गठन करते है। हाल के वर्षों में इनमें से कई चीनी ''गोल्डन वीसा प्रवासियों'' ने पूर्व एवं मध्य यूरोपीय देशों, का पक्ष लेना शुरू कर दिया है, जहां सरकारें सस्ती आव्रजन योजनाओं के साथ उनका स्वागत करने के लिए उत्सुक हैं।

> हंगरी का ''गोल्डन वीसा'' कार्यक्रम

हंगरी का गोल्डन वीसा कार्यक्रम इस नये उभरते बाजार को पूरा करने वाला एक सबसे स्वागत योग्य प्रस्तावों में से एक था: 2013 और 2017 के मध्य, जब यह कार्यक्रम लागू हुआ था तो हंगरी यूरोपीय संघ के अंतर्गत दूसरी कम खर्चीली योजना प्रदान करने में कामयाब रहा। उसने प्रक्रिया की सरलता और गति के संदर्भ में अपने सभी समकक्षों को पीछे छोड़ दिया। यह, और लगभग 2,50,000 यूरो (बाद में 3,00,000 यूरो) के साथ कमीशन फीस वाले राज्य बांड की खरीद के बाद और कोई शर्त नहीं, ने 19,000 आवेदकों को–जिनमें से 81 प्रतिशत चीन से थे–निवास परमिट प्राप्त करने की अनुमति दी। ''बिना बसावट के प्रवास'' के लिए विशेष रूप से डिजाइन किये गये जाने के बावजूद, हालांकि इस कार्यक्रम ने वास्तिवक आव्रजन के लिए इ.यू. के भीतर गतिशीलता बढाने को इच्छुक व्यवसायियों को लुभाने के बजाय उन परिवारों को आकर्षित किया जिन्होंने विदेश जाने के इस अवसर को प्रभावी रूप से पकड़ लिया। उन्होंने विशेष रूप से गैर–आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निवेश को एक साधन के रूप में काम में लिया: अच्छी तरह से विकसित बच्चों के लालन पालन हेतु एक स्वस्थ वातावरण।

हंगरी में ''गोल्डन वीसा'' चीनी प्रवासी महानगरीय चीन (मुख्य रूप से बीजिंग, शंघाई या ग्वांगझू से) से मध्यम वर्ग के परिवार है जो चीन से आय या प्रेषण पर भरोसा करते हैं। ज्यादातर दक्षिण–पूर्वी चीन से लघु पैमाने के व्यापारियों के विपरीत, जो अधिकांशतः आर्थिक संचय के उद्देश्य से 1990 के दशक के प्रारम्भ में हंगरी आए थे, ये परिवार एक पर्यावरणीय रूप से हरे, सांस्कृतिक रूप से समृद्व और नस्लीय श्वेत नगरीय परिवेश, जिसकी एक प्रमाणिक ''यूरोप'' के रूप में कल्पना की जाती है– वो भी रियायती मूल्यों पर, में आरामदायक जीवन शैली प्राप्त करने के लिए हंगरी प्रवास करते हैं।

हंगेरियन ''गोल्डन वीजा'' प्रोग्राम का प्रचार।
श्रेय: http://immigration-hungary.com/EN/

इन परिवारों का चीन को छोड़ने का फैसला और हंगरी का उनका चयन ''एकल संतान नीति'' के तहत सुधार युग के चीन में बालपन (एक विशेष रूप से ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक) के निर्माण में स्थिर है। जब 1970 के दशक के उतरार्ध में परिवार नियोजन कार्यक्रम पेश किया, एक तर्क यह था जनसंख्या की मात्रा में कमी से इसकी ''गुणवत्ता'' में सुधार होगा। इस प्रकार गुणवत्ता, मध्यम–वर्ग के माता–पिता, जो अपने इकलौते बच्चे के गुणों के स्तर को सबसे अधिक बढाने के लिए तत्पर थे, के लिए आसक्ति बन गई थी। अधिकारिक विमर्श के अनुसार एक व्यक्ति के शारीरिक, नैतिक और शैक्षिक गुण न सिर्फ वैयक्तिक प्रयास का विषय हैं, बल्कि पर्यावरणीय प्रभावों का भी परिणाम हैं। हालांकि ऐसे वातावरण की मध्यम वर्गीय माता–पिता की अपेक्षाएं, महानगरीय चीन क्या दे सकता था, के बहुत अधिक आगे थी।

> रियायत पर यूरोपीय घर

इस प्रकाश में, मध्यम–वर्गीय चीनी प्रवासियों द्वारा हंगरी को एक आदर्श गंतव्य स्थल माना गया है, जहां शारीरिक, सामाजिक और शैक्षिक माहौल संतोषजनक है और रहने की लागत वहनीय है। कई चीनी गोल्डन वीसा प्रवासियों का लक्ष्य एक अच्छी जगह पर स्थित उपयुक्त अचल सम्पति ढूंढना है जो एक अच्छे निवेश के अलावा, परिवार के लिए एक घर भी बन सकती है। एक आदर्श घर की प्रघटना ''निश्यात्मकता और बसने' की धारणा से और घर के स्वामित्व की धारणा से जुड़ी होती है। एक विरासत में मिलने वाले घर का मालिक होने की संभावना चीनी प्रवासियों को हंगरी में कम पूंजी खर्च में बेहतर गुणवत्ता वाले जीवन की स्थापना करने का

>>

"हंगरी के गोल्डन वीसा कार्यक्रम के शुरू होने के बाद से, गत वर्ष तक विदेशियों द्वारा बुडापेस्ट आवास सम्पत्ति अधिग्रहण में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी।"

मौका देती है। चीनी मेगासिटी में से एक में या समकालीन पूंजीवाद के वैश्विक या प्रवेश द्वार शहरों की बजाय ऐसा राजधानी बुडापेस्ट में अधिकाशं मामलों में होता है।

हंगरी के गोल्डन वीसा कार्यक्रम के शुरू होने के बाद से, गत वर्ष तक विदेशियों द्वारा बुडापेस्ट आवास सम्पत्ति अधिग्रहण में उल्लेखनीय वृद्वि हुई थी, आवास बाजार के सामान्य उछाल के बावजूद, विदेशी व्यक्तिगत निवेशकों के सबसे बड़ा समूह चीनी लोगों का था।

चीनी निवासियों के बीच, बुडापेस्ट रियल स्टेट से केवल गोल्डन वीजा प्रवासी ही आकर्षित नहीं थे। कई छोटे व्यापारी आवासीय निवेश की तरफ भी मुड़ गये। हमारा शोध यह सुझाव देता है कि यद्यपि सिटीसेंटर दोनों समूहों के मध्य लोकप्रिय था, छोटे व्यापारीयों की चीनी थोक और खुदरा बाजार के निकट या पेस्ट–साइड उपनगर के अधिक वहनीय इलाकों में सम्पत्ति क्रय करने की संभावना अधिक थी। गोल्डन वीजा प्रवासी नये आवासीय प्रोजेक्टों में, महंगे बुडा की तरफ पहाड़ी और हरे क्षेत्र में और बुडापेस्ट के महानगरीय क्षेत्र के पृथक घरों में अधिक रूचि दिखाते थे।

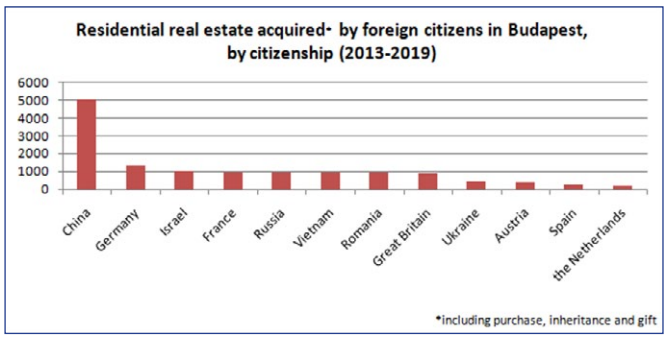

चाहे कुछ गोल्डन वीजा प्रवासी निवेश और रहने दोनों के लिए सम्पत्ति क्रय करने में सफल भी होते हैं, जब वे घर का चयन करते हैं, वे अधिकांशतः उन इलाकों में अपार्टमेंट ढूंढते हैं जहां स्कूलों की गुणवत्ता और आवास को उच्च समझा जाता हो। गुणवत्ता के अमूर्त विचार को स्थान/स्पेस के साथ मेप कर दिया गया और इसे इलाके और स्कूल के नस्लीय या अप्रपवासी बच्चों (रोमा की उपस्थिति) को संदर्भित और वर्गसंरचना के आदर्श परस्परछेदन के रूप में आंकलन किया जाता है जो एक चयनात्मक महानगरीयवाद के स्वरूप का आकार ले लेता है। पाश्चात्य जीवन शैली से आकर्षित लेकिन मुस्लिमों और/या अश्वेतों की उपस्थिति से शंकित, कई चीनी नवागुन्तक वर्तमान हंगेरियन सरकार की उच्च आव्रजन–विरोधी दक्षिणपंथी लोकलुभवानवाद की तरफ झुकते हैं–खुद प्रवासी होने के बावजूद/कई नवागुन्तकों ने हंगरी को अन्य पश्चिमी यूरोप देशों से कही अधिक स्वागत करने को आतुर के रूप में अनुभव किया और लगभग नहीं के बराबर भेदभाव का अनुभव किया। विरोधाभास यह है कि उन्हीं संभाषियों ने सरकार की चयनात्मक आव्रजन नीति की सराहना की जिसने

हंगरी में रहवास और नागरिकता प्रस्थिति को राष्ट्रीय सरकार द्वारा रणनीतिक रूप से एक नीति उपकरण के रूप में काम में लिया जा सकता है। इससे, या तो गोल्डन वीसा कार्यक्रम के द्वारा, या अंतरराज्यीय कूटनीति के हिस्से के रूप में विशेष चैनल द्वारा पश्चिम यूरोप के बाहर आर्थिक संसाधनों तक पहुंचा जाता है। यह दोनों शासकीय वर्ग के आर्थिक हितो को लागू करता है और इयू के स्तर पर राजनैतिक और आर्थिक लाभ उठाने में मदद करता है। पारदेशीय पावर ब्लॉक के बाहर उभरती वैश्विक शक्ति के नागरिकों के रूप में, चीनी गोल्डन वीसा प्रवासी इस प्रक्रिया के लाभार्थी बन सकते हैं: विडम्बना यह है कि इन विवादित राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियों में वे बुडापेस्ट में घर होने की और यूरोप के साथ जुड़ाव की भावना प्राप्त कर सकते थे। ■

सभी पत्राचार फेन्नी बेक को <beck_fanni@phd.ceu.edu> पर
एस्ज्तर कन्हियार को <nyihar.eszter0302@gmail.com> पर
लिंडा स्जाबो को <szabo.linda@periferiakozpont.hu> पर प्रेषित करें।

> इटली में चीनी : व्यापार एवं पहचान

टिंग डेंग, जनसंख्या अध्ययन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, ब्राउन विश्वविद्यालय, यू.एस.ए.

मिलान के चाइनाटाउन में एक मेलबॉक्स पर किराये के बिस्तर के लिए चीनी छोटे विज्ञापन। श्रेयः टिंग डेंग

युआन का जन्म 1988 में बोलोग्ना में हुआ था। वे तीसरी पीढी के चीनी हैं जिनका परिवार 1930 के दशक में पहली बार इटली आया था। इतालवी जमीन पर पावं रखने वाले उनके पहले रिश्तेदार उनके दादा के भाई थे, जो अपने गांव के अन्य एकल पुरूषों के साथ इटली गये थे ताकि वे विदेश में व्यापार में अपना भाग्य आजमा सकें। उस समय के अन्य चीनी पुरूषों की तरह, उन्होंने देहात की एक इतावली महिला से विवाह किया, यद्यपि फासीवादी शासन द्वारा अंतर–नस्लीय विवाह आधिकारिक रूप से हतोत्साहित किया जाता है। युआन के पड़–दादा द्वितीय विश्व युद्व के दौरान अन्य अधिकांश चीनी पुरूषों की तरह चीन नहीं लौटे बल्कि अपनी इतावली पत्नी के साथ वे चमड़े के बैग बनाने वाली कारीगर वर्कशाप को चलाने के लिए पीछे ही रूक गये। उनके कई बच्चें थे लेकिन युआन के अनुसार, इनमें से किसी ने भी बाद में इटली प्रवास करने वाले चीनी प्रवासी रिश्तेदारों से कोई सम्पर्क नहीं रखा। जब युआन के दादा 1950 के दशक में इटली गये, उन्होंने अपने भाई के पारिवारिक चमड़े के व्यवसाय में कार्य किया। वे चीन के दक्षिण पूर्वी तट के वानजाउ क्षेत्र में नाताल गांव में अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ कर गये। युआन के पिता और उनके भाई–बहनों का 1978 में इटली में अपने पिता से पुनर्मिलन हुआ। युआन के पिता ने इटली में एक चीनी रेस्त्रां खोला और इसमें उनकी पत्नी और बेटी भी शामिल हुए। रेस्त्रां ऐसे इलाके में स्थित था जहां वर्तमान में बोलोग्ना की सबसे धनी चीनी आबादी है। युआन के पिता के सब भाई–बहनों ने स्वयं की निर्माण वर्कशाप या रेस्त्रां शुरू किये थे। एक आदर्श चेन–प्रवास के मामले के रूप में, युआन के परिवार ने अपने रिश्तेदारों को एक–एक करके अपने व्यवसाय में कार्य करने के लिए बुलाया। इसके बाद उन लोगों ने अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया।

संभवतः इन प्रथम वानजाउ प्रवासियों में से किसी को यह उम्मीद नहीं थी कि उनसे प्रारम्भ चेन–प्रवास अंततः सैंकड़ों चीनी अकुशल श्रमिकों को इटली और यूरोप में अन्यत्र लाएगा। पूंजीवादी दुनिया के लिए चीन के खुलने के बाद से ये चीनी आप्रवासी ''यूरोप में जल्दी से अमीर होने के लिए'' उत्सुक थे। 1980 के दशक के मध्य से 2008 की वैश्विक मंदी तक, चीनी उत्प्रवास एक इतावली श्रम बाजार के साथ मेल खा रहा था, जो वैश्विक रूप से तेज फैशन उद्योग में उभरते इटली–निर्मित ब्रांडों के लिए काम करने के लिए सस्ते और लचीले पारदेशीय श्रम की मांग कर रहा था।

चीनी रेस्त्रां के साथ मिलकर विनिर्माण वर्कशाप्स ने दो प्रमुख व्यापार का गठन किया जिसने इस पीढी के चीनी प्रवासी और

> >

उनके परिवारों को धन प्राप्त करने में सक्षम बनाया। जब चीन एक वैश्विक उत्पादक और माल के निर्यातक के रूप में उभरा, आयात–निर्यात व्यापार और उससे सम्बंधित थोक व्यवसाय, 1990 के दशक से इटली में आगमन कर रहे नये चीनी लोगों के लिए आर्थिक सफलता के नये आर्थिक मार्ग बन गये। नई सहस्त्राबदी में, जबकि चीन से बडे पैमाने पर प्रवास धीरे–धीरे समाप्त हो गया था, चीनी जातीय अर्थव्यवस्था छोटे खुदरा और सेवा उद्योग में विस्तारित हो गई है। अब अधिकाधिक चीनी छोटे स्थानीय व्यवसायों में बढ रहे हैं, जिसमें कॉफी बार, सस्ती उपभोक्ता वस्तुएं, दुकाने और नाई की दुकान सम्मिलित हैं। हाल के वर्षों में, इटली में चीनी प्रवासियों की बढती संख्या भी पारदेशीय व्यवसायों में संलग्न हैः कुछ चीन में वापिस निवेश कर रहे हैं जबकि अन्य वीचैट, एक चीनी सोशल मिडिया प्लेटफार्म, को दोनों देशों में चीनी उपभोक्तओं के लिए बढते सूक्ष्म व्यवसाय क्षेत्र में संलग्न होने के लिए काम में लेते हैं। (विविध स्थानीय आबादी को लक्षित करने वाले)

इटली में चीनी आबादी की अंतर–समूह विविधता भी पीढीगत अंतरों के मामले में तेजी से दृष्टिगोचर हुई है। युआन की पीढी के चीनी जो इटली में पैदा हुए या कम से कम बड़े हुए थे, अब उन जातीय अर्थव्यवस्थाओं में रहने से संतुष्ट नहीं हैं जो आमतौर पर उनके सस्ते श्रम को बेचने पर निर्भर हैं जैसा उनकी पुरानी पीढियों के साथ था। इटली में जन्में चीनियों की बढती संख्या कालेज–शिक्षित है और उनका लक्ष्य मुख्यधारायी श्रम बाजार में भर्ती होना है। हालांकि, चीनी पहचान और नृजातीय संसाधन अभी भी महत्वपूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक पूंजी हैं जिस पर युवा–पीढी के चीनी भरोसा करते हैं। कुछ वकीलों, डॉक्टरों और अन्य पेशवरों के रूप में कार्य करते हैं जबकि अन्य इटली में संचालित होने वाले नये चीनी राज्य और निजी उद्यमों में भर्ती होते हैं। और कई अन्य इतावली या काई अन्य पारदेशीय कम्पनी के लिए कार्य करने के लिए चीन चले गये हैं। विडम्बना यह है कि युआन और उसकी पीढी के अन्य चीनी, जो एक ऐसे वातावरण में पले–बढे, जिसमें चीनी भाषा को महत्वपूर्ण नहीं माना जाता है, वे व्यस्क के रूप में मेंडेरिन चीनी भाषा सीख रहे हैं। युआन की पीढी के युवा माता–पिता अब चीनी भाषा को अपने बच्चों के लिए एक शैक्षिक आवश्यकता मानते हैं।

इटली में रहने वाले चीनी लोगों के लिए चीन केवल दूरस्थ काल्पनिक जगह नहीं है, जिनका वहां का अपना सीमित अनुभव है। एक बढती आर्थिक शक्ति के रूप में चीन इटली की नृजातीय चीनी अर्थव्यवस्था को आकारित करने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चीनी होना एक प्रकार की ''नृजातीय पूंजी'' है जिससे वे एक आर्थिक रूप से अनिश्चित वर्तमान और भविष्य में जीवित रहने के लिए लाभान्वित होने की उम्मीद करते है। लेकिन चीन इटली में नृजातीय चीनी लोगों के लिए संसाधनों का केवल फव्वारा नहीं है। यह इटली का एक देश के रूप में आकलन करने का संदर्भ बिन्दु भी बन गया है। चीन की आर्थिक सफलता की तुलना में, कई लोग इटली के आर्थिक ठहराव से नाराज हुए हैं और व्यापक तौर पर यूरोप की बढती बहुसांस्कृतिक यथार्थ से उनका मोहभंग हुआ है। कई लोग उनके द्वारा सामना किये गए दैनिक भेदभाव ''रेजिज्मों'' की आलोचना करते है, लेकिन दुकानों या बार को चलाते समय मिलने वाले अन्य आप्रावासियों के साथ–साथ इतालवीयों को आंकने के लिए अक्सर मुख्यधारायी रूढधारणा को आत्मसात करते हैं। वे अक्सर इतालवियों को आलसी, लापरवाह और चीनियों की तुलना में कम मेहनती मानते हैं। इतालिवयों के अवकाश समय और जीवन के सामान्य आनंद को स्वीकार करने की प्रशंसा करते हुए, इटली में कई चीनी मानते हैं कि यही वह लक्षण है जिसने इटली के आर्थिक तकलीफों को बढाया है।

चीन से सम्बंधित विवादास्पद मुद्दों की श्रृंखला, जिसमें हांगकांग प्रत्यार्पण कानून, शिनजियांग और कोविड–19 महामारी के आसपास विरोध प्रदर्शन सम्मिलित हैं, के मुद्दें पर इटली में कई चीनी बीजिंग सरकार के साथ मजबती से खड़े हुए हैं, चीनी राज्य के खिलाफ पश्चिमी मीडिया में व्यापक आलोचना के बावजूद/वास्तव में, आर्थिक शक्ति है (और बढती मुखर राजनैतिक) के रूप में चीन के वैश्विक उभार ने न केवल इटली में लंबे समय से स्थापित चीनी नृजातीय समुदायों के व्यापारिक ढांचे को फिर से आकारित किया है बल्कि एक उभरते प्रवासी राष्ट्रवाद को भी जन्म दिया है जो इटली में चीनी लोगों की नृजातीय चेतना को *(पुनः)* आकारित कर रही है। इस अर्थ में वह चीन जिसे युआन के दादा–दादी ने छोड़ा और इटली जिसे उन्होंने घर बनाने के लिए चुना, लगभग पहचानने योग्य नहीं है। ■

सभी पत्राचार टिंग डेग को <ting_deng@brown.edu> पर प्रेषित करें।

> सर्बिया में चीनीयों की बदलती स्थिति

जेलेना ग्लेडिक, बेलग्रेड विश्वविद्यालय, सर्बिया द्वारा

सर्बिया की राजधानी में एक रेस्तरां चीनी पर्यटकों को आकर्षित करने की कोशिश कर रहा है।
श्रेयः जेलेना ग्लेडिक

पिछले दशक से पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना और रिपब्लिक ऑफ सर्बिया के मध्य संबंध बढ रहे हैं, जिससे प्रवासी समुदायों और प्रवासन के रूझान में बदलाव आया है। सर्बिया में चीनियों की प्रस्थिति अवांछनीय बाहरी लोगों से स्थानांतरित हो गई है। आर्थिक संकट के समय इसे आवश्यक माना गया। वह एक ऐसे जटिल समूह पर स्थानांतरित हो गई जिसे एक आकर्षक अवसर और संभावित खतरे दोनों के रूप में माना गया है।

> प्रवास की पहली लहर

1990 के दशक के बाद सर्बिया में बसे चीनी प्रवासियों का पहला बड़ा समूह हंगरी की वीजा आवश्यकताओं में प्रतिकूल बदलाव के बाद दक्षिण की तरफ अग्रसर है। वे ज्यादातर चीन के दक्षिणी प्रांतों के मूल व्यापारी थे जो पारदेशीय व्यवसाय संचालित कर रहे थे और अपेक्षाकृत अलग–अलग समुदायों में रह रहे थे। उन्होंने क्षेत्र में सामान वितरित करना जारी रखा, अब केवल बुडापेस्ट की बजाय बेलग्रेड से। ये उद्यमी संक्रमण अर्थव्यवस्थाओं की तलाश से प्रेरित लगते थे जहां उपभोक्ता वस्तुओं के अभाव से वे लाभान्वित होते थे। उनकी उपस्थिति से न केवल पूर्वी यूरोप में चीनी प्रवास के ऐतिहासिक रूझानों की निरंतरता के रूपमें देखा जा सकता है बल्कि चीन की बदलती वैश्विक स्थिति के परिणास्वरूप भी देखा जा सकता है। इसे यूरोप के भीतर सर्बिया की स्थिति के लेंस के माध्यम से भी समझा जा सकता है – जहां यह यूरोपीय संघ की तुलना में अधिक उदार नियमों के कारण चीनी व्यापारियों के लिए वांछनीय गंतव्य था, अधिकांश प्रवासी वहां स्थायी रूप से रहना नहीं चाहते थे।

बच्चों को अभी भी ज्यादतर चीन के स्कूलों में भेजा जाता है, इसलिए वहां जन्म से स्थानीय बडी चीनी आबादी नहीं है। जैसे ही सर्बिया की यूरोपीय संघ की सदस्यता की तरफ प्रगति धीमी पड़ी, कई चीनी स्वामित्व वाले व्यापार बुल्गारिया, रोमानिया, इटली, कोएशिया, अन्य इ.यू. देश और यहां तक कि दक्षिण अमेरिका एवं अफ्रीका में चले गये।

सर्बियाई आबादी में प्रथम चीनी समुदायों की प्रस्थिति कई अध्ययनों का विषय रही है। इन चीनी प्रवासियों को ज्यादातर नकारात्मक रूप से देखा जाता था। उनके द्वारा विक्रय किये जा रहे निम्न गुणवत्ता वाली वस्तुओं के साथ जोड़कर सर्बियाई उन्हें विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के आपूर्तिकार के रूप में सराहते थे जो 1990 के दशक के आर्थिक प्रतिबंधों के दौरान कम आपूर्ति में थी। हालांकि, अशांत ऐतिहासिक काल के साथ यह लिंक, जिसे हर कोई पार करना चाहता था, ने भी उनकी प्रतिकूल प्रस्थिति में योगदान दिया।

> नये प्रवासन और गतिशीलता

2009 में चीन और सर्बिया के मध्य रणनीतिक साझेदारी के

> >

बाद, दोनों देशों के मध्य सहयोग तेजी से बढता गया। बेल्ट ओर रोड़ इनिशियेटिव के तहत सर्बिया में चीनी निर्माण परियोजनाओं और निवेश में उल्लेखनीय वृद्वि हुई, संस्कृति प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग बढा और हाल ही में, चीनी डाक्टरों की एक टीम ने ''चीनी मॉडल'' के अनुरूप कोविड–19 महामारी के प्रति सर्बिया के प्रत्युत्तर के विकास का नेतृत्व किया। हालांकि, इन परिवर्तनों ने सर्बिया में पहले से रह रहे चीनी प्रवासियों की प्रस्थिति को विशिष्ट रूप से प्रभावित नहीं किया क्योंकि सर्बियाई लोग इन उद्यमियों को चीन (सर्बियाई में लेख) के पर्याय के रूप में नहीं देखते हैं। इसके अलावा, नये प्रवासन और गतिशीलता के रूझानों ने सर्बिया में चीनियों की नई लहरों को जन्म दिया जो इसके बजाय चीन का कथित चेहरा बन गए।

चीनी निवेश परियोजनाएं प्रवास की एक नई लहर को लाई जिसमें शारीरिक श्रमिक और मध्य एवं उच्च प्रबंधन के साथ निश्चित अवधि के प्रवासियों को सर्बिया ले जाया गया। हालांकि, जहां ये परियोजनाएं अत्यधिक प्रचारित की जाती हैं, ज्यादातर दूरस्थ निर्माण और विकास स्थल, जहां वे कार्य करते है, के पास। ऐसा पहली बार है कि चीनी निर्माण श्रमिकों ने एक यूरोपीय देश में इतनी संख्या और अंतरराज्यीय समझौते के तहत प्रवास किया है। यह यूरोप में केटरिंग कार्य या परिधान वर्कशाप्स के रूप में उपस्थित चीनी श्रम, दोनों अक्सर अवैध और अदृश्य, में एक बदलाव को चिन्हित करता है।

सर्बिया में दूसरी चीनी लहर प्रवास के बजाय गतिशीलता से आई। ऐसा 2017 में द्विपक्षीय वीजा–मुक्त प्रणाली की स्थापना के बाद हुआ। इससे चीनी पर्यटकों का एक महत्वपूर्ण प्रवाह अग्रसर हुआ, जो कथित रूप से चीन के उच्च–मध्यम वर्ग से थे। ये इतनी संख्या में पहुंचे कि पर्यटन स्थलों पर गश्त लगाने के लिए सर्बियाई और चीनी अफसरों की संयुक्त पुलिस इकाइयां बनाई गई। साइप्रस और अन्य पश्चिमी बाल्कन देशों के साथ 2019 में सर्बिया यूरोपीय देशों में चीनी पर्यटकों की अधिकतम वृद्वि वाला देश था। पर्यटन में यह वृद्वि पूर्वी यूरोप में अन्यत्र रूझानों के समान है। हालांकि, यह अभी मध्यम वर्गीय जीवन शैली आव्रजन के साथ नहीं आया है जैसे उदाहरण के लिए, हंगरी या पुर्तगाल में, शायद सर्बिया के यूरोपीय संघ के बाहर होने से।

> एक संयुक्त भविष्य की ओर

इन हालिया घटनाक्रमों का अभी कोई व्यापक अध्ययन नहीं है। फिर भी, मीडिया और किस्सों के अवलोकन से पता चलता है कि सर्बियाई आबादी ने इन दो समूहों को अलग तरह से जवाब दिया। बाद वालों का स्वागत किया गया–व्यापारी दिमाग वाले लोगों ने अपेक्षाकृत धनी चीनी आबादी की बढती संख्या के आगमन को अवसरों के रूप में देखा या उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार सेवाओं को कम या अधिक सफलता के साथ स्थापित करने या अनुकूलन करने का प्रयास किया। सर्बिया के प्रत्येक प्रमुख यात्रा गंतव्य स्थान पर देश के लिए संभावित आर्थिक लाभ स्पष्ट थे। दूसरी तरफ, चीनी निवेश परियोजनाओं पर काम करने वालों को सर्बिया की उच्च बेरोजगारी दर के संदर्भ में कभी–कभी संभावित खतरे के रूप में उल्लेख किया जाता है। हालांकि, उसी समय में, स्थानीय समुदायों और चीनी श्रमिकों के मध्य धनिष्ठ संबंधों के उदाहरण और अंतरनृजातिय मेत्री के बारे में व्यक्तिगत कहानियां हैं। इन नये प्रकार के चीनी प्रवासियों के साथ संबंध बहुल अलग तरीके से विकसित हो सकते हैं और इसलिए इन्हें निकट भविष्य में नजदीक से देखा जाना चाहिए।

इक्कीसवीं सदी के मोड पर सर्बिया में पहले से रह रहे चीनियों के लिए उनकी प्रस्थिति भू–राजनीति और द्विपक्षीय संबंधों में कथित परिवर्तनों से ज्यादा प्रभावित नहीं होती है लेकिन उन्होंने नये अवसरों का सामना किया। कुछ ने दो नये समूहों को अपने व्यापारों का विस्तार करने के अवसर के रूप मे देखा। ऐसा उन्होंने निर्माण स्थलों पर चीनी भोजन और वस्तुओं की आपूर्ति कर के या पर्याटक स्थलों के निकट चीनी रेस्तरां और बबल चाय की दुकानें खोल कर किया। कुछ ने अपनी ''स्थानीय'' स्थिति का इस्तेमाल किया और व्यवसायियों को सलाह दी कि उन्हें परियोजनाए को कैसे लागू करना चाहिए या एजेंसियों को कि उन्हें दूर कैसे आयोजित करने चाहिए। प्रथम लहर के चीनी लोग शायद मूल रूप से इन नये प्रवासियों की तुलना में निम्न सामाजिक–आर्थिक वर्ग से संबंधित हो सकते थे–निर्विवाद रूप से वे कम विकसित चीन से आये थे। यद्यपि, आज वे अपने स्थानीय ज्ञान एवं अनुभव का लाभ उठाते हुए आने वाली चीनी लहरों के लिए वांछनीय बन सकते हैं। समय के साथ, यह तथ्य कि वे सर्बियाई पक्ष को क्रास–सांस्कृतिक अंतदृष्टि भी प्रदान कर सकते हैं, स्थानीय आबादी की नजरों में उनकी प्रस्थिति में बदलाव ला सकता है।

चीनियों के इन विभिन्न समूहों के मध्य गतिशीलता और उनकी स्थानीय समुदायों के साथ अपने संबंध वैश्विक राजनैतिक अर्थव्यवस्था में बदलाव के प्रक्षेपवक्रों को दर्शाते हैं। लोकलुभावनवाद और सार्वजनिक स्वास्थ जैसे अस्थिर कारकों के मजबूत प्रभाव के साथ, प्रवास के नये रूझान मौजूदा सीमाओं और पदानुक्रमों को चुनौती देते हैं और प्रत्येक समूह के स्थापन पर पुनः बातचीत करने की आवश्कता होती है। सर्बिया में चीनियों के प्रति विशाल बदलती धारणाओं और सर्बिया और चीन की बदलते धारणा और स्थिति को देखते हुए, प्रवासियों के भावी लहरों की नींव का गठन करने के लिए उनकी प्रस्थिति पूरी तरह से विपरीत दिशाओं में विकसित हो सकती है। ■

सभी पत्राचार जेलेना ग्लेडिक को <jelenagledic@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> चीनी प्रवासी और कोविड–19 महामारी

मार्टिना बोफुलिन, रिसर्च सेंटर ऑफ द स्लोवेनियन अकेडमी ऑफ साइन्सेज एण्ड आर्टस (ZRC SAZU) द्वारा

वियना, ऑस्ट्रिया में भित्तिचित्र। मार्च 2020। सेबेस्टियन जेमेक द्वारा फोटो ।

> स्लोवेनिया द्वारा महामारी सबंधित नस्लवाद

सन् 2020 के मध्य के प्रारम्भ में SARS-COV-2 के प्रकोप के तुरंत बाद, दुनिया भर में चीनियों के खिलाफ पूर्वाग्रह, नस्लवाद और हिंसा के कृत्यों पर रिपोर्ट बढने लगी।[1] चीनी लोगों पर चिल्लाया गया, हमला किया गया और आम लोगों और अधिकारियों के मध्य डर और नस्लवाद के उलझाव के कारण उनकी दुकानों और रेस्तरां में तोड़–फोड़ की गई।

इन हमलों से सबसे अधिक प्रभावित होने वाले यूरोप में रहने वाले चीन के लघु उद्यमी थे, जिनका कानूनी रूप से रहने का अधिकार अक्सर आर्थिक गतिविधियों पर टिका रहता है और जिनके व्यवसाय, ''चीनी'' होने के एकमात्र कारण से, तुरन्त ही प्रभावित हुए। इन लघु उद्यमियों में से अधिकांश ने 1980 के दशक के अंत में और 1990 के दशक के प्रारम्भ के दौरान झेजियांग या फुजियान प्रांतों से, बल्कि चीन के नगरीय क्षेत्रों और उत्तर–पूर्व से, चीन को ''गोइंग आउट फीवर'' के तहत छोड़ दिया था। दशकों के बाद वे बसने वाले देशों में अच्छी तरह से समाविष्ट हो गये हैं। वे अक्सर सम्पन्न थोक आयात कंपनियों (ज्यादातर पूर्वी और मध्य–यूरोप में), लघु परिधान व्यवसाय (इटली और स्पेन में), और चीनी रेस्तरां को संचालित करते हैं। अंत वैयक्तिक संबंधों में मौखिक गालियों और पूर्वाग्रहों के अधीन होने के साथ–साथ राज्य के अधिकारियों के साथ संपर्कों में बावजूद उन्होंने स्वयं को अधिकतर सुरक्षित महसूस किया है और प्रकार के भेदभाव को उन्होंने स्वीकार किया है। नतीजन, उन्हें अक्सर ''अदृश्य'' अल्पसंख्यक कहा गया है और यूरोप में नस्लवाद की चर्चाओं में बहुत कम ही चित्रित किया जाता है।

> प्रतिरोध के कृत्य

अपवर्जन के इन भीषण कृत्यों ने कई देशों में प्रतिरोध को देखा। उदाहरण के लिए, इटली में, मैसिमिलियानो मार्टिग्ली जियांग जो बचपन में झेजियांग से निकल गये थे, ने फ्लोरेंस के प्रमुख पर्यटक स्थलों के सामने अपनी तस्वीर वाले बैनर जिसमें लिखा था, ''मैं वायरस नहीं हूँ, मैं एक व्यक्ति हूँ, ''अपने पूर्वाग्रहों को छोड़ दो'' के साथ सोशल मीडिया पर एक अभियान प्रारम्भ किया। स्वीडन में, कोरियाई–स्वीडिश कलाकार लीजा वूल–रिम सोजब्लोय ने महामारी के दौरान एशियाई लोगों द्वारा योगा अपवर्जन पर एकल पेनल कामिक्स साझा की, जबकि इतालवी कलाकार लाइका ने रोम में एशियाई लोगों के प्रति नस्लवाद और महामारी के मध्य संबंधों से निपटने के लिए स्ट्रीट–आर्ट का निर्माण किया। इस प्रकार

> >

कोविड–19 नस्लवाद ने यूरोप में अश्वेत लोगों की तरफ व्यवस्थित एवं अंतवैयक्तिक नस्लवाद के विकसित होते विमर्शों में योगदान दिया है। के साथ साथ एशिाइ पृष्ठभूमि के यूरोपीय और एशियाई नवागुन्तकों के बढते सक्रियतावाद

> अपवर्जन और ''घर वापसी''

लेकिन जहां चीन के बाहर चीनी प्रवासियों के प्रति नस्लवाद कई मीडिया रिपोर्टों और एक समर्पित विकीपिडिया पृष्ठ के साथ सुप्रलेखित है, चीन लौटने पर सामना करने वाली चीनी अपवर्जन के बारे में बहुत कम पता है। मार्च 2020 में वायरस के कोई नए स्थानीय प्रसारण की धोषणा करने के बाद, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना ने विदेश से आने वाले ''आयातित मामलों'' पर बहुत करीबी नजर रखी। उन्होंने जल्दी ही संक्रमण को रोकने वाले विभिन्न उपाय को लागू किया जबकि चीनी दूतावासों, प्रवासी संगठनों और प्रवासी गृहनगर प्रतिनिधियों ने प्रवासियों के चीन न लौटने को कहा। विदेशों से चीनी नागरिकों के वापस आने के प्रवाह ने चीन द्वारा लागू कठोर उपायों के परिणामों को जिन्हें चीन ने वायरस पर अंकुश लगाने के साथ–साथ एक देश जिसने वायरस से प्रभावी रूप से और तेजी से निपटा था के समग्र सफलता वृतांत को खतरे में डाला था।

''सरकार द्वारा चलाये गये'' आयातित मामलों के खतरों पर चर्चा सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं में फैल गई। कई नेटिजनों ने लौटने वालों को ''वहीं वापस लौटों जहां से आये थे'' का आह्वान किया और उन्हें ''विशाल शिशुओं''[2] की तरह व्यवहार करने के लिए और ''मातृभूमि के निर्माण में भाग नहीं लेने के लिए, लेकिन उसे नुकसान पहुंचाने के लिए सबसे पहले'' की निंदा की। हालांकि अंततः राज्य के मुख्य धारायी मीडिया ने अपनी मातृभूमि के लिए विदेशी चीनियों के योगदानों पर जोर देने का निर्णय लिया और आनलाइन घृणा फैलाने वाले भाषणों को दबाया, विकसित बहिष्कृत विमर्श विदेश चीनियों द्वारा चीन के राष्ट्रीय निर्माण में प्रतीकात्मक भूमिका के संभावित रूपांतरणों का प्रदर्शन करता है। ऐसा चार दशक पूर्व के सुधारों के प्रारम्भ के साथ हुआ; पूर्व में, चीनी प्रवासियों को ऐसे देशभक्तों के रूप में देखा जाता था जो मातृभूमि के आधुनिकीकरण में योगदान देते हैं।

अपने रहवास के स्थान के साथ–साथ मूल स्थान पर अपवर्जन का सामना करने बाद, कई चीनी प्रवासियों को कोविड–19 के कारण उस उपसमूह के सदस्यों से लांछन का सामना करना पड़ा जिसके वे सदस्य थे–उनके रिश्तेदार, मित्र और उसी जगह के हम वतन/चीन के झेजियांग प्रांत के किंग्टियन जैसे पारंपरिक जगहों से उत्प्रवास करने वाले लघु उद्यमियों में लांछनीकरण विशेष रूप से मजबूत था। ये लोग रिश्तेदारों और मित्रों के कसे हुए सामाजिक नेटवर्क में रहते है जो दुनियाभर के विभिन्न लोकेशनों और पूर्वी चीन के पहाड़ी हिस्से में उत्पति के स्थान को जोड़ते है।

प्रवासी मीडिया में इस तरह के एक मामले को विस्तार से वर्णित किया गया जहां यूरोप में पहले कोविड–19 पीड़ितों में से चीनी के परिवार को न सिर्फ बुरी अफवाहों का सामना करना पड़ा बल्कि उन्हें अपने हमवतनों से भी धमकियों का सामना करना पड़ा। परिवार के सदस्यों को लगता था कि उन्होंने अपने सामर्थ्य के अनुसर सब कुछ जिम्मेदारी से किया था और वायरस को रोकने के लिए जिम्मेदारी से किया था लेकिन फिर भी उन पर अपने साथी प्रवासियों के जीवन और व्यवसायों को खतरे में डालने के आरोप लगे। न केवल यह खबर बसने वाले देश के प्रवासी समुदाय में व्यापक रूप से फैली, यह तुरंत ही मूल स्थान पर भी प्रेषित हुई जिसने किंग्टियन में पीछै छूट गये लोगों के मध्य परिवार के कलंक को और जोड़ दिया है।

इस प्रकार महामारी ने इस बात को आलोकित किया कि कैसे अपवर्जन और पूर्वाग्रह अभी भी चीनी प्रवासी अनुभव का हिस्सा है। यह रहवास के देश के परे प्रवासी प्रक्रिया की सभी लोकेशन पर जाता है। इसके अलावा, इसने चीन में चीनी प्रवासी के प्रति अपवर्जन पर एक नई चर्चा के उद्भव की और संकेत करते हैं। अधिक को जोड़ने वाली कल्पनाओं की विशेषता को प्रदर्शित करता है जिन्हें गतिशीलता को सीमित करने के लिय या फिर कौन सी गतिशीलता अनुमत है, स्वागत योग्य है और कौन सी नहीं है को संकीर्ण रूप से परिभाषित करते हैं। ■

सभी पत्राचार मार्टिना बोफूलिन को <martina.bofulin@zrc-sazu.si> पर प्रेषित करें।

1.https://www.euractiv.com/section/global-europe/news/covid-19-crisis-triggers-eu-racism-against-asians-rights-agency-says

2. ''विशाल शिशु'' शब्द मनोवैज्ञानिक वू जिहोंग की पुस्तक *The Country of Giant Babies* से लिया गया है जहाँ वे युवा चीनियों के निजी विकास की आलोचना करतें हैं। इस शब्द का प्रयोग अक्सर आनलाइन अतृप्त और अहंकारी लोगों के लिए किया जाता है।

> चरमवादी दक्षिण पंथ शासनों के तुलनात्मक विश्लेषण की ओर

वाल्डेन बेल्लो, स्टेट यनिवर्सिटी ऑफ न्यूयोक, बिंगहैम्पटन, यू.एस.ए.

कोविड–19 महामारी ने वामपंथ की अधिक प्रगतिशील लाइनों के साथ समाज को कैसे पुनगर्ठित किया जाए के लिए विचारों के एक प्रवाह को ट्रिगर किया है। दुनियाभर में फैली वेबिनारों में, लोगों ने चकाचौंध से परिपूर्ण विकल्पों की श्रृंखला का सामना किया है जिसमें एक पुनः प्रबलित वामपंथी कीनस्यिन, डी–ग्रोथ, वि–भूमण्डलीकरण, इकोफेमिनिज्म, खाद्य संप्रभुता, मुक्तिवादी मार्क्सवाद और ब्यून विविर या ''लिविंग वेल'' सम्मिलित है।

एक मात्र समस्या यह है कि इन अदभुत विचारों का बहुत कम या अनिश्चित राजनैतिक कर्षण है। ऐसा तब ही है जब उदार लोकतंत्र के साथ नवउदार अर्थशास्त्र के प्रभावी प्रतिमान ने और अधिक गहन संकट में प्रवेश किया है और जैसा कि अर्थशास्त्री डानी रोड्रिक कहते हैं, यह संभवतः ''धीरे–धीरे पर भी रहा हो''।

राजनैतिक स्पेक्ट्रम के दूसरे छोर पर, न तो रूढिवादी और न नही चरम दक्षिणपंथियों के पास कोई नवाचारी विचार है, और जो रोचक विचार उनके पास हैं, जैसे वि–भूमण्डलीकरण, को वामपंथियों द्वारा चुरा लिया गया है। फिर भी चरम दक्षिणपंथियों के पास राजनैतिक वेग है और कोविड–19 के विस्थिरीकरण प्रभाव शायद, वास्तव में, उस वेग को तीव्र कर सकते है।

चरम दक्षिणपंथ का वैश्विक उदय पिछली अर्ध शताब्दी के दो सबसे बड़े आश्चर्यों में से एक है। इसके साथ बीसवी सदी के अंतिम दशक में पूर्वी यूरोप और सोवियत संघ में समाजवादी शासन का पतन।

2010 में, हंगरी को छोड़कर वैश्विक स्तर पर कहीं भी ''नव चरम दक्षिणपंथ'' कहे जाने वाले शासन नहीं थे। अब हमने सात सबसे बड़े लोकतंत्रों में से चार में चरम दक्षिणपंथी हस्तियों को सत्ता में आते हुए देखा हैः भारत, अमेरिका, ब्राजील और फिलीपीन्स और जहां वे सत्ता के गठबंधन में हिस्सा नहीं है, वहां भी उन्होंने अपने चुनावी वजन से कई प्रकरणों में राजनीति के बल के केन्द्र को दक्षिण पंथ की तरफ मोड़ा है जैसे जर्मनी, डेनमार्क और इटली में।

वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण दोनों में दक्षिणपंथी शासन सत्ता में आये हैं। कुछ विशेषताओं का साझा करते हुए, वैश्विक राजनैतिक अर्थव्यवस्था में अपनी जगह से जुड़े इन शासी समुहों की कुछ अनूठी विशेषताएं भी हैं। इसलिए इन्हें विश्लेषण के प्रयोजनों के लिए अलग से देखना उपयोगी है। यद्यपि यह सुझाव देता है कि यह केवल, या मुख्य रूप से, वैश्विक राजनैतिक–आर्थिक लोकेशन है जो इन शासनों की उत्पत्ति और गतिशीलता के लिए जिम्मेदार हैं।

> वैश्विक उत्तर में चरम दक्षिणपंथ

वैश्विक उत्तर में चरम दक्षिणपंथ शासनों और शख्सियतों के उदय के पीछे कौन से कारक हैं?

पहला, यूरोप और अमेरिका में चरम दक्षिणपंथ लोगों की जीवन परिस्थितियों पर नवउदारवादी नीतियों के नकारात्मक प्रभाव का लाभ उठाने में सक्षम हो गये थे। सामाजिक डेमोक्रेट, या मध्यम वामपंथी, नवउदार नीतियों के निर्माण और क्रियान्वयन में फंसे रहे। इसने उनके आधार के एक बड़े भाग को इस अहसास के साथ छोड़ा कि वे सामाजिक लोकतांत्रिक दलों पर अपनी सुरक्षा के लिए अब ज्यादा भरोसा नहीं कर सकते है। इसने इन्हें दक्षिणपंथी दलों द्वारा चुराये जाने के लिए असुरक्षित कर दिया। दक्षिणपंथी दलों ने चतुराई से मध्यम दक्षिणपंथ द्वारा नवउदार नीतियों को पूर्ण समर्थन को छोड़ दिया और वामपंथियों द्वारा पारंपरिक रूप से समर्थित ''कल्याणकारी'' स्थापनों को नौकरपरस्ती से हथिया लिया।

दूसरा, यूरोप में, चरम दक्षिणपंथी लोकतंत्र के मुद्दों पर सवार हो कर यूरोपीय संघ के खिलाफ नाराजगी से लाभ उठाने में सक्षम हुआ। उसने यह कहा कि यूरोपीय संघ का अनिर्वाचित तकनीकी नेतृत्व अपने सदस्य देशों के लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित राष्ट्रीय नेताओं पर आधिपत्य जमा रहा था। अतः, 2015 में जब, तथाकथित ट्रोइका ने ग्रीस निवासियों पर लागू मित्तव्यत्तता कार्यक्रम पर ग्रीक जनमत के परिणामों को नजरअंदाज किया, फ्रांस में नेशनल फ्रंट की नेता, मरीन ले पेन ने खुद को यह कहते हुए, ''चयन या तो लोकतांत्र का है या यूरो–तानाशाही का'' स्वयं को एक डेमोक्रेट के रूप में घोषित किया।

तीसरा, चरम दक्षिणपंथी दल, थोड़े कम प्रभावी विरोध के साथ, प्रवासी मुद्दे पर हावी होने में सक्षम रहे हैं। उन्होंने न केवल मध्यम–दक्षिणपंथ और मध्यम–वामपंथ पर प्रवास पर कोई व्यहार्य

>>

''न तो रूढ़िवादी और न ही चरम दक्षिणपंथ के पास कोई अभिनव विचार हैं, और जो रोचक विचार उनके पास है जैसे वि–वैश्वीकरण को वामपंथ ने चुरा किया है। फिर भी चरम दक्षिणपंथ के पास राजनैतिक गतिशीलता है।''

नीति नहीं होने का आरोप लगाया है, बल्कि इस साजिश सिद्वांत को भी आगे बढाया है कि मध्यम दक्षिणपंथ और मध्यम वामपंथ और यूरोपीय संघ यूरोपीय और अमेरिकी समाज को नष्ट करने के लिए, जिसे वे ''प्रवासी भीड़'' के लक्ष्य के रूप में वर्णित करते है, के साथ सांठ–गांठ करते हैं।

प्रवास का विरोध और अल्पसंख्यकों के उपर श्वेत समाज के प्रभुत्व को बनाये रखना वह केन्द्रीय मुद्दा है जिस पर चरम दक्षिण पंथ सवार है और लोगों को लामबंद कर रहा है। उन्होंने अपनी वैश्वीकरण–विरोधी, नवउदारवाद–विरोधी और लोकतंत्र–समर्थक अवसरवादी समर्थन को एक नस्लवादी समष्टि के अंतर्गत स्थित किया है। उदाहरण के लिए, फ्रांस में मेरीन ले पेन का नेशनल फ्रंट (FN) अब धन कर की बहाली का आह्वान करता है जबकि कुछ दशक पहले वह खुद सभी प्रकार के प्रगतिशील कराधान का पक्षधर था। जैसा अर्थशास्त्री थॉमस पिकेटटी इंगित करते है, यह पार्टी के ''सामाजिक मोड़'' का हिस्सा है या धनी पर उच्च करों के माध्यम से श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा के पक्ष में दिखावा करना। हंगरी में, विक्टर ऑर्बन की फाइवेज पार्टी ने पारिवारिक लाभों में वृद्वि की और बेरोजगारों के लिए आर्थिक सहायता वाली नौकरियां पैदा की है। सामाजिक कल्याण की रक्षा और संवर्धन के कुछ उपाय, नौकरियों को बचाना और चरम दक्षिणपंथ के नेता कहते है, अर्थव्यवस्था की रक्षा सब ठीक है, जब तक लाभार्थी ''सही'' रंग, ''सही'' संस्कृति और ''सही'' नस्लीय वंश से हों।

बेशक इस रूख को स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता है, लेकिन वास्वत में, यही संदेश निकल कर आता है और अब तक यह प्रभावी है।

> वैश्विक दक्षिण में चरम दक्षिणपंथ

वैश्विक दक्षिण की तरफ मुड़ते हुए, जबकि यह बिल्कुल सच है कि, उत्तर की तरह, नवउदार संरचनात्मक समायोजन ने लोकतंत्रों के अधिकांश नागरिकों के पहल से ही अस्तित्व की भीषण परिस्थितियों को बदतर बनाने में योगदान दिया है। फिलीपीन्स, भारत और ब्राजील जैसी जगहों पर जो घटित हो रहा था, वह अधिक बुनियादी थाः उदार लोकतंत्र का खण्डन। फिलीपीन्स में रोड्रिगो डूटर्टे, भारत में नरेन्द्र मोदी और ब्राजील में जेयर बोल्सोनारो इस खण्डन का मूर्त रूप हैः हजारों अतिरिक्ति–न्यायिक फांसियों की अध्यक्षता करते हुए डुटर्टे उचित प्रक्रिया के उल्लंघन के बारे में डींग हांकते है, मोदी धर्मनिरपेक्ष और विविध भारत के पतन का महिमामंडन करते हैं और बोल्सोनारो 20 वर्षों तक ब्राजील पर शासन करने वाली सैन्य तानाशाही के बारे में आतुरता से बात करते है।

मुख्य रूप से इन तीन समाजों में उदार लोकतंत्र से नागरिकों के अलगाव के लिए मुख्यरूप से जिम्मेदार था– उदार लोकतंत्र के वादे और उसके यथार्थ के मध्य भारी अंतर था। भारतीय संविधान, में 1987 के फिलीपीन संविधान, और 1988 के ब्राजील के संविधान में व्यक्त शानदार आदर्शों और व्यापक निर्धनता, असमानता और वि–सशक्तिकरण के यथार्थ के मध्य बढती खाई को देर–सवेर एक लोकप्रिय विस्फोट में अग्रेषित होना ही था।

मध्यम वर्ग के मोहभंग को ध्यान में रखे बिना चरम दक्षिणपंथ की शक्ति के उभार को समझा नही जा सकता है। बीसवीं सदी के अंतिम 30 वर्षों में मध्यम वर्ग पूरे वैश्विक दक्षिण में तानाशाही को कमतर करने वाला एक केन्द्रीय कारक था। पिछले दो दशकों में, हालांकि अपने वादो को पूरा करने में उदार लोकतंत्र की विफलता और अपने जीवन स्तर के अपकर्ष से उनका काफी मोहभंग हुआ था। वे कठोर राजनैतिक समाधानों के प्रति अधिक खुल गये हैं और कुछ ने तो नवउदारवाद का समर्थन भी किया, यद्यपि नवउदार नीतियों का उनके पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इन नीतियों ने मध्यम वर्ग में कुछ लोगों की जीवन स्थितियों को घटाया लेकिन साथ ही साथ कुछ को लाभ पहुंचाया है। इसके साथ ही, निम्न वर्ग के कुछ सदस्यों को जिसे कुछ ने ''आकांक्षी मध्यम वर्ग'' कहा था, वे लोग जो आय की दृष्टि से मध्यम वर्ग नहीं है लेकिन बनने की ख्वाईश रखते हैं, को भी प्रभावित किया। बाद वालों को खुश करने के लिए, मोदी, डुटर्टे और बोल्सोनारों ने नवउदार नीतियों को अपनाया है जबकि उत्तर में उनके कुछ समकक्ष अवसरवादी कारणों से अपने आप को उनसे दूर करने में व्यस्त है।

अपराध और तथाकथित ''जोखिम वर्गों'' का भय भी मध्यम वर्ग के दक्षिणपंथ की तरफ झुकाव के पीछे एक कारक है और यह विशेष रूप से तब है जब असमानता और निर्धनता इतनें व्याप्त है कि कुछ लोग ड्रग्स और अपराध की ओर मुड़ जाते हैं। ब्राजील ओर फिलीपीन्स दोनों में, अपराध और ड्रग्स के प्रति मध्यम वर्ग का डर निश्चित रूप से चुनावी उग्रवाद का एक केन्द्रीय कारक था। निश्चित रूप से यह डुटर्टे की योग्यता थी कि उन्होंने ड्रग्स और अपराध को उसके सामाजिक संदर्भ से निकालकर जनोत्तजक रूप से उन्हें सभी वर्गों, अमीर, मध्यम वर्ग और निर्धन के सामने वाली मुख्य समस्या में परितर्वन कर दिया।

भ्रष्टाचार–विरोधी रूख की शक्तिशाली अपील भी है जो केवल मध्यम वर्ग तक सीमित नहीं है। चुनावों को ''लफंगों को बाहर फेंको'' के अभियानों से भड़काया जाता है। हालांकि ऐसा लगता है कि हर भ्रष्टाचार–विरोधी प्लेटफार्म से सत्ता में आने वाली हर पार्टी सत्ता में आने के बाद भ्रष्ट हो जाती है, जिससे लोग चुनावी प्रक्रिया के निंदक हो जाते है और भारत के मोदी और फिलीपीन्स के डुटर्टे जैसे नेताओं के प्रति आकर्षित होते हैं जिनके साथ वे कई बिन्दुओं पर सहमत न हो और जिन्हें वे राजनैतिक अधिकारों के लिए खतरे के रूप में देखते हो, लेकिन जो एक गैर–भ्रष्ट छवि पेश करने में सक्षम हैं (यद्यपि वास्तविकता अलग हो सकती है)

ब्राजील में, वर्कर्स पार्टी को उसके नेतृत्व के मध्य कथित भ्रष्टाचार के लिए दंडित करने के लिए बड़ी संख्या में मतदाता बोलसोनारों के पास चले गये। जहां सभी पार्टियां भी आचरण में लिप्त थी, लूला की पार्टी ने मतदाताओं के गुस्से का आघात उठाया, शायद इसलिए कि उसने राष्ट्रपति पद पर आसीन होने के पहले एक स्वच्छ रिकार्ड का दावा किया था। उन्हें सत्ता में आने के बाद भ्रष्ट के रूप में देखा गया था। लूला और उनके आनुक्रमिक डिल्मा रूसेफ की तुलना में उनसे पूर्व के शासनों में भ्रष्टाचार कहीं अधिक था लेकिन ऐसा लगता है कि पाखंड की लागत स्पष्ट बेईमानी से कहीं अधिक होती है।

>>

कामगार वर्ग, कृषकों, नगरीय एवं ग्रामीण निर्धनों और श्रमिक वर्ग के लिए नकारना मूर्खतापूर्ण होगा कि डुटर्टे और मोदी उनके मध्य व्यापक समर्थन का आनंद लेते है। हालांकि यह कहा जा सकता है कि मध्यम वर्ग की तुलना में निम्न वर्गों द्वारा हस्तियों को दिये जाने वाले समर्थन में अंतर है। एंटोनियो ग्राम्शी से उधार लेते हुए, हम कह सकते हैं कि उनकी ''निष्क्रिय सहमति'' अधिक है जबकि मध्यम वर्ग की ''सक्रिय सहमति'' अधिक है। जो टेलीविजन, इंटरनेट और प्रिंट मीडिया में व्यक्त की गई राय में प्रकट होती है। मध्यम वर्ग के बुद्विजीवी के जनमत बनाने में हमेशा अग्रणी रहे हैं और भारत और फिलीपीन्स में इस क्षेत्र के एक बड़े समूह ने मोदी और डुटर्टे का समर्थन किया है।

अंत में, इन चरम दक्षिणपंथी हस्तियों के करिश्में को ध्यान में रखे बिना इनकी सफलता को समझा नहीं जा सकता है। विशेष रूप से मोदी और डुटर्टे करिश्माई व्यक्तित्व है जो तर्कसंगत गणना, वर्ग और संरक्षण पर आधारित व्याख्याओं को धता बताते हुए भारी बहुमत का, वे जो कहते है या बहुमत तैयार करते हैं। उत्तर की कोई भी दक्षिणपंथी हस्तियां इन दो व्यक्तित्वों की विशाल और व्यापक अपील के निकट नहीं आती है, यद्यपि डोनाल्ड ट्रम्प के मामले में, अपनी पार्टी और जनाधार पर उनकी करिश्माई पकड़ है जो इस तथ्य से स्पष्ट है कि 2020 के चुनावों मे 74 मिलियन से अधिक अमेरिकीयों ने उन्हें मत दिया था। ये उनके द्वारा 2016 में प्राप्त मतों से 11 मिलियन अधिक है।

> निष्कर्ष

वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण में चरम दक्षिणपंथी शासनों की साझा विशेषताएं है। इस निबंध ने उनके मध्य विरोधाभासों की छानबीन की है। इसका उद्देश्य वर्तमान राजनैतिक संयोग पर मध्यम और वामपंथ के प्रतिद्वंदियों के खिलाफ इनके द्वारा राजनैतिक गति प्राप्त करने के अधिक व्यापक स्पष्टीकरण पर पहुंचने के लिए एक समान प्रयास में योगदान देना है। ■

सभी पत्राचार वाल्देन बेल्लो को <waldenbello@yahoo.com> पर प्रेषित करें।

> लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्र के सार्वभौमिक उद्देश्य

इस्टेबन टोरस्, यूनिवर्सिडाड नेसिनल दे कोरडोबा–कोनिसेट, अर्जेंटीना द्वारा

वैश्विक संवाद का यह अनुभाग लैटिन अमेरिका के प्रभावशाली लेखकों के एक समूह के सैद्धांतिक नवाचारों, बौद्धिक कार्यक्रमों और भावी परियोजनाओं के एक छोटे से प्रतिदर्श को प्रस्तुत करता है। ये सभी सहकर्मी लैटिन अमेरिका के सामाजिक यथार्थ, और कई अर्थों में, विश्व समाज की पूर्णता, के व्यापक अध्ययन के लिये नये सैद्धांतिक उपकरण बनाने के लिये प्रतिदिन काम करते हैं। अपनी अपनी संबंधित राष्ट्रीय पहचानों की पुष्टि के साथ जुडते हुये, इस अनुभाग के लेखक अपनी एक महत्वपूर्ण लैटिन अमेरिकी पहचान को स्वीकारते हैं जिसने उनकी बौद्धिक परियोजनाओं पर अपनी छाप छोडी है। इसका अर्थ है कि वे इस के साथ क्षेत्रीय समाज और वैश्विक समाज के भविष्य के प्रति बौद्धिक प्रतिबद्धता का पोषण करते हैं। अन्य बातों के मध्य, अधिकांश अतिथि लेखक एक अपडेट, एक संरचनात्मक सुधार, या साफ तौर पर, वर्तमान विश्व के समाजशास्त्र में एक क्रांति का प्रस्ताव रखते हैं। उनमें से कोई भी अपनी रचनात्मक शक्ति को रोकने के लिये तैयार नहीं हैं, और सभी दूसरों के विचारों के मात्र पुनरूत्पादक बनने की संभावना से भयभीत हैं। उनमें से प्रत्येक के पास क्षेत्रीय और वैश्विक सामाजिक विज्ञानों की वर्तमान स्थिति, प्रमुख सैद्धांतिक और राजनैतिक चुनौतियों जिसका यह क्षेत्र सामना करता है, और ज्ञान का उत्पादन सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं के संबंध में भविष्य की ओर कैसे विकसित होना चाहिये, के बारे में अपना आकलन है।

सहकर्मियों का यह समूह, –जो केवल अपने काम और प्रतिभा के आधार पर, अपने अपने देशों में, क्षेत्रों में और, अधिकाधिक पश्चिमी दुनिया भर में श्रेष्ठ दिखाई देते हैं – वे अपने सबसे अधिक महान अर्थों में, असामान्य आंकांक्षा रखते हैं। वे सभी नये सामाजिक सिद्धांतों पर आधारित शोध करने की एक अटूट प्रतिबद्धता रखते हैं। इनमें से प्रत्येक अपने मूल शोध, सैद्धांतिक निर्माण, और समाजशास्त्रीय परिवर्तन के लक्ष्यों के विभिन्न वस्तुओं, आयामों और प्रश्नों से प्रेरित हैं। प्रत्येक की वैचारिक पहचानों, मानक संकल्पों, और राजनैतिक स्थितियों में भी भिन्नता है। इस अनुभाग में विविधताओं का एकत्रीकरण इस बात की पुष्टि करता है कि लेखक ऐतिहासिक वर्तमान की महान समस्याओं के क्षेत्रीय पठन से अपने विचारों का निर्माण करने में, अपनी स्वयं के व्याख्यात्मक सामाजिक सिद्धांतों के निर्माण में आगे बढने में, और अपने संदर्भों के समुदायों के लिये उम्मीदों के क्षितिज को बनाने में सक्षम रहें हैं।

हालांकि, इस अनुभाग के सभी अंतर एक समान उच्च–वोल्टेज आकांक्षा के अधीन हैं, जो प्रत्येक प्रस्ताव को संरचित करती है और जो लैटिन अमेरिका के सब से चमकदार इतिहास में निहित है। प्रत्येक बौद्धिक प्रक्षेपवक्र क्षेत्रीय निरंकुशता के किसी सिद्धांत की और साथ ही लैटिन अमेरिका की सैद्धांतिक अधीनता के किसी भी सिद्धांत की जोरदार अस्वीकृति से बना है। प्रत्येक लेखक यह मानता है कि उसकी लैटिन अमेरिकी पहचान और प्रक्षेपवक्र एक सकारात्मक और विशिष्ट मूल्य है, जो वैश्विक मंच पर स्वायतत्ता का स्त्रोत है न कि विश्व समाज में सोचने और कार्य करने की स्थिति और उत्पति की सीमा। इस साझा प्रशंसा के बिना, क्षेत्रीय इतिहास में जड़ विभिन्न उद्धारवादी विरासतों से पोषित, यहां बौद्धिक प्रक्षेपवक्रों को और विचारों के संश्लेषण के साथ आने वाले विश्वास, शक्ति और मौलिकता की व्याख्या करना संभव नहीं होगा।

अंतिम बात जिसका मैं यहां उल्लेख करना चाहता हूं वह यह है कि इस अनुभाग में सम्मिलित अधिकांश लेखक Consejo Latinoamericano de Ciencias Sociales (CLACSO) के "सामाजिक सिद्धांत और लैटिन अमेरिकी वास्तविकता" (Teoría social y realidad latinoamericana) पर कार्यशील समूह का हिस्सा हैं। हमने इस बहुराष्ट्रीय सामूहिक स्थान का निर्माण किया, जो लगभग 40 शोधकर्ताओं को एक साथ लाता है, जिसे वर्तमान में जोस मोरिसियो डूमिंग और मेरे द्वारा समन्वित किया जा रहा है। यह लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्र और सामाजिक विज्ञानों में वर्तमान कालीन स्वायत सैद्धांतिक उत्पादन की कमी से उबरने का इरादा रखता है। इस आकांक्षा को आगे बढाने के लिये, विभिन्न देशों और क्षेत्रीय ब्लॉकों के मध्य विश्व समाजशास्त्र में समतावादी सैद्धांतिक संवाद स्थापित करना आवश्यक है। इस लैटिन अमेरिकी अनुभाग को बनाने के लिये वैश्विक संवाद के सह–संपादक क्लॉस डोर्रेस का उदार निमंत्रण सांसारिकीकरण की नयी भावना का एक अद्भुत उदाहरण है जिसकी हमारा ऐतिहासिक समय अविलंब मांग करता है। ■

सभी पत्राचार इस्टेबन टोरस को <esteban.torres@unc.edu.ar> पर प्रेषित करें।

> एक विश्व प्रतिमान: समाजशास्त्र के लिये एक नया प्रस्ताव

इस्टेबन टोरस्, यूनिवर्सिडाड नेसिनल दे कोरडोबा–कोनिसेट, अर्जेंटीना द्वारा

इक्कीसवीं सदी की शुरूआत के बाद से विश्व समाज में प्रमुख सामाजिक परिवर्तन उन दो प्रतिमानों को समाप्त कर रहें हैं जिन्होंने समाजशास्त्र पर इसकी उत्पत्ति से ले कर आज तक राज किया है: आधुनिक प्रतिमान और आधुनिकता–विरोधी उत्तर–आधुनिक प्रतिमान। यह अंक एक प्रतिमान परिवर्तन का आह्वान करता है। मेरा प्रस्ताव एक नये, वैज्ञानिक रूप से तैयार, उत्तर–आधुनिक कार्यक्रम का सूत्रपात करता है जिसे "विश्व प्रतिमान" (WP; *paradigma mundialista*, या स्पेनिश में PM)[1] कहा गया है। यह बौद्धिक आकाशगंगा विश्व समाज, विश्व सामाजिक परिवर्तन, और विश्व समाजशास्त्र में के एक नये विचार को लाती है। मै उनमें से कुछ तत्वो ंकी यहां समीक्षा करूंगा।

> कोविड–19 के मद्देनजर सांसारिकीकरण

लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्र में होने वाले प्रमुख परिवर्तन दो प्रकार के समकालिक संकटों की प्रतिक्रिया हैं: (1) नवउदारवाद का उग्र संकट, और (2) समाजशास्त्र और ऐतिहासिक समाजों के स्वयं के द्वारा कल्पित समाज के विचार का उभरता संकट। राज्य पुनर्केंद्रीकरण की विश्वव्यापी प्रक्रिया के कारण पहला संकट तेज हो गया है; और दूसरा, *मानसिक और बौद्धिक सांसारिकीकरण* की अप्रत्याशित प्रक्रिया से। जैसा कि लैटिन अमेरिका में देखा गया है, दोनों संकट, और साथ ही यहाँ उल्लेखित राज्य और सांसारिकीकरण की प्रक्रियाएं 2008 के वैश्विक वित्तिय संकट के प्रभावों, लैटिन अमेरिका में नीचे से उपर के क्षेत्रीय एकीकरण की अंतिम लहर (2003–2015) और कोविड–19 महामारी की वर्तमान लहर के कारण गहरी हो गई हैं। यदि नवउदारवाद का संकट आधुनिक–विरोधी उत्तर–आधुनिक प्रतिमान पर नकारात्मक और आधुनिक प्रतिमान पर सकारात्मक प्रभाव डालता है, समाज के विचार के संकट ने दोनों को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है, यद्यपि आधुनिक प्रतिमान को अधिक निर्णायक रूप से। ये जिस नवीनता को प्रस्तुत करता है और सामाजिक निर्णयाकता के लिये इसकी क्षमता को देखते हुये, मैं बाद वाले पर ध्यान केंद्रित करूंगा।

कोविड–19 महामारी मानवता के इतिहास में पहली बार मानसिक और बौद्धिक सांसारिकीकरण की एक अति–त्वरित प्रक्रिया को पैदा करने वाली एक मुख्य घटना है। इस प्रक्रिया में कम से कम तीन केंद्रीय तत्व हैं: (1) एक एकीकृत विश्व समाज का प्रारंभिक विचार जो राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक क्षेत्रों की समग्रता को जोड़े; (2) राष्ट्रों और क्षेत्रों के बीच असमानताओं के अस्तित्व को दर्ज करना; (3) एक अंतर्ज्ञान या पुष्टि कि विश्व समाज न सिर्फ आधुनिक है या "आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में" है।

ऊपर उल्लेखित सांसारिकीकरण की प्रक्रिया आधुनिक या उत्तर–आधुनिक आधुनिक–विरोधी प्रतिमानों की बढ़ती थकावट शिथिलता को प्रदर्शित करती है। दोनों इस आधार से शुरू होते हैं, सामान्य ज्ञान बनाते हैं कि समाजशास्त्र के संदर्भ का ढांचा राष्ट्रीय समाज है। न सिर्फ राष्ट्रीय समाज को कोई भी विचार, परंतु एक स्व–संदर्भित और प्रतिबंधात्मक दृष्टि जो–अपने वैचारिक रूपांतरों के साथ–पहली औद्योगिक क्रांति के बाद से ही वैश्विक उत्तर से फैल गयी है। अपने सबसे परिष्कृत संस्करणों में, राष्ट्रीय समाज का यह विचार तीक्ष्ण और चिंतनशील सार्वभौमिकता में लपेटा गया है जिसने परीधिय देशों में अपने ऐतिहासिक समाजों का गुणगान करने के लिये शिक्षाविदों के द्वारा सामूहिक रूप से इसके आत्मसातीकरण में मदद की। आधुनिक और उत्तर–आधुनिक प्रतिमानों दोनों में विभिन्न प्रकार के पद्धतिशास्त्रीय, मीमांसात्मक और सैद्धांतिक राष्ट्रवाद निहित हैं। विश्व समाजशास्त्र में वैश्वीकरण की वर्तमान पश्चिमी सिद्धांतों की विशाल संख्या इस प्रतिबंधात्मक ढांचे के अंदर आती हैं।

आधुनिक और उत्तर–आधुनिक आधुनिकता–विरोधी दोनों प्रतिमानों की बढती हुयी अपर्याप्तता न केवल उल्लेखित दो संकटों में स्पष्ट है। यह लैटिन अमेरिका में समाजशास्त्र के पुर्नगठन की एक ऐतिहासिक प्रक्रिया द्वारा और और आंशिक रूप से विश्व समाजशास्त्र, जो 1980 के दशक में शुरू हुआ, द्वारा त्वरित की गयी है। यह पुनर्गठन समाजशास्त्र और अतिरिक्त–शैक्षणिक राजनीतिक प्रथाओं के मध्य भौतिक अलगाव और समाजशास्त्रीय प्रथाओं के वैज्ञानिक, समालोचनात्मक

> >

"कोविड–19 महामारी मानवता के इतिहास में पहली बार मानसिक और बौद्धिक सांसारिकीकरण की एक अति–त्वरित प्रक्रिया को पैदा करने वाली एक मुख्य घटना है।"

और राजनीतिक इंजनों के मध्य एक बौद्धिक अलगाव के साथ जुडा हुआ है। इस अपयुग्मन प्रक्रिया ने राजनीतिक अभिनेताओं के लिए उपलब्ध बौद्धिक संसाधनों को कम कर के विश्व समाजशास्त्र के वैज्ञानिक अपघटन और राजनीतिक शक्तिहीनता का गहरा कर दिया है।

> विश्व प्रतिमान की वैज्ञानिक परियोजना

इस स्थिति का सामनाकरने के लिये, प्रगतिशील और वामपंथी समाजशास्त्रों को उनके आधुनिक केंद्र को पुनः व्यवस्थित करने की और उसी समय, इससे एक नये *विश्व प्रतिमान* (डबल्यू.पी.) की ओर जाने की आवश्यकता है। डबल्यू. पी. समाजशास्त्र की एक अवधारणा को *एक स्थानीय और बहु–स्थानीय सामाजिक–वैज्ञानिक बल* के रूप में परिचय देता है, *जो विश्व समाज के परिवर्तन की ओर उन्मुख* है। यह प्रतिमान एक नये उत्तर–आधुनिक वैज्ञानिक परियोजना, वैज्ञानिक और समालोचनात्मकता,और समाजशास्त्रीय सिद्धांत और अनुसंधान के राजनीतिक नाभिक के बीच फिर से एक नये जुडाव के मॉडल, और समाजशास्त्रीय और राजनीतिक प्रथाओं के बीच एक नयी मध्यस्थता की मांग करता है। मैं डबल्यू.पी. के पहले घटक पर ध्यान केंद्रित करूंगा: वैज्ञानिक परियोजना, जो सांसारिकीकरण के सिद्धांत, स्थानीयकरण के सिद्धांत, और ऐतिहासिकीकरण के सिद्धांत के मध्य द्वन्द से सामने आती है।[2] सांसारिकीकरण का सिद्धांत यह मानता है कि समाज का पहला उपस्तर राष्ट्रीय नहीं अपितु सांसारिक है। यह एक क्रांतिकारी आधार है जो आधुनिक और उत्तर–आधुनिक आधुनिकता–विरोधी प्रतिमानों के नाभिकीय स्थानिक समीकरणों को पलट देता है। सांसारिकीकरण सिद्धांत विश्व समाज के एक विचार को एक बेहतर इकाई के रूप में रेखांकित करना संभव बनाता है जो तीन प्रणाली गत स्तरों के बीच अंतक्रिया से प्रस्फुटित होता हैं: (1) अविभाज्य और अलघुकरणीय के रूप में देखे जाने वाले राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक क्षेत्रों के मध्य के संबंध; (2) केंद्रिय–परीधिय संबंध; और (3) आधुनिक और गैर–आधुनिक के मध्य के संबंध।

स्थानीयकरण के सिद्धांत को विश्व समाज के संदर्भ के एक बिंदु के रूप में स्थानीयकरण की मान्यता की आवश्यकता है। डबल्यू.पी. के लिये, विश्व समाज एक असमान सामाजिक गठन है, साथ ही वह स्थानीय और बहुस्थानीय है। प्रत्येक स्थानीयकरण बिंदु ऊपर उल्लेखित तीन क्षेत्रों के बीच असममित पारस्पारिकता का एक अनोखा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संक्षेपण है। जिस प्रकार से विश्व समाज अकेले स्थानीयकरण का उत्पाद नहीं है, बताये गये सामाजिक गठन की एक संपूर्ण दृष्टि और विश्व सामाजिक परिवर्तन भी ऐसा नहीं हो सकते हैं। यही कारण है कि जिन संरचनात्मक परिवर्तन के आंदोलन और कार्यक्रमों का हमें निर्माण करना है, वे ऐसे *विश्व समाजशास्त्र* को पैदा करने की मांग करते हैं जो हमारे ग्रह के सभी ऐतिहासिक स्थानीयकरणों से उत्पन्न विश्व समाज के सिद्धांतों के संवादों को एक साथ लाने के लिए नियत थे। ■

सभी पत्राचार इस्टेबन टोरस् को
<esteban.torres@unc.edu.ar> पर प्रेषित करें।

1. इस प्रस्ताव के अधिक सघन विकास के लिए देखें, टोरस, इ. (2021) *La gran transformación de la sociología* (The Great Transformation of Sociology) कोरडोबा–ब्यूनोस आयरस : एफ सी एस–सी एल ए सी एस ओ। पाण्डुलिपी प्रकाशन के लिए भेजी जा चुकी है।
2. स्थान के कारणों से और चूंकि ये अत्यन्त विध्वंसकारी तत्व हैं, हम विशिष्ट रूप से पहली दो मान्यताओं को ही संदर्भित करेंगें।

> वैश्विक समाजशास्त्र को वैश्विक आधुनिकता से जोडना

जोस मोरिसियो डोमिंग्यूज, आई.ई.एस.पी.–यू.ई.आर.जे., ब्राजील द्वारा

लैटिन अमेरिका में राजनीतिक समाजशास्त्र की एक मजबूत परंपरा है। संभवतः यह लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्र का प्रमुख पहलु रहा है, यद्यपि निश्चित रूप से एकमात्र नहीं ("संस्कृति" के साथ राजनीतिक अर्थव्यवस्था के लिये कुछ पुरानी शुरूआतें भी महत्वपूर्ण रही हैं)। राजनीतिक समाजशास्त्र को, एक उत्तर–अमेरिकी मुखाकृति के साथ, राजनीतिक विज्ञान के विशिष्ट विषयात्मक उद्भव के साथ विस्तारित और रूपांतरित किया गया गया था, जो पूर्व के अधिक सामाजिक रूप से निहित समाजशास्त्रीय विवरणो के विपरीत है। राजनीतिक समाजशास्त्र ने महत्वपूर्ण सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि का उत्पादन किया है, फिर भी –एक अधिक सामान्य सैद्धांतिक योगदान करने का उद्देश्य –कम पडता है, जैसा कि लैटिन अमेरिका के मामले में आमतौर पर होता रहा है। अर्थात्, इसके विशिष्ट राजनीतिक आयामों में आधुनिकता के विशेष विकास की चर्चा की और अवधारणा बनायी गयी, परंतु आमतौर पर विश्लेषण क्षेत्रीय स्तर पर खत्म हो गये।

> सामाजिक सिद्धांत की अनुपस्थिति

यह समझने के लिये कि लैटिन अमेरिका में इतना श्रम आधिक्य क्यों है, इसका एक उदाहरण, किव्जानो की मार्क्स की "औद्योगिक आरक्षित सेना" पर चर्चा है, जिसके फलस्वरूप "मार्जिनल पोल" बनता है। एक समय किव्जानो ने यह महसूस किया कि समस्या शायद उन्नीसवीं सदी के यूरोप में भी मौजूद थी और यह कि उत्प्रवास ने उसे हल कर दिया। परंतु उन्होंने आगे जाने की हिम्मत नहीं की (न ही मार्क्स के कुछ विचारों को चुनौती दीं)। ऐसा ही जर्मानी के "लोकलुभावनवाद" की चर्चा के लिये कहा जा सकता है, जिसमें आधुनिकीकरण ने जनता को "उपलब्ध" करा दिया, क्योंकि उन्हें अवसरवादी संभ्रांतों के द्वारा "हेरफेर" के लिये एक लोकतांत्रिक

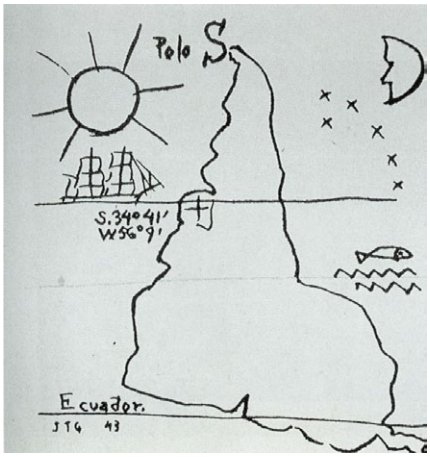

यह चित्र उरुग्वे–स्पैनिश कलाकार जोआक्विन टॉरेस गार्सिया (1943) के "अमेरा इनवर्टिडा" के इंक पेन और स्याही की चित्रकला को दर्शाता है। लैटिन–अमेरिकी महाद्वीप का औंधा चित्रण दक्षिण–अमेरिकी कला के मजबूत आत्मविश्वास का चित्रण है। श्रेयः क्रिएटिव कॉमन्स

राजनीतिक व्यवस्था के द्वारा समाहित नहीं किया गया था। यह यूरोप के बारे में और अधिक चिंतन को बता सकता था, परंतु जर्मानी (जो फासीवाद के कारण इटली से अर्जेंटीना आ गये थे) ने स्वयं को अर्जेंटीना की चर्चाओं तक सीमित रखा और बाद में अन्य लेखकों के साथ, एक समग्र रूप में, लैटिन अमेरिका तक अपने तर्क का सामान्यीकरण किया। हालांकि वे सब वहीं रूक गये। पाब्लो गोनजालेज कासानोवा और रोडोल्फ स्आवेनहैगन के द्वारा सामने रखी गयी "आंतरिक उननिवेशवाद" के बारे में संकल्पना जो देशज समुदायों पर आधुनिक और उत्तर–उपनिवेशिक राज्य के अतिक्रमण की ओर इंगित करती है, आधुनिक राज्य जिसके सामान्य लक्षणवर्णन के लिये अनुमति दे सकते थे, –वास्तव में हर जगह इस तरह से बढी थी। हालांकि उन्होंने ये निष्कर्ष नहीं निकाले। फ्लोरेस्टन फर्नांडीस ने यहाँ तक बताया कि हम दक्ष कर्मियों और संसाधनों की कमी के साथ अधिक दवाब वाले ठोस मुद्दों की कमी की वजह से सिद्धांत पर काम करने में समर्थ नहीं हैं।

लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्र और मोटे तौर पर वास्तव में इसके सामाजिक विज्ञान, सैद्धांतीकरण की गंभीर कमी से ग्रसित हैं। यदि यह सच है कि यह वर्तमान में एक वैश्विक प्रघटना अधिक हो सकती है, तो पूर्व के प्रतिबंधों के द्वारा क्षेत्र में यह समस्या अधिक बढ़ती है। यह मुद्दा और अधिक जटिल बन जाता है जब हम अनुसंधान रणनीति के संदर्भ में सिद्धांत और आनुभाविक यथार्थ के संबंध पर चर्चा करते हैं। क्या हमें विशिष्ट से शुरू करके सामान्य की ओर बढना चाहिये? या लैटिन अमेरिका सहित क्या यह आवश्यक है कि – इस उपमहाद्वीप और साथ ही वैश्विक आधुनिकता के अन्य क्षेत्रों से संबंधित सामान्य सैद्धांतिक समस्याओं से प्रारम्भ करना होगा? कई दशक पहले, लियोपोल्डो जीआ ने देखा कि जहाँ यूरोपीय लोग और उत्तरी अमेरिकी लोग– अपनी सार्वभौमिकता को मान कर चले और उन्होंने अपनी विशिष्टता को तुरंत ही अवधारणा के रूप में सामान्यीकरण के योग्य देखा, लैटिन अमेरिकीयों को अपनी विशिष्टता से प्रारम्भ करना पडा क्योंकि उनके सार्वभौमिकरण को सिद्धांतिक रूप से नकार दिया गया था।

> राजनीतिक आधुनिकता का सिद्धांत

यदि यह अतीत में सच था, तो इसका वर्तमान में कोई अर्थ नहीं है। यद्यपि, आधुनिकता और इसकी उत्पत्ति के संबंध में असहमतियां हैं, कोई अब यह नहीं मान सकता कि पश्चिम अपनी सार्वभौमिकता में आधुनिकता का वाहक है। कुछ लोग औपनिवेशिक और उत्तर–औपनिवेशिक आधुनिकताओं, उलझी हुई आधुनिकताओं, बहुल आधुनिकताओं, आदि के बारे में बोलेंगें। इसके अलावा, लैटिन अमेरिका सहित सब

> >

तरफ ज्ञान का एक संचयन है, सैद्धांतिक भी, जो हमें उच्चतम स्तर पर सिद्धांत के साथ शुरू करने की अनुमति देता है। यह लैटिन अमेरिका के लिये भी उतना सच है जितना यह यूरोप, अफ्रीका, अमेरिका और एशिया के लिये सच है। यह आवश्यक है कि हम थोडा बहुत संदर्भ–संवेदनशील हो परंतु समस्या यह है कि हमारा संदर्भ या वैश्विक है या होना चाहिये। निश्चित रूप से यह मामला है यदि हम किसी विशिष्ट स्थान पर पैदा होने और/या लालन–पालन के तत्काल अनुभव से चिपके हुये नहीं हैं – यह वैसे भी संपूर्ण सामाजिक विज्ञानों के लिये एक अच्छी रणनीति नहीं है।

इसी ने मेरे समाजशास्त्रीय प्रयासों को निर्देशित किया है। लैटिन अमेरिकी विचारधारा से परिचित और "ऐतिहासिक भौतिकवाद" के किसी प्रकार से जुडे हुये, मैने निश्चय किया कि मुझे "संरचना और एजेंसी" और साथ साथ सामाजिक जीवन में स्थायित्व और परिवर्तन के बारे में पूरी बहस को दोहराने की जरूरत है। इस तरह मैं, उद्विकास और इतिहास के दृष्टिकोण सहित, "सामूहिक वैषयिकता" और "सामाजिक रचनात्मकता" के सिद्धांत पर पहुंचा। मैंने आधुनिकता के मुख्य काल्पनिक और संस्थागत तत्वों के बारे में अपने ज्ञान को गहरा किया और फिर लैटिन अमेरिका की वास्तविकताओं तक लौट कर आया जिसका मैनें "आधुनिकता के तीसरे चरण" के रूप में विश्लेषण किया। यह वैश्विक आधुनिकता की चर्चाओं में विस्तारित हो गया – जो दुनिया भर में अपने विस्तार में एकात्मक, विषमजातीय और संकर है। आखिरकार मैनें वह क्षेत्र लिया जहाँ आज मेरे लिये जहां हमारे सभ्यागत और उद्धारविषयक मुददेः आधुनिकता का राजनीतिक आयाम–रणनीतिक रूप से स्थित हैं। उसी समय, मैंने निश्चय किया कि यह उचित समय है जब मैं मार्क्स के "प्रतिपादन की पद्धति" पर ध्यान दूँ, जिसको राजनीतिक आयामों पर लागू करने के लिये मैं लंबे समय से चिंतित था। इसमें व्यापक अन्वेषण और श्रेणियों का एक व्यवस्थित संगठन निहित था जो राजनीतिक आधुनिकता के साथ इसकी गतिशील प्रवृतियों की स्थापना को पूरे तरीके से ढंक सकता था।

इसने मुझे वैश्विक पहुँच में राजनीतिक आधुनिकता के एक श्रेणीगत प्रतिपादन, समालोचनात्मक सिद्धांत के एक विशिष्ट स्वरूप के अंदर, को प्रस्तावित करने के लिये प्रेरित किया। मैंने दुनियाभर के ऐतिहासिक घटनाक्रमों को सम्मिलित करने के प्रयास किये हैं परंतु जो वास्तव में मायने रखता है वह श्रेणीगत विश्लेषणात्मक व्यवस्था में इनका निर्वाह है। मेरा विश्लेषण, इस गतिशीलता का उत्पादन और व्याख्या करने वाले तंत्र के साथ, कल्पनायें और संस्थायें दोनों कैसे खुलती हैं, को संबोधित करता है। वामपंथी–स्वरूप, नागरिकता–स्वरूप, राज्य, स्वायत्तीकरण, राजनीतिक व्यवस्थायें और राजनीतिक शासन, एक कल्पनायोग्य आमूलचूल लोकतंत्र सहित, अमूर्त और मूर्त के बीच संबंध, साथ ही उदारवाद के विस्तारित और प्रतिबंधात्मक क्षण, सैद्धांतिक दृष्टिकोण के केंद्र को प्रस्तुत करता है जिसे मैं विकसित कर रहा हूं। राज्य की मजबूती से संबंधित रूझानों की पहचान, विश्लेषण, स्पष्टीकरण और प्रक्षेपणों और नागरिकों के बढते हुये राजनीतिक स्वायत्तीकरण को इन श्रेणियों में जोड़ दें। मैं हाल ही में "वास्तविक समाजवाद" की जांच करता रहा हूं, जिसे मैं "अधिनायकवादी सामूहिकता", एक असली, हालांकि समाजवादी, सामाजिक गठन, आधुनिकता पर परजीवीरूपी नहीं, के रूप में परिभाषित करता हूं।

आधुनिकता की इस सामान्य सैद्धांतिक समझ से संबंधित कुछ सामग्री प्रकाशित हो चुकी है और कुछ वर्षों में, मैं राजनीतिक आधुनिकता के अधिक एकीकृत सैद्धांतिक विवरण का निर्माण करने का इरादा रखता हूँ। यह वैश्विक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण का एक हिस्सा है, जिसमें कुछ लैटिन अमेरिकी पृष्ठभूमि है, जो सार्वभौमिकीकरण के – सैद्धांतिक और स्वयंसिद्ध महत्वाकांक्षाओं द्वारा – प्रभावित है। ■

सभी पत्राचार जोस मोरिसियो डोमिंग्यूज को <jmdomingues@iesp.uerj.br> पर प्रेषित करें।

> सिद्धांत का ऐतिहासिकीकरण : लैटिन अमेरिका के लिये एक प्रस्ताव

विवियन बार्चेट–मार्क्वेज, एल कोलेजिओ दे मैक्सिको, मैक्सिको द्वारा

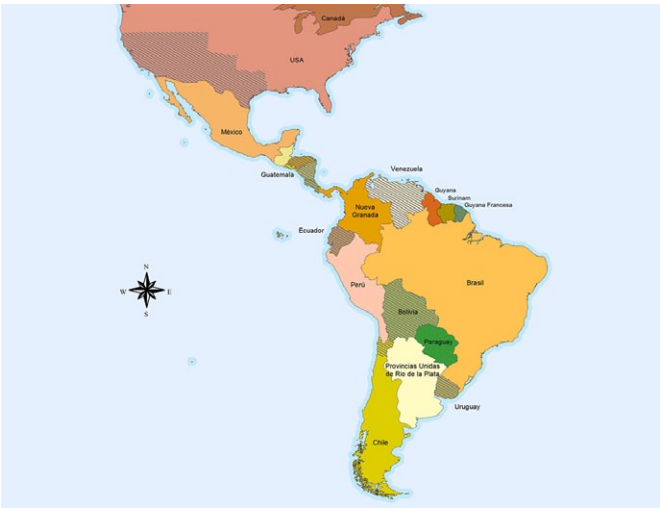

1810 और 1860 के मध्य मुख्य क्षेत्रीय परिवर्तन हुए : आठ राज्यों का जन्म हुआ (निकारागुआ, कोस्टा रिका, अल सल्वाडोर, इक्वाडोर, वेनेजुएला, बोलीविया, पैराग्वे, उरुग्वे), और मैक्सिको ने के लिए अपने उत्तरी क्षेत्रों को संयुक्त राज्य अमेरिका खो दिया। श्रेय: क्रिएटिव कॉमन्स

अतीत में, सामाजिक सिद्धांत, जैसा कि केंद्रीय (परीधिय देशों के विपरीत) देशों में अभ्यास किया जाता है, की एक स्थिर प्रकृति रही हैं, जो व्यापक संघर्ष की अनुपस्थिति के रूप में और संघर्ष को अव्यवस्था के एक सबूत के रूप में सामाजिक व्यवस्था को देखने के अर्थों में है। इसने परिकल्पना–निगमनात्मक तार्किकता के आधार पर स्थिर सामाजिक निरंतरताओं की भविष्यवाणी करने के द्वारा "वैज्ञानिक" बनने का प्रयास भी किया है। यहां तक कि समाजशास्त्र के जनकों ने भी औद्योगिक क्रांति के आघात वाले परिवर्तनों को महसूस किया था। उन्होंने इन परिवर्तनों को प्रस्थान के एक निश्चित बिंदु और आगमन के दूसरे निश्चित बिंदु के बीच अंतर के रूप में और उसके मध्य में एक कम सैद्धांतिक प्रक्रिया के साथ, चित्रित किया: अर्थात, *जैमिनशैफ्ट* से *गैसेलशैफ्ट* तक की निरंतरता।

इस सामान्य प्रारूप पर आधारित, लैटिन अमेरिकी देश, या तो "परंपरा" से "आधुनिकता" की ओर या अविकसित (या कम विकसित या विकासशील) से "विकसित" के कुछ पास बढते हुये, अधूरे और अपूर्ण दोनों के रूप में दिखते हैं। ''बीच की'' ऐतिहासिक प्रक्रिया व्यापक रूप से वर्णित थी, परंतु समग्र रूप से इसका सैद्धांतिकरण नहीं हुआ था।[1] किसी भी मामले में अपवादात्मक रूप से यह रहा है कि लैटिन अमेरिका विश्व बाजार ताकतों (या साम्राज्यवाद, या उपनिवेशवाद) के कारण असमान और अपूर्ण तरीके से "विकसित" हुआ था, जिसमें स्वतंत्रता के बाद के दो शतकों में सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में लोगों के द्वारा निभाई गयी भूमिका का बहुत कम प्रभाव था।

> लैटिन अमेरिका में सामाजिक व्यवस्था का ऐतिहासिक निर्माण

मै यह प्रस्तावित करना चाहता हूं कि एक क्षेत्र के रूप में, लैटिन अमेरिका को, अर्थपूर्ण रूप से सैद्धांतीकृत किया जा सकता है। ऐसा तभी हो सकता है जब हम इसकी ऐतिहासिकता को पहचाने, और इस प्रस्तावना से प्रारम्भ करें कि किसी भी भौगोलिक परिदृश्य में सामाजिक व्यवस्था विकट रूप से जटिल, ऐतिहासिक रूप से निर्मित, और अनिश्चित सामाजिक प्रक्रियाओं का उत्पाद होती हैं। लैटिन अमेरिकी सामाजिक व्यवस्थाओं के विश्लेषण का एक प्रमुख प्रश्न इस प्रकार ऐतिहासिक रूप से निर्मित संस्थाओं के संबंध में एजेंसी से सम्बंधित है, और वहां से प्रश्न उभरते हैं: (1) कौन क्रिया करता है और किसके फायदे के लिए (व्यक्तियों, पितृसत्तात्मक परिवारों, देशज समुदायों या पूंजीवादी मुनाफों को अधिकतम लाभ पहुंचाने वालें); और (2) किन गतिशील सिद्धांतों द्वारा संचालित होते हैं (प्रणालीगत, यांत्रिकीय, या एजेंटीय)। इन प्रश्नों का उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि *कौन सा सैद्धांतिक लेंस* उन्नीस लैटिन अमेरिकी देशों के एक समूह को, पृथक मामलों के विपरीत, व्यवस्थित रूप से तुलना करने योग्य में परिवर्तित कर सकता है।

इस संक्षिप्त लेख में, मैं सिर्फ रूप रेखा बता सकता हूं कि इस दिशा में मेरा काम इन प्रश्नों का उत्तर देने में कैसे योगदान दे सकता है।[2] सामान्य सैद्धांतिक तर्क को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है: *लैटिन अमेरिका में ऐतिहासिक रूप से जो उत्पादित किया जाता रहा है वो मिश्रित, और अक्सर नियमों, मानदंडों, और प्रतीकों के विरोधाभासी तारामंडलों से निर्मित स्थानीय–सामयिक रूप से सीमित सामाजिक व्यवस्थाओं की एक श्रृंखला है, जो कि वैकल्पिक रूप से या तो आधिपत्यवादी बन गयी है, या जिसे व्यापक रूप से साझा किये जाना या लागू किया जाना बंद हो गया है।* अलग शब्दों में कहें तो, हम कह सकते हैं कि इन प्रक्रियाओं के विशिष्ट परिणाम संस्थाकृत, अ–संस्थाकृत, और पुनः–संस्थाकृत हो गए हैं, ऐसा तब हुआ जब वे भूराजनीतिक और बाजार प्रतिस्पर्धा की एक अतिव्यापी अंतर्राष्ट्रीय प्रकिया के हिस्से के रूप में विदेशी राज्यों और विश्व निगमों की घुसपैठ का सामना कर रहे थे।

इस दृष्टिकोण से, लैटिन अमेरिका का स्वतंत्रता–पश्चात् का इतिहास संस्थागत कर्ताओं के बीच वैकल्पिक संघर्षपूर्ण और सहकारी परस्पर क्रिया द्वारा संचालित रहा है, जिसका उद्देश्य विभिन्न समय/स्थानों

> >

पर अधिनायकवादी संस्था(ओं) से घनिष्टता से जुडे अभिजनों के धन, सत्ता, और शक्ति को बढाना था। यह उन तरीकों से भी संचालित होता है जिनमें दलित समूहों ने अपने दैनिक जीवन को चिन्हित करने वाली घटनाओं पर प्रतिक्रिया दी है, और बदले में, इन प्रक्रियाओं को प्रबलित या संशोधित किया है। ग्राफ 1 इन ऐतिहासिक विकासों को अमूर्त रूप में प्रदर्शित करता है, जिनमें संबंधित अनुभवजन्य तथ्यों को उसी रूप में अंकित किया गया है जैसे कि वे क्षेत्र के विभिन्न देशों में घटित हुये हैं, परंतु साथ ही जैसे उन्होंने अपेक्षाकृत स्थिर सामाजिक व्यवस्थाओं के ऐतिहासिक रूप से आवर्ती प्रकारों को साझा किया है। इस दृष्टि से, न केवल प्रमुख संस्थागत कर्ताओं, बल्कि लोगों, समुदायों और संगठनों ने भी, अपने जीवन को फिर से बनाने और अपने अनुभवों को अर्थ देने के उनके प्रयासों के माध्यम से प्रत्येक दिन सामाजिक व्यवस्थायें निर्मित की हैं। अन्य स्थानों की तरह ही लैटिन अमेरिका में, मोटे तौर पर, ये व्यवस्थायें, मतैक्य और समतावादी नहीं रही हैं जिससे प्रगतिशील परिवर्तन के लिये अनेक अवसर छूट गये या प्रभावहीन हुये। परंतु यह सच्चाई है कि यूरोकेंद्रित मिथकों से दूर, हम इसी यथार्थ का सैद्धांतीकरण, और व्यवस्थित रूप से अन्वेषण, कर सकते हैं और करना चाहिये।

इस सामान्य प्रक्रिया को आनुभाविक रूप से देखने के लिये, चल रहा अध्ययन राज्यों और अन्य संस्थागत व्यवस्थाओं, शक्तिशाली सामाजिक समूहों, पूंजीवादी निगमों, और बाह्य राज्यों के मध्य समय के संबंधों पर ध्यान केंद्रित करता है, जैसा कि ग्राफ 1 में दिखाया गया है। आधिपत्य प्राप्त करने के लिये, राज्य अपने क्षेत्रों[3] पर हावी रहने, वित्तिय करदान क्षमता को प्राप्त करने, और अपनी संप्रभुता की रक्षा करने के लिये प्रयास करते हैं। ऐसा करने में, उन्होंने अपनी जनता पर शक्ति का उतना दबाब डाला जितना वो कर सकते थे; संचयन के शासन से अपने हिस्से को निकाला; और उच्च बाह्य शक्तियों को रियायतें दी। स्पष्ट रूप से ये वे स्थितियां हैं, जिनमें लैटिन अमेरिका के राज्यों ने अन्य के मध्य संस्थाओं के रूप में कार्य किया है। कैथोलिक चर्च, द लैटीफुडिंयों[4] या सैन्य बलों की तुलना में बहुत कम शक्ति और सत्ता के साथ और आजादी के युद्धों में गहन रूप से ऋणग्रस्त होने के बावजूद उन्होंने ऐसा किया है और ऐसा उन्होंने लगातार आर्थिक और तकनीकी रूप से अधिक उन्नत देशों के हस्तक्षेप के निरंतर खतरे के अंदर रह कर किया है।

> निष्कर्ष

इस दृष्टिकोण से देखने पर, 1810[5] के बाद से लैटिन अमेरिका के सामने आने वाली समस्यायें, 1500 के बाद मॉडल यूरोपीय देशों[6] के द्वारा अनुभव की गयी समस्याओं से सुस्पष्ट रूप से अलग रहीं हैं, इन देशों के साथ लैटिन अमेरिकी देशों की तुलना, अधिकतर प्रतिकूल और हमेशा ही की जाती रही है। इस दृष्टिकोण को अपना कर, हम लैटिन अमेरिका की सामाजिक व्यवस्था के बनने और बिगडने का सैद्धांतीकरण कर सकते हैं। ऐसा यूरोपीय–केंद्रित भावी सार्वभौमिक सिद्धांतों के संदर्भ में नहीं, बल्कि 1810 के बाद से रियो ग्रांड[7] से लेकर टीयरा डेल फयूगो तक ऐतिहासिक गतिशीलता से निर्मित, रूपांतरित और रोक दिये गये तुलनीय और ऐतिहासिक रूप से बदलते उदाहरणों के रूप में किया जा सकता है।■

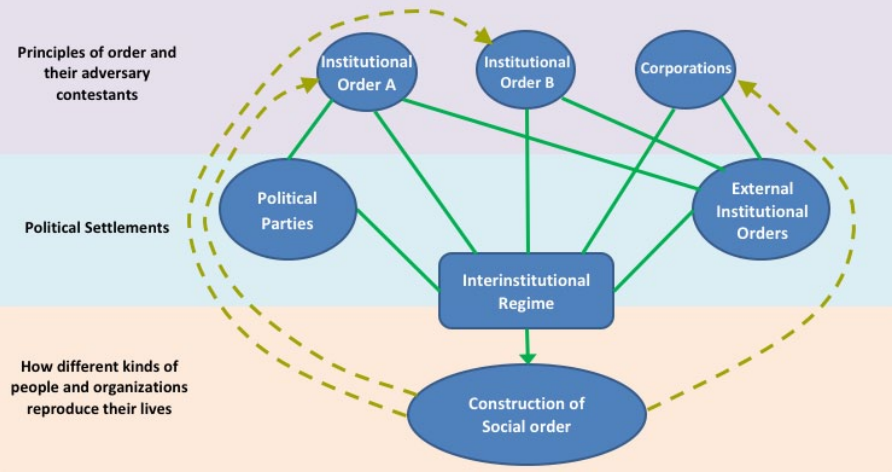

ग्राफ 1. श्रेयः विवियन बार्चेट–मार्क्वेज

सभी पत्राचार विविआने ब्रचेट मार्क्युज को <brachet@colmex.mx> पर प्रेषित करें।

1. कार्डोसा और फलेटो, वालरस्टीन और अरीघी, साथ ही बोसेरूप और हिर्शमैन जैसी निर्भरता और विश्व प्रणाली सिद्धांतकारों के अलावा।
2. वर्तमान में प्रगति में इस पुस्तक के जुलाई 2021 तक पूरी होने और 2022 तक अंग्रेजी और स्पेनिश भाशा दोनों में प्रकाशित होने की उम्मीद है।
3. हिंसा के वैद्य साधनों के एकाधिकार के माध्यम से अपने क्षेत्र के प्रभुत्व वाली सस्थाओं के रूप में वेबर के राज्य के विचार को यहां ऐतिहासिक रूप से समस्यात्मक तरीके से यहां लिया गया हैं, ना कि परिभाशात्मक रूप से।
4. लैटीफुडियो एक स्पेनिश भाषा का शब्द है जिसका अर्थ बडी जमीन संपत्तियां है।
5. मई 1810 ब्यूनस आयर्स और मैक्सिको में स्वतंत्रता के लिये युद्धों की शुरूआत को चिन्हित करता है।
6. तुलना को, बचे हुये 24 यूरोपीय देशों को छोडकर, ग्रेटब्रिटेन, फ्रांस, या परशिया तक सीमित कर दिया गया है।
7. 1848 में सयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा आधे से अधिक क्षेत्र के संयोजन के बाद रियो ग्रांडे सबसे उत्तरी सीमा बन गया।

> अन्योन्याश्रितता पर पुनर्विचार

सर्जिओ कोस्टा, फ्री यूनिवर्सिटी ऑफ बर्लिन द्वारा

अगस्त 2019 में ब्राजील के ब्रासीलिया में मार्चा दास मार्गारीदास, महिला ग्रामीण श्रमिकों का प्रदर्शन।

> दबाव में समाजशास्त्र

अपने उद्भव के उपरांत से ही, समाजशास्त्र को सतत रूप से यह साबित करना पड़ रहा है कि इसके परिणाम उपयोगी हैं और अन्य विषयों से भिन्न हैं। समाजशास्त्र उत्पत्ति के संदर्भों से और घटनाओं को प्रभावित करने वाले कारकों के अर्थ के साथ सामाजिक प्रक्रियों को जाँचने की क्षमता से अपने को भिन्न साबित किया है। हाल ही में सामाजिक रूपांतरण और शोध में हुए विभिन्न विकासों ने संरचना और अर्थों के मध्य सामंजस्य बैठाने की समाजशास्त्र की क्षमता के समक्ष चुनौती प्रस्तुत की है जिसकी मैंने कैम्पस द्वारा 2014 में प्रकाशित *Postcoloniality-Decoloniality-Black Critique: Joints and Fissures* में चर्चा की है।

सबसे पहले या तो अनुशासन को कम करने के लिए संरचनाओं (अर्थशास्त्र) के अध्ययन या सामाजिक प्रक्रियाओं (सांस्कृतिकता) के प्रतीकात्मक आयाम को पूरी तरह से जांचने तक सीमित करने के लिए समाजशास्त्र का अपना आन्तरिक झुकाव है। इन दोनों ही मामलों में समाजशास्त्र का केन्द्रीय उद्देश्य अर्थात, समाज. अन्योन्याश्रित ढांचा, अर्थ और प्रतिनिधित्व. ओझल होता हुआ दिखाई देता है, जैसा हंस–जोर्ज सोएफनर एंड कार्ल लिच्तब्लाउ ने ठीक से तर्क दिया है। आर्थिकीकरण और सांस्कृतिकरण की प्रवृत्तियों के बीच में फंसा, समाजशास्त्र समकालीन विश्व के विश्लेषण की चुनौतियों का सामना करता है, जिसकी विश्व–युद्ध पश्चात् के समाजशास्त्रियों द्वारा परिकल्पित आधुनिक समाज के मॉडल से बहुत कम समानताएं है। समाजशास्त्र में आधुनिकता एक ऐसी दुनिया से मेल खाती है जिसकी व्यवस्था सुरक्षित सीमाओं और स्थिर पहचान पर टिकी है: पश्चिम और गैर–पश्चिमी, महिला और पुरुष, देशी और विदेशी, आधुनिक और पारम्परिक, जर्मन, तुर्की और जर्मन–तुर्की।

रूपांतरण का दूसरा सेट सामाजिक प्रक्रियाओं और सामाजिक जीवन के वैश्वीकरण से सम्बंधित है। समाजशास्त्र में अभी भी एक ऐसे वैश्विक समाज को समझने के उपकरणों का अभाव है जो राष्ट्रीय के जोड़ से कहीं अधिक है। इसके अतिरिक्त, यह तथ्य कि आधुनिकता अब 'पश्चिमी शक्तियों' की तरह की नहीं है विषय के लिए समस्या है। समाजशास्त्र में आधुनिकता की अवधारणा में पश्चिमी प्रभुत्त्व है जैसा उत्तर–औपनिवेशिक सिद्धान्तकारों ने बड़े पैमाने पर चर्चा की है। तथापि यह परिपेक्ष्य न तो कल्पना करता है न ही समझने की अनुमति देता है, उदहारण के लिए, कि बॉलीवुड, हॉलीवुड, और टेलीनोवल्स के परस्परछेदन इक्कीसवीं सदी के रुमानीवाद को आकारित करेंगे अथवा कि लैटिन अमेरिका चीन की परिधि बनने की तरफ अग्रसर हो सकता है। वैश्विक सामाजिक प्रक्रियाओं को संबोधित करने के समाजशास्त्र के प्रयास अधिकांश रूप से अज्ञात विश्व की बजाय राष्ट्रीय समाजशास्त्र की श्रेणियों से संबंधित रहे हैं। इस तरह वैश्वीकरण द्वारा समाज को विश्व समाज और आधुनिकता द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है। हालाँकि ये नई अवधारणायें अपनी राष्ट्रीय विशेषताओं को सख्ती से बरकरार रखती हैं, यद्यपि नए पैमाने पर। इसका परिणाम सही नवीन निष्कर्षों का अभाव और राष्ट्रीय सीमाओं से इतर संरचनाओं और अर्थों के अन्योन्यक्रिया को समझने में असमर्थ होना है।

तीसरा अन्तराजाति अनन्योश्रितता

> >

है। नरकेन्द्रितवाद के जमाने में गठित, समाजशास्त्र मानव समाज का सामूहिकता के रूप में प्रतिनिधित्व करना जारी रखता है जो केवल आसपास के परिवेश का उपयोग करते हैं। यह पोस्टह्यूमन स्टडीज में बौद्धिक प्रगति के तीन दशकों बाद विरोधाभास है जिसमें पेड़–पौधों, जानवरों, आत्माओं, साथ ही साथ कलाकृतियों सहित मानव और गैर–मानव प्राणियों में अन्योन्याश्रितता के जाल पर प्रकाश डाला गया है। चूँकि यह अपने वातावरण से विलग समाजों का विश्लेषण करता है और संबंधों के उस मकड़जाल को नजरअंदाज करता है जो मनुष्यों को अन्य जीव स्वरूपों (जैसे कि हमारे शरीर, पौधों और पशुओं में रहने वाले वायरस और बैक्टीरिया जिनके साथ हम ''अन्तरा– क्रिया'' और अंतर्क्रिया करते हैं) से पेचीदगी से जोड़ता है, समाजशास्त्र अंतरजातीय अनन्योश्रितता में संलग्न महत्वपूर्ण (और घातक) प्रक्रियाओं को समझने में सक्षम नहीं है। यह वर्तमान कोविड–19 की महामारी में विशेष तौर पर स्पष्ट हो गया है जैसा कैथरीन प्राइस ने 2020 में *पोस्टडिजिटल साइंस एंड एजुकेशन* जर्नल में प्रकाशित लेख "When Species and Data Meet" में दर्शाया है।

> लैटिन अमेरिकी योगदान

लैटिन अमेरिका में समाजशास्त्रीय परम्परा और वहाँ विकसित विचारों की विभिन्न धाराएं समाजशास्त्र की इन चुनौतियों को दूर करने में अपना मौलिक योगदान और चिंतन प्रदान करती है।

लैटिन अमेरिका के समाजशास्त्र में कम से कम 1950 के दशक के बाद से संरचनाओं, सामाजिक अर्थों और प्रतिनिधित्व के मध्य संबंधों पर शोध किया गया है। समाज विज्ञान की शब्दावली में 'इंटरसेक्शनलिटी' के प्रवेश के कई वर्षों पूर्व, रोडोल्फो स्टैवेनहजेन, फ्लोरिस्टन फर्नांडिस और हेलेहिथ सैफियोटी जैसे सामाजिक वैज्ञानिकों ने अध्ययन किया कि नृजातीयता और वर्ग. जाति और वर्ग. लिंग और वर्ग किस किस प्रकार से सामाजिक स्थानों के गठन के लिए प्रतिच्छेद करते हैं जो सामाजिक संरचना में पद स्थान के साथ साथ आत्म–प्रतिधिनित्व एवं क्रिया को व्यक्त करते हैं। 2018 में रॉटलेज द्वारा प्रकाशित खंड *Global Entangled Inequalities. Conceptual Debates and Evidence from Latin America* में अपने आलेख में अर्जेंटीनियन समाजशास्त्री एलिजाबेथ जेलिन इन बहसों को पुनर्निर्मित और अद्यतन करती हैं।

सामाजिक जीवन और सामाजिक प्रक्रिया के वैश्विक होने के क्षेत्र में, निर्भरता के सिद्धान्तकारों और उनके उत्तराधिकारियों ने विश्व के अलग–अलग क्षेत्रों की आर्थिक संरचनाओं और सामाजिक पैटर्न के बीच की आज की आपसी उलझनों को आलोकित किया है। उन्होंने इन्हें उपनिवेशवाद के ऐतिहासिक गठन से दासता और समकालीन वित्तीय पूंजीवाद तक देखा है, जैसा मैं 2019 में प्रकाशित *करंट सोशियोलॉजी* में अपने आलेख, "The research on modernity in Latin America: Lineages and dilemmas" में दिखाता हूँ।

समाजशास्त्र की अंतरजातीय अंतर–निर्भरता के प्रति न्याय करने के मुश्किल भरे मामले में लैटिन अमेरिका स्वदेशी परम्पराओं से जुड़े वैचारिक संसाधनों के शानदार प्रदर्शन की पेशकश करता है। इनमें से कुछ पहले से ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक रूप से प्रसारित किया जाते रहे हैं जैसे कि अमेरिंडीयन नजरिया, एडुआर्डो विवेयेरोस डी कास्त्रो के कार्य की व्यापक चर्चा और बीन विविर (अच्छी तरह से रहने वाले) जो विशेष रूप से एंडियन क्षेत्र में विकसित हुए हैं । विचार की इन धाराओं में मनुष्यों और गैर–मनुष्यों के मध्य अनन्योश्रितता को बड़े पैमाने पर इस ग्रहीय नैतिकता में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक स्तर पर भी देखा जाता है।

ये परम्पराएँ और खजाना स्पष्ट रूप से संभावनाओं की एक श्रंखला प्रदान करते हैं, लेकिन वे ये नहीं सुनिश्चित करते कि चर्चित विभिन्न स्तरों पर अनन्योश्रितता के अध्ययन को समर्पित विषय के रूप में समाजशास्त्र के आवश्यक पुनर्निर्माण में लैटिन अमेरिकन समाजशास्त्र एक सार्थक भूमिका निभाएगी। इस पुनर्निर्माण में भागीदारी सुनिश्चित में, लैटिन अमेरिकन समाजशास्त्र को इन परम्पराओं को पुनः देखना और उन्हें समकालीन सैद्धांतिक बहसों में अनुवादित करना होगा। अकादमिक और गैर–अकादमिक ज्ञान के निर्माताओं और दक्षिण एवं उत्तरी समाजशास्त्रों के मध्य नए प्रकार के सममितीय सहयोग एवं सहकार्य का सृजन भी आवश्यक है। समकालीन समाजशास्त्र के पुनर्निर्माण में लैटिन अमेरिकी योगदान की गुणवत्ता और परिणाम इन गठबन्धनों पर निर्भर करते हैं। ■

सभी पत्राचार सर्जिओ कोस्टा को
<sergio.costa@fu-berlin.de> पर प्रेषित करें।

> उपेक्षा का युग : संकटों का प्रणाली सिद्धांत

अल्दो मस्कारेनो, सेंटर दे स्टडीज पब्लिक, चिली द्वारा

श्रेयः अनस्प्लैश ली लिन।

पिछले पांच वर्षों में मेरा काम जटिल सामाजिक संकटों का एक प्रणाली सिद्धांत विकसित करने पर केन्द्रित रहा है। चूँकि, या तो संकट की अवधारणा फ्रांसिसी क्रांति के बाद की समालोचना से जुड़ी हुई थी या इसलिए कि आलोचनात्मक सिद्धांत ने अपने सैद्धांतिक और राजनीतिक व्यवहार की एक इकाई के रूप में संकट और आलोचना के अंतर को स्वीकार किया। सच्चाई यह है कि प्रणाली सिद्धांत व्यवस्थित रूप से संकट से बचने की कोशिश करता है। चूँकि स्वयं लुहमैन ने संकट को आधुनिक समाज का नकारात्मक आत्मवर्णन के रूप में समझा है, जब तक कि प्रणाली सिद्धांत हाल के प्रतिबिम्बों की संभावना तक संकट तंत्र और पर्यावरण के बीच के संबंधों से छिपा हुआ मूल्य रहा है। यद्यपि ये जटिल सामाजिक संकट इक्कीसवीं सदी के हस्ताक्षर रहे हैं।

> आधुनिक समाजों का स्याह पक्ष

पिछले दो दशकों में आधुनिक समाज का स्याह पक्ष पहले के दशकों की तुलना में विशेष नाटकीयता के साथ गुणात्मक रूप से अलग स्वर में सामने आया है। ऐसी घटनाएँ जिन्हें हम परम्परागत रूप से संकट कहते हैं वे सामाजिक विकास में अभूतपूर्व मजबूती, विस्तार और सावधिक रही हैं. । ये ऐसे समय हैं जब हम अति जटिल सामाजिक संकटों का सामना कर रहे हैं जो हमें नाटकीय रूप से यह दिखाते हैं कि आधुनिक समाजों की संस्थाएं वैश्विक अंतर्संबंधों, बहुस्तरीय दावों से भरी हुई हैं और निराश उम्मीदों को बहाल नहीं कर सकती हैं। यह कोई रहस्य नहीं है कि वैश्विक आधुनिकता विश्व समाज के हर कोने में असंतोष और विलगाव के अनुभवों का सामना करती हैं और लोगों को उन परिणामों का सामना करना पड़ता है जो कहीं अन्यत्र घटित हो रहे हैं। इस नोट में मैंने इस अविकसित काल को उपेक्षा का युग कहा है।

विश्व युद्धों की शताब्दी के धुंधलके में, होलोकॉस्ट और मानवाधिकारों के उदय से समर्थित आशा में, इस नई नेटवर्क वाले स्थानीय–पश्चात युग का पहला नाटकीय संकेत चेर्नोबिल था। और फिर उपेक्षा की विकराल सदी इस खेल में शामिल हुई। सबसे पहले हम एक विस्तारित और आत्म–सुरक्षित आधुनिकता के प्रतीकों के पतन से प्रभावित हुए, नियमित रूप से वायुयानों द्वारा किए जाने वाले विनाश को त्याग दिया। उपेक्षा के युग में ट्विन टावर के पतन का स्वागत हुआ. पिछले बीस वर्षों में कई बार, – नई सदी की शैशवास्था में–हम लंदन, मेड्रिड, पेरिस, बोस्टन पर हुए हमलों से चिंतित थे और मध्य–पूर्व, अफ्रीका, एशिया, और लैटिन अमेरिका में हुए नरसंहार और मानवाधिकारों के हमले से भी चिंतित थे। छिपने के लिए कोई जगह नहीं थी। सिर्फ घर अपेक्षाकृत सुरक्षित जगह लगता था। हालांकि 2008 के वित्तीय संकट, जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम, धार्मिक कट्टरपंथियों का विस्तार, वैचारिक संक्रमण, जेनोफोबिक लोकलुभावनवाद के उग्र रूप ने हमें सिखाया कि घर भी उपेक्षा का एक आसान लक्ष्य हो सकता है।

2008 की वित्तीय उथल–पुथल पूर्ण रूप से उपेक्षा के नेटवर्क के युग का पराभव थीः अत्यधिक आपसी जुड़ाव और अत्यधिक संरचनात्मक समरूपता ने दुनिया को बहुत अधिक संकीर्ण बना दिया और अधिक पार–लौकिक मानदंडों की चिंताओं पर ध्यान देने के लिए त्वरित किया। दुनिया के विभिन हिस्सों में अचानक और अधिक आक्रामक जलवायु परिस्थितियों में परिवर्तनों ने अंतरिक्ष और पृथ्वी के परस्पर संबंधों को दर्शाया। उन्होंने यह सवाल उठाया कि क्या सततता पर अंतर्राष्ट्रीय समझौते केवल मात्र अच्छे राजनीतिक इरादों के उदाहरण हैं या वे आदर्शवादी बाध्यकारी फैसलों से समर्थित हैं। दूसरी तरफ, पाश्चात्य जीवन के केंद्रों से सम्बन्ध के साथ धार्मिक कट्टरपंथियों के क्षेत्रीय और मजबूत विकास ने पारंपरिक नियंत्रणों की सीमाओं को स्पष्ट कर दिया है। वे विशेष रूप से युवा, उत्तर–भौतिकवाद, असंतुष्ट आबादी के साथ मानवाधिकारों के प्रेरक विमर्शों के साथ अतिक्रमणों की प्रासंगिकता को प्राथमिकता में ले आए हैं। और लोकलुभावनवाद ने शास्त्रीय वाम के अनुभवों से जैसे शावेज–मादुरो शासन से

> >

''वैश्विक आधुनिकता विश्व समाज के हर कोने में असहमति और व्यवस्था के अनुभवों का सामना करती है क्योंकि लोगों को इसके परिणाम भुगतने पड़ते हैं जो कहीं और किए जा रहे हैं। मैं इसे उपेक्षा का युग कहता हूं।''

ले पेन, ट्रम्प और बोल्सनारो से राष्ट्रवादी जेनोफोबिक जैसे दक्षिणपंथी विचारों की पुनःस्थापना करने और अलगाव के उद्देश्य से उपेक्षा के युग के नेटवर्क द्वारा स्थापित मानक दायरों का अतिक्रमण करता है जो बाहरी प्रभावों और बाहरी मांगों के कारण होता है।

> महत्वपूर्ण संक्रमणों का सिद्धांत

संभवतः भविष्य के इतिहासकार 2011 को इक्कीसवीं सदी में आधुनिकता की नई प्रामाणिक चेतना की पहली प्रतिक्रिया के वर्ष के रूप में देखेंगे। बेशक उस बिंदु से पहले वहाँ पर चेतावनी के संकेत मौजूद थे, जैसे कि पूर्व सोवियत संघ के कई देशों में रंगीन क्रांति जो 2000 में यूगोस्लाविया से शुरू हुई और 2005 में पेरिस की परिधि में हुए दंगे उनमें से कुछ हैं. लेकिन 2011 में दुनिया भर में उपेक्षा के खिलाफ सामाजिक आंदोलनों की एक गतिशील लहर देखी गई: ऑक्युपाई वॉल स्ट्रीट, इंडिग्नाडोस, मध्य यूरोप और लैटिन अमेरिका में दंगे, और निश्चित रूप से अरब स्प्रिंग सीमा को पार करने की निर्णायक अभिव्यक्तियां थीं। मध्य पूर्व से यूरोप, मध्य अमेरिका से संयुक्त राज्य अमेरिका में भारी संख्या में प्रवासन और पिछले वर्षों में लैटिन अमेरिका के विभिन्न देशों में हैती और वेनेजुएला के बिखर चुके राज्यों से पलायन इस आदर्शवादी बर्नआउट के स्वाभाविक परिणाम थे। सार रूप में कहा जा सकता है कि लोगों को केवल जीवित रहने से कोई प्रेरणा नहीं मिलती है, बल्कि आधुनिकता द्वारा स्वयं वादा की गई और फिर उपेक्षित मानदण्डीय अपेक्षाओं की पूर्ति में मिलती है।

इस प्रकार की जटिल घटनाओं का सामना करते हुए, मुझे यह लगता है कि सामाजिक प्रणालियों का सिद्धांत के अन्य दृष्टिकोणों से अलग कुछ फायदे हैं। सबसे पहले यह स्वायत्त विश्व प्रणालियों के उद्भव पर जोर देता है, जिनका नियंत्रण अक्सर मानवीय संभावनाओं और राष्ट्रीय नियमों दोनों से अधिक होता है। दूसरा, सिद्धांत हमें दिखाता है कि स्वायत्त प्रणाली एक दूसरे के साथ उच्च निर्भरता उत्पन्न करती है और यह कि स्वायत्तता और अन्योन्याश्रयता के संयोजन से हम संघर्षों के कम या ज्यादा होने की या विरोधाभासों की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं। तीसरा, सिद्धांत ने यह भी स्पष्ट किया है कि सिस्टम का कार्य अंतर्राष्ट्रीय होता है ताकि पूरे क्षेत्र अपने स्वयं के अनदेखेपन और क्षेत्र की उपेक्षा के कारण पतन में जा सकते हैं। और चौथा, सिस्टम सिद्धांत ने हमें यह भी चेतावनी दी है कि आज की परिस्थितियों में विरोधाभासों की बजाय उच्चतर जटिलता और जोखिम की स्थिति है जिसे एक तरह से या किसी अन्य तरीके से हल किया जा सकता है। हम उन विरोधाभासों के संपर्क में हैं जिनके साथ हमें रहना चाहिए।

अपने काम में, मैं पिछले दशकों के जटिल सामाजिक प्रणालियों के संकटों से निपटने का एक तरीका प्रदान करता हूं जो उनकी मजबूती, विस्तार और आवधिकता के कारणों को सुलझा सकता है। ऐसा करने के लिए, मैं उस संकट की अवधारणा को संक्रमण की समालोचना के लिए स्थानापन्न करता हूं, जिसके साथ मैं हाल ही के कुछ घटनाक्रमों को प्रायोगिक अनुसंधान में जटिलताओं के सिद्धांतों (पारिस्थितिकी, भौतिकी, ग्राफ सिद्धांत) में शामिल करता हूं जो आमतौर पर समाजशास्त्र के लिए अज्ञात हैं। प्रणालीगत ढांचे के भीतर एक उप–सिद्धांत की डिजाइन के माध्यम से अर्थात संक्रमण के समालोचना सिद्धांत में, मैं एक नई प्रकार की जटिल घटना का जवाब देता हूं: उपेक्षा के दौर का बारबार आना और उसके पैमाने पर भी किसी प्रकार का नियंत्रण न होना। ■

सभी पत्राचार अल्दो मस्कारेनो को
<amascareno@cepchile.cl> पर प्रेषित करें।

> लैटिन अमेरिका से नवउदारवाद पर शोध[1]

वेरोनिका गागो, यूनिवर्सिदाद दे ब्यूनस आयर्स–यूएनएसएएम–सीओएनआईसीइटी अर्जेंटीना द्वारा

मेरी पुस्तक *Neoliberalism from Below: Baroque Economies and Popular Pragmatics*[2] में मैंने जो अन्वेषण विकसित किया है उसका लक्ष्य नवउदारवाद की अवधारणा पर चर्चा करना है, कैसे इसका हमारे क्षेत्र में ऐतिहासिकरण किया जाए, कैसे सैद्धांतिक बहस को सघन किया जाए और संघर्ष पर आधारित वंशावली का पता लगाया जाये। यह सब इस उद्देश्य से किया गया कि नवउदारवाद बाजार के समानांतर और राज्य के हस्तक्षेप के विपरीत है। ये बहस लैटिन अमेरिका के संदर्भ में नवउदारवाद के बाद के परिदृश्य को रेखांकित करने से भी संबंधित है।

> 'नीचे से नवउदारतावाद'

मेरी कोशिश नवउदारतावाद की संरचनात्मक रूप से ऊपर से नीतियों के एक पुंज की परिभाषा से परे जाने की है। इसके अतिरिक्त मेरे द्वारा प्रस्तावित 'नीचे से नवउदारतावाद' का सूत्र नवउदारतावाद के विस्तार का विरोध और उसमें सुधार करने के लोकप्रिय प्रयासों को पहचानने की जरूरत को दर्शाता है। इस परिपेक्ष्य को अपनाते हुए मैं नवउदारवाद के पूर्ण पाठन के साथ साथ उन विश्लेषणों को भी चुनौती देना चाहती हूँ जो सबाल्टर्न विषयों की निश्चित पराजय को मानने के संदर्भों से जुड़े हुए हैं।

इसके विपरीत, मैं आयामों की उन बहुलता में रूचि रखती हूँ जिनमें नवउदारवाद की निरंतरता और अनिरंतरता दोनों कार्यरत हों और यहाँ मैं राजनैतिक व्यवस्था से सन्दर्भ से अधिक गहन तर्क की बात कर रही हूँ। मैं नीचे से नव उदारवाद की मूर्त कार्यात्मकता पर, जिन्हे मैं ''बारोक अर्थव्यवस्था '' कहती हूँ, शोध कर रही हूँ। यह समय के कर्बुरण और संचालन की तर्कसंगतता, संतृप्त स्थानों के उत्पादन और सर्वसाधारण पहलों के लिए प्रयोग में लिए जाने वाला एक शब्द है। यह लोकप्रिय अर्थव्यवस्थाओं के राजनैतिक गठन को संघर्ष के इलाकों जहाँ 'नवउदार कारण' (शुद्ध व्यापारिक गणना का एक कथित प्रतिमान) का उसके पीड़ित माने जाने वालों द्वारा हरण, विनाश, रूपांतरण और पुनः प्रारम्भ किया जाता है।

नवउदारवाद के अन्दर और बाहर उसके खिलाफ संघर्ष, उसके विस्तार और वित्तीय आशंकाओं के खिलाफ संघर्ष हैं। ये इस फैलाव के निजी समाधान हैं और एवं मूल्य निष्कर्षण का एक नया रूप है। इन प्रथाओं से नवउदारवादी स्थितियों की व्याख्या और विनियोग में आज्ञाकारिता और स्वायत्तता के बीच विवाद की विषम और अस्पष्ट प्रकृति का पता चलता है।

यदि हम इस बात से सहमत हैं कि नवउदारवाद संघर्ष के कुछ चक्रों पर प्रतिक्रिया देता है, और इसलिए इसकी हिंसा के पैमाने पर इसका प्रभाव पड़ता है, तब यह सवाल उठता है कि नवउदारवाद की दृढ़ता और पुनर्संयोजन के रूपों की पहचान कैसे करें और *साथ ही साथ* इस धारणा का विरोध करें कि नवउदारवाद जीवन और पूँजी को बराबर बांटकर हर तरह के बैर को समाप्त कर सकता है? इसे दूसरे तरीके से प्रस्तुत किया जाए तो किस प्रकार के बैर को नवउदारवाद आत्मसात करता है और किन संघर्षों के कारण यह रूपांतरित होता है ?

> नवउदारवाद का एक नारीवादी दृष्टिकोण

मेरा हालिया शोध नवउदारवाद के एक नारीवादी पाठ पर केन्द्रित है। मैं हाल ही में प्रकाशित दो पुस्तकों का संदर्भ देना चाहती हूँ: *A Feminist Reading of Debt* (लुसी कैवेलेरो के साथ सह–लेखक)[3] और दूसरी *La potencia feminista. O el deseo de cambiarlo todo.*[4] नवउदारवाद का विश्लेषण समकालीन नारीवाद की एक केंद्रीय विशेषता रही है और इसलिए यह उनके अंतर्राष्ट्रीयतावाद का एक महत्वपूर्ण तत्व है। ऐसा यह इसलिए होता है कि पहला, क्योंकि यह विश्लेषण उन संघर्षों की पहचान करने के लिए एक ठोस व्याख्यात्मक कुंजी है जिन्हें पहले इस तरह समझा नहीं गया और न ही इनके सम्बन्धों को उकेरा गया है। दूसरा, यह हमें बहुसंस्कृतिवाद या अधीनता वाले समावेशन द्वारा शांत होने वाले संघर्षों को नवउदारवाद जिन तरीकों से प्रबंधित या परिवर्तित करता है, पर बहस करने और उन्हें चुनौती देने की अनुमति देता है। अंत में, यह रूढ़िवादी प्रतिक्रिया के निदान को सक्षम बनाता है जिसे विशेषकर लैटिन अमेरिका में नारीवाद के पारगमन बल के खिलाफ फैलाया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में नवउदारवाद की हिंसा का पाठ पढ़ाया जाता है, जो संरचनात्मक समायोजन के उपायों के साथ–साथ शोषण का कारण भी है क्योंकि शोषण उन विषयों के उत्पादन में निहित है जो अनिश्चितता के लिए मजबूर हैं, और फिर भी इसके विस्तार की परिस्थितियों की समृद्धि के लिए संघर्ष करते हैं।

मैं इस हिंसा के चार दृश्यों पर काम करती हूं: (1) पुरुष के पालनकर्ता की भूमिका का संकट और उसके फलस्वरूप सत्ता और श्रम बाजार में उसकी स्थिति के सम्बन्ध में विशेषाधिकार भूमिका में कमी के प्रभाव के रूप में हिंसा का प्रस्फुटन (2) संसाधनों के अन्य तरीकों का स्थान लेने वाली लोकप्रिय अर्थव्यवस्था के प्राधिकरण के एक सिद्धांत में जड़ अवैध अर्थव्यवस्थाओं के विस्तार में निहित हिंसा के संगठित नए

> >

" पितृसत्ता और पूंजीवाद के मध्य संबंध प्रजनन श्रम पर और अधिक वैश्विक निर्भरता पर चिंतन करने के लिए स्थानांतरित कर दिया गया है। लेकिन नवउदारवाद क्यों इस तरह से उत्परिवर्तन हो रहा है?"

रूप (3) अंतरराष्ट्रीय निगमों द्वारा साझा भूमि और संसाधनों की लूटपाट और अपने विस्तार एवं इस प्रकार अन्य अर्थव्यवस्थाओं की भौतिक स्वायत्तता का वंचन और (4) शोषण और मूल्य–निष्कर्षण के विभिन्न रूपों का वैचारिक संयोजन जिसके लिए ऋण के तंत्रों द्वारा सामाजिक जीवन का वित्तीयकरण – विशेष रूप से एक सामान्य कोड है।

नवउपनिवेशवाद और अर्कवाद का एक साथ विश्लेषण करना नवउदारवाद (जो हमेशा यूरो–अटलांटिक दृष्टिकोणों में रेखांकित नहीं होता है) के साम्राज्यवादी आयाम को समझने के लिए,साथ ही साथ वर्तमान हिंसा के स्रोत का पता लगाने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

कई नारीवादी विद्वानों का सुझाव है कि पितृसत्ता और पूंजीवाद के बीच संबंध प्रजनन श्रम के पुनरुत्पादन पर अधिक वैश्विक निर्भरता को प्रतिबिंबित करने के लिए स्थानांतरित हो गए हैं। अब यह सवाल उठता है: नवउदारवाद इस तरह से क्यों परिवर्तित हो रहा है ?

> वित्तीय निष्कर्षणवाद

मैं वर्तमान में इस बात पर ध्यान केंद्रित कर रही हूं कि वित्तीयकरण किस प्रकार से उत्पादन और पुनरुत्पादन को (पुनः)व्यवस्थित करने के लिए नवीन तरीकों का निर्माण करता है। लेकिन यह समझने के लिए कि घरेलू अर्थव्यवस्थाओं, अवैतनिक अर्थव्यवस्थाओं और लैटिन अमेरिका में ऐतिहासिक रूप से गैर–उत्पादक अर्थव्यवस्थाओं से कैसे कर्ज का अतिरिक्त मूल्य निकलता है, हमें वित्तीय तंत्रों को मूल्य के निष्कर्षण और अधूरे जेंडर जनादेश के नैतिककरण दोनों के सच्चे तंत्र के रूप में देखना होगा। अर्थात हमने यह विश्लेषण (कैवलेरो और गागो,2020) किया है कि इस ऋणग्रस्तता ने लैंगिक जनादेश का लाभ उठाते हुए कैसे दैनिक प्रजनन का औपनिवेशीकरण किया। ऐसा उन्होनें नारीवादी लामबन्दियों के दबाब में महिलाओं, समलैंगिकों और ट्रांस महिलाओं की ओर से अधिक आर्थिक स्वायत्तता की मांग का जवाब देने के साथ किया। वित्त,तकनीकी जटिलता के साथ चलता है और इसके रोजमर्रा के प्रभाव के संबंध में कल्पना की गई है, जिसे हम 'वित्तीय अर्कवाद' कहते हैं, इसे व्यवस्थित करने के लिए पूँजी के एक निकालने वाले तर्क के संदर्भ में समझा जाना चाहिए. ।

जैसा कि मैं इसे समझता हूं, इन विशेषताओं से यह भी पता चलता है कि आज क्यों नारीवादी विद्रोहों द्वारा तैनात सामूहिक विषय–वस्तु अपनी लोकप्रिय, स्वदेशी, असंतुष्ट, क्वियर, अश्वेत रूपों के साथ–साथ अन्य रचनाओं और क्षेत्रों के साथ नवउदारवाद की असीम उत्परिवर्तन (वित्तीयकरण का अनंत यूटोपिया) की शक्ति के खिलाफ लड़ाई में एक प्रमुख घटक है। ■

सभी पत्राचार वेरोनिका गागो को
<verogago76@gmail.com> पर प्रेषित करें।

1. लिज मेसन– डेसे द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित।

2. मूल रूप से अर्जेंटीना में 2014 में Tinta Limón द्वारा प्रकाशित और फिर 2015 में स्पेन में Traficantes de Sueños; संयुक्त राज्य अमेरिका में Duke University Press द्वारा 2017 में (लिज मेसन–डेसे द्वारा अनुवादित); 2018 में बोलीविया में Autodeterminación Editorial द्वारा; ब्राजील में Editora Elefante द्वारा (इगोर पेरेस द्वारा अनुवादित); और अन्य निबंधों के साथ एक संक्षिप्त संस्करण में, फ्रांस में 2020 में Raisons D'Agir (मिला इवानोविच द्वारा अनुवादित) द्वारा प्रकाशित ।

3. Rosa Luxemburg Foundation द्वारा 2019 में अर्जेंटीना में प्रकाशित; इतालवी में 2020 में Ombre Corte (निकोलस मार्टिनो द्वारा अनुवादित); और अंग्रेजी में 2021 में Pluto Press (लिज मेसन–डेसे द्वारा अनुवादित)।

4. अर्जेंटीना में 2018 में द्वारा प्रकाशित; ब्राजील में 2020 में Editora Elefante द्वारा (इगोर पेरेस द्वारा अनुवादित); पेरू में La Siniestra द्वारा; मेक्सिको में Pez en el Árbol द्वारा; और अंग्रेजी में Verso द्वारा 2020 में, *Feminist International* (लिज मेसन–डेसे द्वारा अनुवादित) शीर्षक के तहत।

> एक उत्तर–उदार ग्रामर की ओर

कारमेन इलिजर्बे, पोंटिशिया यूनिवर्सिडेड कैटालिका डेल पेरु, पेरू द्वारा

''मार्चा डे लॉस कुआत्रो सुयोस'' के रूप में जानी जाने वाली रैली ने अल्बर्टो फुजिमोरी के सत्ता के अंत के समय को चिह्नित किया। 2000 में, हजारों लोग पेरू की सड़कों पर चुनाव के विरोध में एकत्रित हुए और इस प्रकार उन्होंने लोकतंत्र के लिए एक मजबूत संकेत दिया। श्रेयः क्रिएटिव कॉमन्स

इक्कीसवीं सदी में अब तक की सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना प्रतिनिधि लोकतंत्र की उदार समझ, शायद उसे ग्रहण करने की क्षमता का भी, कुख्यात ह्रास और गिरावट है। यद्यपि राजनीतिक दलों का वैधता संकट दुनिया में व्यापक घटना है, यह सिर्फ इनके बारे में नहीं है। उपलब्ध राजनीतिक तंत्र में प्रतिनिधित्व का विचार संकट में पड़ गया है, और शायद अप्रत्यावर्तनीयता के स्तर तक। गौर कीजिए कि प्रतिनिधित्व की अवधारणा सभी समकालीन लोकतंत्रों के संस्थागत ढांचों को संकेत देती है, और यह भी कि इसका गठन आधुनिक राज्य की प्रारम्भिक अवधारणाओं से जुडा हुआ है। इस प्रकार से, कम से कम थॉमस हॉब्स के बाद से, हमने इस विचार को स्वाभाविक बना दिया है और अभी भी बना रखा है कि शक्ति को प्रत्यायोजित किया जा सकता है। पुनः प्रस्तुति का नाटक (यह दिखाते हुए कि जो वास्तव में विचार–विमर्श और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं से अनुपस्थित हैं, वे अभी भी आवाज और वोट के साथ उपस्थित हैं) आधुनिक लोकतंत्रों के विकास के लिए बुनियादी रहा हैं। मैंने पहले तर्क दिया है कि यह कल्पना टूट गई है और यह कि प्रतिनिधित्व का विचार (न केवल प्रमुख संस्थानों और प्रक्रियाएं जो इसे कार्यशील बनाती हैं) प्रभावित हुआ हैं।

> प्रतिनिधित्वपूर्ण राजनीति के पतन के बारे में अनुसंधान एजेंडा

मध्यस्थता के संस्थागत राजनीतिक रूपों के अलगाव के जवाब में और शासकों एवं शासित लोगों के बीच स्पष्ट अलगाव के अलोक में, राजनीतिक दलों और उनके एजेंडों को और राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्रणाली द्वारा विचारित संस्थागत चैनलों को भी दरकिनार करते हुए, राजनीतिक स्व–प्रतिनिधित्व के नए रूप उभरते हैं। हालांकि, राजनीति के क्षेत्र को त्यागा नहीं गया है। मध्यम अवधि की प्रक्रियाओं में, जो दशकों तक भी फैल सकती हैं, हम समाज के पुनः राजनीतिकरण और लोकप्रिय संप्रभुता के फिर से उभरने के साक्षी हैं, जो कभी–कभी स्वयं को एक घटक शक्ति में बदलने में सक्षम है, जैसा कि चिली का मामला स्पष्ट रूप से बताता है।

इस संदर्भ में लोकप्रिय संप्रभुता के रूपों की बहुलता को राजनीतिक समझ और समकालीन राजनीतिक निर्माण में महत्वपूर्ण परिवर्तनों के लक्षण के रूप में समझा जा सकता है। इस प्रकार सेयह पूछने योग्य है कि जब मध्यस्थता विफल हो जाती है तो क्या होता है, जब प्रतिनिधित्व का तंत्र जैसा संचालित होता था वैसा नहीं होता है तब क्या होता है और तब क्या होता है जब प्रतिनिधित्व का विचार भी धराशाही >>

हो जाता है। आने वाले वर्षों के लिए मेरा शोध एजेंडा इस प्रक्रिया से जुड़ी दो गतिकी पर ध्यान देगाः (1) राजनीतिक प्रतिनिधित्व के औपचारिक संस्थानों की अनुपस्थिति या गिरावट के कारण राजनीतिक प्रणालियों में परिवर्तन, और (2) राज्य के साथ संवाद में स्व–प्रतिनिधित्व और नए राजनीतिक विषयों के रूपों का उभार।

शोध के पहले प्रकार के बारे में कहना चाहूंगा कि मैं लोकतंत्र–विरोध के उभरते रूपों का अध्ययन करने में रुचि रखता हूं। अधिनायकवादी, फासीवादी और यहाँ तक कि अधिनायकवादी सरकारों के (पुनः) उभार हाल के वर्षों में स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। ऐसा उन देशों और क्षेत्रों दोनों में हुआ, जहां प्रतिनिधि लोकतंत्र ऐतिहासिक रूप से कठिनाई (लैटिन अमेरिका में ब्राजील एक अनुकरणीय मामला है) के साथ विकसित हुआ है, और उन देशों एवं क्षेत्र में जहां मजबूत लोकतान्त्रिक परम्परा रही है (संयुक्त राज्य अमेरिका उत्तरी गोलार्ध में एक अनुकरणीय मामला है)। इसी तरह पेरू, कोलंबिया या चिली जैसे देशों में और उनके साथ ही बोलीविया और इक्वाडोर जहां प्रतिनिधि लोकतंत्र के संस्थागत ढांचे की पुष्टि करने के लिए दोनों में महत्वपूर्ण प्रयास हुए, आमतौर पर लोकतांत्रिक विरोधी सरकारी प्रथाओं का विकास करते हैं जो कमजोर आबादी के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करती हैं। चुनावों में निर्वाचित होने वाली लोकतंत्र विरोधी सरकारों के विरोधाभास को कैसे समझाया जाए और लोकतंत्र की निरंतरता के लिए इसके क्या परिणाम हैं? कौन से संस्थागत स्वरुप और कौनसे तंत्र आज सत्तावादी शासन को बनाये रखते हैं? सत्तावादी प्रभुत्व के संदर्भों में किस प्रकार के प्रत्युत्तर या प्रतिक्रियाएँ सामने आते हैं? आज लोकतंत्र– विरोधी व्याख्या के विवेचनात्मक विश्लेषण के लिए वैचारिक और सैद्धांतिक आधार क्या हैं?

शोध के दूसरे विषय के संबंध में मुझे यह जांचने में दिलचस्पी है कि लोकप्रिय संप्रभुता के विचार की पुनः वापसी कैसे होती है। उत्तर और दक्षिण में और पूर्व और पश्चिम में अधिकाधिक स्पष्ट दिखाई देने वाले सामाजिक प्रभावों वाले आर्थिक संकटों के जवाब के साथ, लेकिन राजनीतिक प्रतिनिधित्व के साधनों की कमी की प्रतिक्रिया में हम सामाजिक लामबंदी के के विशाल स्वरूपों की शक्ति को देखते हैं। लोकप्रिय अतिप्रवाह के ये रूप जो असहमति और असंतोष की अभिव्यक्ति के लिए स्थापित चैनलों के परे जाते हैं, एक बड़ी थकावट को प्रकट करते हैं और नीचे से राजनीतिक ऊर्जा और परियोजनाओं के पुनर्गठन के लिए एक राह खोल रहे हैं। लोकप्रिय वापसी के इन स्वरूपों की क्या विशेषता है ? क्या ये राजनीतिक विषयों के गठन के नए रूप हैं? राजनीति के लोकतांत्रिकरण के लिए यह क्या संभावनाएं खोलते हैं? किस हद तक और किन मायनों में ये लोकतांत्रिक विरोधी राजनीति की के पक्ष में मुखरता से बोल सकते हैं?

> उदार ग्रामर की सीमाओं से परे

आगामी वर्षों के लिए मेरे शोध एजेंडे का उद्देश्य सामाजिक समझौते के नवीकरण के संभावित रूपों पर ध्यान देते हुए राज्य–समाज के संवाद की गतिशीलता को समझना, और उदार लोकतांत्रिक सिद्धांत द्वारा उन्नत वर्चस्वादी वैचारिक ढांचे से परे जाना है। सैद्धांतिक रूप से इसमें लोकतांत्रिक और लोकतंत्रीकरण के सिद्धांत की आलोचना के साथ ही सामाजिक आंदोलनों के सिद्धांत से एक दूरी बनाना सम्मिलित है ताकि सामाजिक–राजनीतिक अभिव्यक्ति और भागीदारी के नए रूपों की क्षमताओं को बेहतर ढंग से समझाया जा सके। समग्र रूप से इस कार्य में राजनीतिक परिवर्तन की चल रही प्रक्रियाओं को और अधिक पर्याप्त रूप से पढ़ने और समझने के लिए एक उदार व्याकरण के बाहर नई श्रेणियों और दृष्टिकोणों को विकसित करना शामिल होगा। ■

सभी पत्राचार कारमेन इलिजर्बे को
<cilizarbe@pucp.pe> पर प्रेषित करें।

> लैटिन अमेरिका में पैमाने, असमानताएं और कुलीन लोग

मारियाना हेरेडिया, यूनिवर्सिडेड नैषनल डी सैन मार्टीन–कोनीसेट, अर्जेंटीना द्वारा

बीसवीं सदी के अर्जेंटीना कुलीन तंत्र।

> ध्यान आकर्षित करना और एक सनकी बहस

जैसे–जैसे गरीबी की दरें मजबूत हुई हैं या फिर बढ़ी हैं, बड़े पैमाने पर धन सम्पदा संचित हुई है और संस्थागत तनाव पैदा करने के लिए नए राजनीतिक नेतृत्व उभरे हैं, और कुलीन लोगों ने फिर से शिक्षाविदों और जनता दोनों का ध्यान आकर्षित किया है। वे अब अलग–अलग और यहां तक कि विरोधी आलोचनाओं का निशाना हैं: कुछ लोग कॉर्पोरेट लालच को दोष देते हैं, अन्य राजनीतिक अयोग्यता को।

कुलीनों के अध्ययन में कोई विद्वतापूर्ण नवाचार आलोचना की इस लहर के साथ नहीं है। अत्याधुनिक साहित्य की अपनी समीक्षा में शमस खान इन बहसों की ''सनकी'' प्रकृति होने की चेतावनी देते हैं। कुलीनों के प्रति एक नए दृष्टिकोण की पहली बाधा विविध परंपराओं से काम में लिए जाने वाले शब्दों की एक श्रंखला के कारण उत्पन्न सीमा की है। कुलीन वर्ग, उच्च वर्ग, शासक वर्ग, पूंजीपति, अमीर और विशेषाधिकार प्राप्त समूह का समान रूप से उपयोग किया जाता है, जैसे कि सभी एक ही विचार के लिए संदर्भित हैं। दूसरी बाधा है सामाजिक विज्ञान और इसके पद्धतिय उपागमों के मध्य फूट।

कुलीनों के अपने विश्लेषण में कई विद्वान और पर्यवेक्षक उन लक्षणों पर जोर देते हैं जो अठारहवीं शताब्दी के अंत से इन समूहों के साथ लगातार जुड़े रहे हैं: अमीर और शक्तिशाली पुरुषों के बीच महत्वाकांक्षा और संकोच का अभाव, उनके बच्चों को विरासत में मिली उनकी प्रस्थिति लेकिन ''गुण'' नहीं, और चुनिन्दा हलकों में मिथ्या रचना। संक्षेप में, अभूतपूर्व असमानताओं के समक्ष इन समान लक्षणों के साथ अभिजात वर्ग और आम लोगों के बीच विरोधाभास के प्रति एक निश्चित आकर्षण बना रहता है। कार्य और कामगार इतिहास के प्रति संवेदनशील होते हैं: वे प्रमुख परिवर्तनों का नेतृत्व करते हैं या कम से कम उनसे प्रभावित होते हैं। पूंजी, शक्ति और उसके समर्थकों का पुनरुत्पादन हालाँकि, बदलाव से अप्रभावित प्रतीत होते हैं।

> लैटिन अमेरिकी वास्तविकताएँ

विशेष रूप से लैटिन अमेरिका में विकसित सामाजिक सिद्धांत पैमाने के महत्व पर जोर देते हुए और कुलीनों एवं स्थानीय समाजों के बीच के संबंधों की खोज करके क्षेत्र की असमानताओं पर अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। लैटिन अमेरिका की वास्तविकताओं ने समालोचना सिद्धांत के सामने चुनौतियों पेश की हैं। औपनिवेशिक काल से और इस क्षेत्र की अधीनस्थ भूमिका के कारण रणनीतिक संसाधन विदेशियों या यूरोपीय वंशजों के हाथों में रहे हैं। लैटिन अमेरिका के सामाजिक पिरामिड को समझने के लिए राष्ट्रीय पैमाना कभी भी पर्याप्त नहीं था। साथ ही, इस क्षेत्र के अधिकांश देशों ने कच्चे माल के निर्यात पर भी उतना ही भरोसा किया है जितना कि अधिशेष श्रम मूल्य पर।

मजबूत विदेशी प्रभाव के सामने लैटिन अमेरिकी कुलीनों ने अपने समय की चुनौतियों के साथ बहुत फुर्ती के साथ अनुकूलन किया। सबसे पहले तथाकथित कुलीन वर्ग आए, जिन्होंने राष्ट्रीय सीमाओं के अंदर एक नव–उपनिवेशवादी व्यवस्था लागू की, स्वदेशी आबादी को काबू में किया, यूरोपीय दूतों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किए और उन राजनीतिक प्रणालियों का निर्माण किया जिन्होंने बड़े पैमाने पर भागीदारी को बाधित किया। बाद में सबसे बड़े देशों में

> >

एक राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग उभरा। अक्सर राष्ट्रवादी आंदोलनों और सैन्य शासन के समर्थन से पूंजीपति शहरी और औद्योगिक प्रगति, एक बड़े कार्यबल की भर्ती और घरेलू उत्पादन और खपत को बढ़ावा देने वाली नीतियों से जुड़े थे।

इस परंपरा के संबंध में हाल ही में अमीरों की अवधारणात्मक पुनर्संकल्पनाओं ने सीमाओं को दर्शाया है। पिकेटी और ऑक्सफैम ने गहराती आर्थिक असमानताओं का उल्लेख किया है और आय के वितरण के लिए एक ने अभिनव दृष्टिकोण के रूप में करों पर जोर दिया है, जबकि अन्य विद्वानों ने रेखांकित किया है कि पूंजीवाद के मौजूदा चक्र के दौरान पूंजी अधिक तरल और अस्थानीय हो जाती है। हालांकि, कम से कम लैटिन अमेरिका में आँकड़े विशेष रूप से विश्वसनीय नहीं हैं और ''अमीर'' अत्यधिक विषम साबित होते हैं, एक अत्यधिक असंतोषजनक सिद्धांत पूरी तरह से अपारदर्शिता के संकेत पर आधारित है। अमीर एक मिश्रित पुंज होते हैं: पुराने पैसे वाले बनाम नए अमीर, तरल सम्पत्ति बनाम अतरल संपत्ति, संसाधन–निर्भर बनाम श्रम–निर्भर, क्षेत्र में रहने वाले बनाम विदेश में धन–सम्पदा संचय करने वाले। इसलिए यदि उद्देश्य असमानताओं को कम करना है, तो अल सल्वाडोर और फ्रांस जैसे देशों में एक ही दृष्टिकोण लागू नहीं किया जा सकता है। लैटिन अमेरिकी धन का एक बड़ा हिस्सा लैटिन अमेरिकियों के हाथ में नहीं है, और न ही यह धन उनकी सीमाओं के भीतर है।

> 'अमीर' की संकल्पना की कमी पर नियंत्रण पाना

लैटिन अमेरिकी कुलीनों के अधिक सटीक परिप्रेक्ष्य में तीन प्रमुख धुरी दिखाई देती हैं: असमानता को निर्दिष्ट करना, जिस पैमाने पर वे लगते हैं और विशेषाधिकृतों को प्राप्त संसाधन।

सबसे बड़ी आर्थिक असमानता प्रकृति और समाज को प्रभावित करने वाली प्रमुख निवेश परियोजनाओं को लॉन्च करने (या रोकने) की क्षमता से जुड़ी है। वर्तमान में क्षेत्र में प्रमुख संस्थागत निवेशक और प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय कंपनियां इन असमानताओं को वैश्विक आयाम देती हैं। चूँकि पूंजी तेजी से तरल और अवैयक्तिक होती जाती है, आर्थिक संभ्रांत अब उत्पादन के साधनों के मालिकों, बड़े नियोक्ताओं या स्थानीय धनी के आगे जाते हैं: वित्त, कानून और प्रौद्योगिकी के अधिकारियों और विशेषज्ञों का एक बड़ा केंद्र जो विविध क्षेत्रों में काम करते हैं, वे अब उस पूंजी के प्रबंधन में शामिल हैं।

इसके अलावा लेकिन इसके विपरीत, सबसे प्रथम सामाजिक असमानता कुलीनों को प्राप्त आवास, शिक्षा, स्वस्थ्य देखभाल और सांस्कृतिक पेशकशों के सन्दर्भ में है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण रूप से सामाजिक संबंधों, जो आवश्यक रूप से व्यक्ति के धन के अनुपात में नहीं बढ़ते, के बारे में है। जब राज्य सार्वभौमिक, उच्च–गुणवत्ता वाली सेवाओं को त्याग देते हैं, और अधिकार वस्तु बन जाते, तो यह बहुत कम मायने रखता है कि कौन सा समूह कुलीन वर्ग हैं, (सफल पेशेवर, उच्च रैंकिंग वाले सार्वजनिक अधिकारी या मझोले व्यवसाओं के मालिक): यह मायने रखता है कि इन सामाजिक कुलीनों के पास ऐसे अवसर हैं जो उनके साथी नागरिकों के पास नहीं हैं।

अंत में राजनीतिक समानता लोगों की भीड़ जुटाने, समर्थन बढ़ाने और प्रभावित करने की क्षमता पर निर्भर करती है। आज आर्थिक वैश्वीकरण और विकेंद्रीकरण ने राजनीतिक प्रतिनिधियों के संस्थागत संसाधनों को नष्ट कर दिया है और कई राजनेताओं को आर्थिक हितों द्वारा अपना सहायक चुन लिया गया है। जैसा कि पहचान–आधारित मांग और मतभेद बढ़ गए हैं, सरकारें अपनी सीमाओं से परे पूंजी की तलाश करने और बेलगाम एवं अवसरवादी स्थानीय नेताओं से मिलकर गठबंधन बनाने के लिए बाध्य हुई हैं।

> भिन्न और अंतर्निहित पदानुक्रम आकांशा प्रकार की

आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक अभिजात वर्ग के बीच के अंतरों पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है, हालांकि उनके बीच गठबंधन भी है। माइकल मान "सत्ता के समाज–स्थानीय नेटवर्क" और प्राधिकरण के बीच अंतर को बयान करते हैं जिसके लिए कार्यालय में सीमित समय वाले समूहों और संस्थाओं द्वारा आकांक्षा की गयी नयी सत्ता–एवं अपरिमित शक्ति है जो किसी परिभाषित कोर या प्रत्यक्ष आदेशों के साथ विकेंद्रीकृत प्रथाओं के माध्यम से अनायास फैलती है। जबकि एक नेता की सत्ता पहले प्रकार की शक्ति (पावर ओवर) को दर्शाती है, बाजार अनुशासन या रीति–रिवाजों की जड़ता दूसरी (पावर आफॅ) को दर्शाता है। यह प्रस्ताव अल्बर्ट हर्शमैन के समान है: वैश्विक बाजारों ने व्यापारियों को लाभहीन क्षेत्रों (निकास) को छोड़ने की क्षमता को सुदृढ़ किया है, विविध एक्टरों ने असंतोष (आवाज) व्यक्त करने के लिए सड़कों और सोशल मीडिया पर कदम बढाए हैं, लेकिन प्राधिकरण और जनता की वफादारी और आज्ञाकारिता नीति की आवश्यकता मिट गई है।

असमानताओं को कम करने के लिए धन और शक्ति का विश्लेषण एक महत्वपूर्ण कार्य प्रतीत होता है। फिर भी धन और शक्ति की चकाचौंध का चुम्बकीय आकर्षण उनकी अंधाधुंध आलोचना के साथ बराबरी पर फैल गया है, जो दोनों के सामाजिक सह–अस्तित्व और किसी भी प्रगति के लिए अक्षम होने के लिए समान रूप से खतरनाक साबित हो सकते हैं। ■

सभी पत्राचार मारियाना हेरेडिया को <mariana.heredia@conicet.gov.ar> पर प्रेषित करें।

> आदिम संचय और कानून की आलोचना

गुइल्हेर्म लेइते गोंकाल्वेस, रिओ दे जनेरिओ स्टेट यूनिवर्सिटी, ब्राजील द्वारा

मेक्सिको सिटी के पलासियो नैशनल में डिएगो रिवेरा (1929–45) की एक दीवार पेंटिंग का एक हिस्सा मेक्सिको की स्पेनिश विजय को दर्शाता है।

कानून और पूंजीवाद का विकास एक दूसरे से किस तरह से संबंधित हैं? इस सवाल का सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण जवाब पूंजीवाद और लोकतंत्र के बीच अंतर और घर्षण पर आधारित मानक स्कीमा का उपयोग करते हुए दिया जाता है। इस थीसिस से दो विचार उभरते हैं: प्रथम, पछेती पूंजीवाद में राज्य हस्तक्षेपों को वैध बनाने के लिए उपलब्ध प्रेरक संसाधनों को अपर्याप्त माना जाता है; दूसरी बात, कानून को पूंजी और शक्ति संचय के वास्तविक विकास के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तथापि ऐसा भी केवल तब होता है जब यह संचय कई रणनीतिक एक्टरों को जारी करता है जो सामान्य असंतोष का कारण बनते हैं। दोनों जुरगेन हेबरमास के सिद्धांत से प्रामाणिक आधार से जुड़े हुए हैं।

इस स्कीमा का उद्देश्य कानून और लोकतंत्र को सिद्धांतों के एक समूह के रूप में समझना है, जो विसंगतियों के संदर्भ में प्रतिरक्षात्मक हैं, जैसे कि कानूनी–लोकतांत्रिक प्रवचन को उनके गठन में भाग लेने वाले भौतिक हितों से अलग किया जा सकता है। वर्तमान विचलन का एक हिस्सा होने के लिए कानून को स्वीकार नहीं करने से, उपरोक्त स्कीमा कानूनी व्यवस्था को अनदेखा करती है जो संचय और वैधता के बीच संबंध की अनुमति देती है। यह और भी स्पष्ट हो जाता है जब हम देखते हैं कि पछेती पूंजीवाद में वैधता की समस्याओं की भविष्यवाणी की पुष्टि नहीं की गई है। न केवल नवउपनिवेशवाद नए प्रेरक संसाधनों को जुटाता है, बल्कि वित्तीय पूंजीवाद और इसके फिर से काम करने वाले एक्टर सट्टेबाजी की प्रवृत्ति को कानूनी वैधता के तंत्र में लागू करने में सक्षम हैं।

> कानूनी स्वरुप

पूंजीवाद लोकतंत्र मानक स्कीमा के विपरीत, कानूनी स्वरुप की आलोचना (जैसा कि एवगेनी पशुकानिस द्वारा सामने लाया गया है) एक अवधारणा प्रदान करता है जिसका उद्देश्य मार्क्स के मूल्य सिद्धांत में कानून का विश्लेषण करना है। इसका प्रस्थान बिंदु यह समझ है कि पूंजीवादी समाज में, यह श्रम की सामाजिकता है जो

>>

मूल्य–रूप तक ले जाती है। नतीजतनठोस श्रम को सार श्रम में अनुवादित किया जाता है और इसके उत्पाद का आदान–प्रदान किया जाता है, जिसका मूल्य सामाजिक व्यवस्था की एक आवश्यक स्थिति में बदल जाता है। जैसे ही श्रम के विभिन्न उत्पादों का आदान–प्रदान एक–दूसरे के बराबर हो जाता है, यह आदान–प्रदान असमान प्रकार के ठोस श्रम के बीच समानता बनाता है, जो – औसत सामाजिक श्रम–समय जैसे मानकों के आधार पर – सामाजिक असमानताओं के स्व–उत्पादन की अनुमति देता है। और क्योंकि मूल्य–स्वरूप प्रत्यक्ष धारणाओं की विशेषता रखता है और व्यवहार को नेतृत्व प्रदान करता है, यह एक बुतपरस्त चरित्र को प्राप्त करता है।

इसके परिणामस्वरूप पूंजीवादी समाजों में कानून को एक सामाजिक स्वरुप माना जाता है जो मूल्य–स्वरुप के साथ सक्रिय होता है। यह समान विनिमय सिद्धांत के लागू होने के माध्यम से असमान ठोस उत्पादकों के अमूर्त प्रक्रिया में भाग लेता है जो कि वस्तुओं के विनिमय के लिए एक शर्त है (यानी ''समकक्ष के लिए समान विनिमय'')। इसके लिए कानूनी साधन स्वतंत्रता और समानता के संवैधानिक सिद्धांत हैं, साथ ही साथ 'कानूनी विषय' भी हैं। वास्तव में ये उपकरण बराबरी से समान विषय बनाते हैं जो समान वस्तुओं का आदान–प्रदान करने के लिए स्वतंत्र हैं, जबकि एक ही समय में निजी हितों और असमानता की सामग्री के कार्यान्वयन की अनुमति देता है। इस वजह सेकानूनी–लोकतांत्रिक संस्थाएं उन सामाजिक रूपों में से एक हैं जो बाजार संबंधों और आदान–प्रदान को ऑब्जेक्टिफाइड और बुतपरस्त आकार बनने की अनुमति देते हैंय इसके लिए वे खुद को बुत भी बनाते हैं।

> आदिम संचय

कानूनी रूप की समालोचना एक अस्थिर व्याख्यात्मक परिणाम देती है जो पूंजीवादी संचय के कानून में (फिर से) स्थिरीकरण की स्थिति के विश्लेषण के लिए उपयोगी है – फिर भी संचय के पुनरोद्धार प्रक्रियाओं और निरंतर विकास के लिए उनके दबाव का विश्लेषण करने में नहीं है। जैसा कि आदिम संचय पर मार्क्सवादी सिद्धांत द्वारा स्थापित किया गया था किपूंजीवादी समाज स्थिर नहीं बल्कि गतिशील समाज है। इस दृष्टिकोण सेपूंजीवादी विकास को गैर–संशोधित स्थानों को संशोधित करने के माध्यम से संचय और विकास के दायरे पर नियंत्रण करने की एक निरंतर प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। यह प्रक्रिया अपने मूल स्थान में समग्र अधिशेष मूल्य को महसूस करने की असंभवता के साथ–साथ अति–संचय के दबाव से प्रेरित है, जो अधिशेष मूल्य को पूरी तरह से और निवेशों को परिशोधन करने के लिए एक गैर–चक्रीय क्षेत्र के निष्कासन की मांग करता है।

पूँजीवाद इस प्रकार एक गतिशीलता के आधार पर विकसित होता है जो लगातार आदिम संचय की पुनरावृत्ति को सक्रिय करता है और इसके साथ, ''हिंसा का सबसे बड़ा कृत्य करता है।'' इन कृत्यों को प्रत्यक्ष हिंसा के रूपों (यानी विजय, लूट और हत्या) के रूप में समझा जाना चाहिए कि पूंजीवाद के विकास में ये न केवल असाधारण रूप से लागू होते हैं बल्कि वास्तविकता में अक्सर दिखाई भी देते हैं।

एक सैद्धांतिक आवेग के रूप में आदिम संचय और निष्कासन की अवधारणाएं दिखाती हैं कि कानून केवल पूंजीवादी समाजों में एक बुतपरस्त सामाजिक रूप के रूप में कार्य नहीं करता है। दरअसल यह एक और चरित्र पर आधारित है। लेकिन हम इसका वर्णन कैसे कर सकते हैं? यह किस तरह की हिंसा है? क्या कोई वैधानिक व्यवस्था है जो पूंजीवादी विस्तार में योगदान करती है?

> आदिम संचय की कानूनी हिंसा

कानूनी स्वरूप की आलोचना से अलग आदिम संचय की बहस संकट काल पर और भी अधिक जोर देती है। इस दौरान पूंजी को उन ताकतों द्वारा विकसित करने के लिए प्रेरित किया जाता है, जो डेविड हार्वे के अनुसार, स्थानिक–लौकिक समायोजन के लिए प्रेस (पुनः)संशोधन के लिए अनुमति देता है और ऐसा करने से पूंजी के प्रवाह को सीमाओं से मुक्त करता है। संकट के समय हस्तक्षेप की मांग न केवल क्षेत्र और उसकी सीमाओं के पुनर्गठन की मांग करता है, बल्कि निवेश के लिए एक लाभदायक वातावरण का निर्माण भी करता है। दोनों मामलों को विभिन्न कानूनी संरचनाओं (जैसे नरम कानून, आपराधिक कानून, कानूनी विस्तार, पुलिस हिंसा, युद्ध आदि) की विशेषता है। वे उन संस्थानों के एक जटिल संकुल की स्थापना करते हैं जो उसे वैध (पुनः)संशोधन और हिंसक प्रावधानों दोनों की अनुमति देते हैं जो कुछ सामाजिक समूहों को उचित बनाते हैं।

जैसा कि क्लॉस डोरे द्वारा तर्क दिया गया है कि वर्तमान आर्थिक–पारिस्थितिक दोहरे संकट आदिम संचय के परिप्रेक्ष्य का उपयोग करके एक समकालीन निदान का मार्ग प्रशस्त करता है। इस निदान में आर्थिक–पारिस्थितिक संकटों की एक कारक के रूप में व्याख्या की जाती है जो विकास, समृद्धि और लोकतंत्र के बीच संबंधों को अस्थिर करता है। इसके आधार परकानूनी और सामाजिक आदेशों का विश्लेषण संचय के विस्तार के दबाव पर विचार करके किया जा सकता है, जिसका दबाव इन संकटों से उत्पन्न हुआ है। यह विश्लेषण एक महत्वपूर्ण कानूनी समाजशास्त्र के विकास की मांग करता है जो हेबरमास के आदर्श स्कीमा से परे है। दूसरी ओरआदिम संचय का स्थायी उपयोग दर्शाता है कि पूंजीवाद का विकास न केवल तथाकथित समकक्ष विनिमय सिद्धांत में पाए जाने वाले शोषण–कारी मॉडल से जुड़ा हुआ है बल्कि एक द्वितीयक शोषण से भी है जो नस्लवादी भेदभाव के माध्यम से संचय की अनुमति देता है जिसमें महिलाओं के अवैतनिक श्रम और एक प्रवासी श्रमिक बल के अति–शोषण आदि में देखा जा सकता है। बेशककिसी को भी पूछताछ करनी चाहिए कि कानूनी तरीके (सामाजिक कानून, पुलिस कार्रवाई आदि) में इस बीच शोषण को कैसे सक्षम किया जाए। ■

सभी पत्राचार गिल्हर्मे लेइट गोंकोल्वेस को <guilherme.leite@uerj.br> पर प्रेषित करें।

> वैश्विक संवाद की पोलिश टीम का परिचय

जकुब बार्स्जेकेवस्की

अलेक्जेंड्रा बिअरनाका

इवोना बोजडजीजेवा

GLOBAL DIALOGUE

सारा हरसजिंसका

जुस्तिना कोसिन्स्का

एडम मुलर

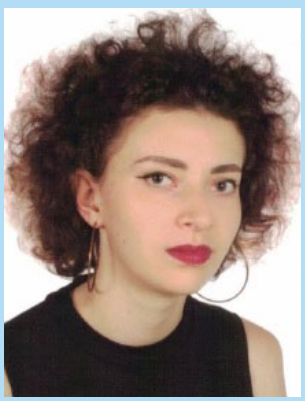

वेरोनिका पीक

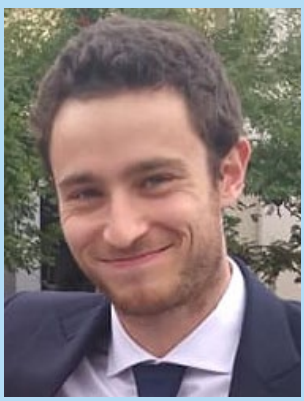

जोनाथन स्कोविल

अलेक्जेंड्रा वैगनर

जेकब बारस्कजेवस्की, पीएच.डी. बियालस्टोक विश्वविद्यलाय में समाजशास्त्र पढाते हैं। उनके शोध रूचियों में विवेचनात्मक सिद्वांत, वैश्विक दक्षिण का समाजशास्त्र, वि–औपनिवेशिक चिंतन/विचार, आधिपत्य–विरोधी वैश्वीरकण और रचनात्मकता सम्मिलित हैं। उनका डोक्टोरल शोध ग्रंथ बोवेन्चुरा दे सोसा की आधिपत्य–विरोधी वैश्वकरीण की अवधारणा से सम्बंधित है। उन्होंने पोस्ट–फोर्डिस्म में रचनात्मकता के विमर्श पर पुस्तक प्रकाशित की है।

अलेक्जेन्डा बीयरनाका ग्रेजुएट स्कूल फॉर सोशल रिसर्च (जीएसएसआर), थियोरी ऑफ कल्चर डिपार्टमेंट, दर्शनाशास्त्र एवं समाजशास्त्र संस्थान, पोलिश एकेडमी ऑफ साइंसेज में पीएच.डी. की विद्यार्थी है। उनका वर्तमान शोध वैश्वीकरण, अनुवाद सिद्वांत, विचारों का इतिहास और स्वागत अध्ययन के सदंर्भ में कॉस–कल्चरल फिल्म रिमिक्स पर केन्द्रित है। उन्होंने वारसा विश्वविद्यालय से दो एम.ए. की उपाधि प्राप्त की है – पोलिश भाषाशास्त्र और अमेरिकी सांस्कृतिक अध्ययनों में।

इवोना बोजादिजेवा ने क्राको में जगियेलोनियन विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में स्नातक किया है। वर्तमान में वे पर्यावरण पर विमर्श से सबंधित पीएच.डी. शोध ग्रंथ पर कार्य कर रही हैं। वे भी गैर–सरकारी क्षेत्र में काम कर रही हैं और पौलेंड में बेहतर वायु गुणवत्ता के लिए अभियान चला रही हैं।

सारा हरस्जिन्सका वारसा विश्वविद्यालय के पोलिश संस्कृति संस्थान में एक पीएच.डी. विद्यार्थी हैं। उनका मुख्य शोध क्षेत्र स्मरण अध्ययन हैं। वे होलोकॉस्ट रिमेम्बरेन्स रिसर्च टीम की सदस्य हैं और उनकी पीएच.डी. थीसिस पोलिश जीवनी संग्रहालयों के बारे में है। वे *mała kultura współczesna* पत्रिका के संपादक मण्डल का हिस्सा हैं और जचेता राष्ट्रीय कला गैलेरी में गाइड हैं।

जुस्तिना कोसिन्स्का वारसा विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र में पीएच. डी. विद्यार्थी हैं। उनके अध्ययन क्षेत्रों में नगरीय समाजशास्त्र, सामाजिक भागीदारी, सामाजिक वर्ग और स्तरीकरण सम्मिलित हैं। उनकी डाक्टरेट की थीसिस सार्वजनिक सेवाओं की स्थानिक पहुंच से सम्बंधित है। 2019 से, वे वैश्विक संवाद के पोलिश सम्पादकीय मण्डल की समन्वयक रही हैं।

एडम मुलर एक मात्रात्मक शोधकर्ता हैं, जो वर्तमान में नेशनल इंस्टीटयूट फॉर इंफोमेशन प्रोसेसिंग में एक सहयोगी एसोसिएट के रूप में कार्यरत है। उनके पास वारसा विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में स्नातक और परा स्नातक की डिग्री है। उनकी वर्तमान शोध रूचि उच्च शिक्षण क्षेत्र के बदलते प्रतिमान और समाज विज्ञान अध्ययनों में प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण के अनुप्रयोगों में है।

वेरोनिका पीक वारसा विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र में गहन रूचि रखने वाली अंग्रेजी अध्ययन की एम.ए. की छात्रा है। उसके शोध रूचियों में संज्ञानात्मक भाषा विज्ञान जिसमें अवधारणात्मक रूपकों पर विशेष ध्यान, विमर्श पर अध्ययन और नारीवादी साहित्यिक आलोचना सम्मिलित है।

जोनाथन स्कोबिल फ्रेंच सरकार की छात्रवृत्ति द्वारा वित्त पोषित कोटुटेल डोक्टोरल प्रोग्राम में वारसा विश्वविद्यालय और इकोल दे हातस इटुडस एन साइन्सेज सोशियल्स (EHESS) में समाजशास्त्र में पीएच.डी. छात्र है। उनके शोध रूचियों में धर्म और ज्ञान का समाजशास्त्र, सामाजिक मानवशास्त्र और विचारों का इतिहास सम्मिलित है। उनका डाक्टोरल शोध जिहादी आंतकवाद की यूरोपीय धारणा हैं जिसमें फ्रांस और पौलेंड के मामलों का उपयोग करते है।

अलेक्जेंड्रा वैगनर ने वारसा विश्वविद्यालय के इंस्टीटयूट ऑफ अपलाइड सोशल साइंसेज में स्नातक की पढाई पूर्ण कर मास्टर की पढाई प्रारम्भ की है। उनकी शोध रूचियां परिवार, पालन पोषण और विवाह के समाजशास्त्र में है।